❑ नानेश वाणी - 14

समता निर्झर

❑ आचार्य श्री नानेश

❑ सस्करण फरवरी, 2003 (1100 प्रतिया)

❑ मूल्य 30/=

❑ **अर्थ सहयोगी**

श्री मिट्ठालाल, करणसिह, सुनील कुमार, अनिल कुमार नदावत, बैंगल

❑ प्रकाशक

श्री अ भा साधुमार्गी जैन संघ

समता भवन, रामपुरिया मार्ग, बीकानेर (राज)

दूरभाष 0151 2544867 2203150

❑ मुद्रक

कल्याणी प्रिण्टर्स

अलख सागर रोड, बीकानेर (राज)

दूरभाष 0151–2526890

प्रकाशकीय

हुक्मगच्छ के अष्टमाचार्य युग पुरूष श्री नानेश विश्व की उन विरल विभूतियों में है जिन्होंने अपने व्यक्तित्व और कृतित्व से समाज को सम्यक् जीवन जीने की वह राह दिखाई जिस पर चल कर भव्य आत्माए अपने कर्मों का क्षय कर मोक्ष की अधिकारिणी बन सकती है। यद्यपि आचार्य श्री जी के भौतिक व्यक्तित्व का अवसान हो चुका है तथापि उनके द्वारा चलाये गये विविध अभियानों में वह सदा ही प्रतिच्छायित होता रहेगा। इस प्रकार उनका वह व्यक्त रूप ही पर्यवसित होकर उस कृतित्व में समाहित हो गया है जो उनके द्वारा विरचित साहित्य के रूप में उपलब्ध है। एक क्रान्तिदर्शी आचार्य का यह प्रदेय साहित्य की वह अनुपम निधि बन गया है जो सासारिक प्राणियों के लिये प्रकाश स्तम्भ का कार्य करता रहेगा। इस स्तभ से विकीर्ण होने वाली प्रकाश रश्मिया युगों-युगों तक आलोक धारा प्रवाहित करती रहे, इसके लिए यह आवश्यक है कि न तो उन साहित्य रश्मियों को क्षीण होने दिया जाये न ही उनकी उपलब्धता बाधित होने दी जाये वरन् आवश्यक यह भी है कि सर्व सामान्यजनों हित उनकी सुलभता सुनिश्चित रखी जायें। इसी उद्देश्य से प्रेरित होकर श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन सघ ने उस अनमोल साहित्यिक धरोहर को ''नानेश वाणी'' पुस्तक श्रृखला के अर्न्तगत प्रकाशित करने का निर्णय किया।

इस सदर्भ में बैंगलोर निवासी सुश्रावक श्री सोहनलालजी सिपानी ने अर्थ सबधी व्यवस्था में जो सद्प्रयत्न किया, वह विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

प्रस्तुत कृति पूर्व में समता निर्झर नाम से प्रकाशित पुस्तक की नयी आवृति है। इसमें कुछ सशोधन परिसस्करण भी हुआ है। इस कृति के प्रकाशनार्थ अर्थ प्रदान करने वाले उदारमना सुश्रावक श्री मिठालाल, करणसिह, सुनीकुमार, अनिलकुमार नदावत, बैंगलोर के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करना भी अपना दायित्व समझता हू।

यद्यपि सम्पादन-प्रकाशन में पूरी सावधानी रखी गई है तथापि कोई भूल रह गई हो तो सुधी पाठकों से निवेदन है कि वे हमें अवगत करायें ताकि आगामी सस्करणों में भूल का परिमार्जन किया जा सके।

निवेदक

शांतिलाल सांड

सयोजक, साहित्य प्रकाशन समिति

श्री अ भा सा जैन सघ, समता भवन, बीकानेर (राज)

अर्थ सहयोगी परिचय

समीक्षण ध्यान प्रणेता आचार्य श्री नानेश की प्रस्तुत कृति "समता निर्झर" (नानेशवाणी क्रमाक १४) श्रीमती उगमबाई नदावत धर्मपत्नी श्री मिट्ठालालजी एव श्रीमती सरिताबाई पीतलिया आत्मज श्री करणसिहजी नदावत की पुण्य स्मृति में दानवीर श्रीमान् शा, मिट्ठालालजी, श्री करणसिहजी, श्री सुनिलकुमारजी, श्री अनिलकुमारजी नदावत, बैंगलोर के अर्थ सौजन्य से हो रहा है।

श्रीमान् मिट्ठालालजी के पितृश्री स्व माधवलालजी धर्मनिष्ठ, सघ समर्पित व शासननिष्ठ थे और आपके सस्कार अग्रपीढियों में प्रवहमान हैं। नदावत परिवार भीलवाडा से भीण्डर (उदयपुर-राज) आकर बस गया था, तथा तदनन्तर धरियावद में रह रहा है। सम्प्रति श्री मिट्ठालालजी के पाचो पुत्र-सर्वश्री नवरतनमलजी, करणसिहजी, श्यामसुन्दरजी, रमेशकुमारजी व विनोदकुमारजी-बैंगलोर में व्यवसायरत हैं। श्रीमती उगम बाई सरलमना, सेवाभावी, धर्मपरायण एव अनन्य गुरुभक्त थी। पाच पुत्रों, तीन पुत्रियों, पौत्र-पौत्रि, बधुओं, प्रपोत्रों व प्रपौत्रियों से भरा - पूरा आपका परिवार धर्म-ध्यान के प्रति अग्रणी व सेवा तत्पर है।

श्रीमति सरिता पुत्र वधू श्री शान्तिलालजी धर्मपत्नी श्री राजीवकुमारजी पीतलिया (पौत्री श्री मिट्ठालालजी) मधुर एव सरल स्वभाव युक्त धार्मिक प्रवृति की उदारमना महिला थी । मात्र २३ बसन्त ही देख पाई श्रीमती सरिताजी स्मृतियों का अम्बार छोड गई ।

सघ समर्पणा वर्ष के पावन उपलक्ष में शा मिट्ठालालजी करणसिहजी नदावत का प्रमुख लक्ष्य है- शास्त्रज्ञ, आगम मर्मज्ञ, तपोपूत प्रशान्तमना, श्रीवाल प्रतिबोधक परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर श्री रामलालजी म सा के प्रति अनन्य गुरुनिष्ठा व इनके आज्ञानुवर्ती साधु-साध्वियों तथा श्री अ भा साधुमार्गी जैन सघ के प्रति सर्वतोभावेन समर्पणा के भाव ।

प्रस्तुत कृति आप सभी के लिए आत्मोन्नयन में सहायक बने और नदावत परिवार इसी प्रकार सत् साहित्य में प्रकाशन सहयोग प्रदान कर सघ के सर्वतोमुखी विकास का सभागी हो, इन्ही मगल भावनाओं के साथ,

उदय नागोरी

अनुक्रम

यह एक आम जिज्ञासा है कि जैन मुनि वर्षाऋतु मे चार माह तक एक जगह स्थिर क्यो रहते हैं? आठ माह की तरह ग्रामानु–ग्राम विचरण क्यो नही करते? क्या उद्देश्य है वर्षावास का तथा इस चार माह की अवधि मे साधना के क्या–क्या प्रयोगात्मक आयाम हो सकते है? साथ ही आज के परिवेश मे धर्म एव धर्म स्थानो का क्या रूप होना चाहिए और क्या हो गया है? धर्म स्थान कैसे हिसा के अखाडे बनते जा रहे है आदि जिज्ञासाओ का सशक्त समाधान लीजिए एक विहगम विवेचन के द्वारा

–सपादन

१. वर्षावास बनाम साधना सेतु

इस काल के अतिम तीर्थंकर प्रभु महावीर ने जगत के कल्याण के लिए जन–जन के जीवन को सही अर्थो मे सुखी और समृद्ध बनाने के लिए, जो कुछ भी उपदेष दिया है वह कितना महत्वपूर्ण एव वैज्ञानिक है, इसका अनुसधान–अन्वेषण आज का विचारक वर्ग कर रहा है।

प्रभु महावीर ने आत्म साधना के समग्र छोरो को छुआ है। सर्वांगीण आत्म विकास की दृष्टि से जन–जीवन को अमूल्य देशना दी है।

देवों का नमन मनुष्य को

मनुष्य पर्याय मे रहनेवाली आत्मा– इस छोटे से शरीर पिड को ले कर चलने वाला चैतन्य देव, किस प्रकार देवत्वभाव का वरण करे, कैसे देव स्वरूप बने? यहा देव का मतलब देवलोक मे रहनेवाले देवताओ से नही है। देवयोनि के देव बनने की अभिलाषा रखनेवाले जीव स्वय सद् पुरूषार्थ करे तो देवयोनि मे रहनेवाले देवो के पूजनीय बन सकते है।

तीर्थंकर प्रभु ने सपूर्ण साधना का सार एक शास्त्रीय गाथा मे भर दिया है। ऐसी कई गाथाए है, जिनमे से एक का उच्चारण तो मै कवि आनदघनजी की प्रार्थना की पक्तियो के बाद कर गया हू लेकिन जहा साधना का प्रथम सोपान प्रारभ होता है वहा प्रभु ने कहा कि "धम्मो मगल मुक्किट्ठ अहिसा सजमो तवो, देवावि त नमस्सति, जस्स धम्मे सया मणो।। दशवै १-१

इस एक गाथा मे आत्म कल्याण का जो स्वरूप भगवान ने भर दिया है, उसके तथ्य को यदि हम समझ ले और जीवन के अणु–अणु मे उतारले तो र्त ।।न जीवन का उत्थान तो होगा ही आगामी जीवन भी शातिप्रद बन सकता । आत्मसाधना के मार्ग पर बढने वाले व्यक्ति के चरणो मे मनुष्य लोक मे रहनेवाले जितने सम्यगदृष्टि प्राणी है, उनमे भी जो चेतना शक्ति को विकसित नेव ल। बुद्धिवादी वर्ग है– धार्मिकवर्ग है, वह तो नत मस्तक है ही लेकिन ध्ा।रण। लोग जो देवयोनि को विशेष महत्व देते है, मत्र तत्र की साधना के बारे मे पूछते रहते है और सोचते है कि अमुक मत्र के जाप से देव सतुष्ट हो कर मेरे

पास आवेगे और मेरा मनो इच्छित कार्य सपादित कर देगे वे देव भी उस पुरूष के चरणो मे स्वत नत मस्तक होते हैं बिना बुलाये आते हैं। लेकिन ऐसा तब होता है जब कि वीतराग देव की वाणी सहज योग से जीवन मे उतरे।

अभी आपके समक्ष दो विदुषी महासतियॉ जी ने अपने भाव व्यक्त किये और तत्पश्चात विद्वद्वर्य शाति मुनिजी अपने भाव व्यक्त करते हुए सहज योग की बात रख गए। विजय मुनि जी ने प्रारभ मे वीतरागदेव की वाणी का अमृतपान करवाया। इन सब बातो को श्रवण करके आप एक ही रिजल्ट पर पहुचे होगे कि सबका स्वर इस वीतराग देव की वाणी के अनुरूप बनने की साधना मे लगा हुआ है।

प्रभु महावीर ने इस गाथा का जो अर्थ अभिव्यक्त किया उसे आज का चितक वर्ग चितन–मनन मे ले और यह अनुभव करे कि वस्तुत यह किसी गरिमामय महान चेतना का उपदेश है तो वह निश्चित ही मगलप्रद हो सकता है। जो कार्य कभी मत्र तत्र से सिद्ध नही होता वह कार्य सिर्फ इस गाथा मे आगत भावो को जीवन मे ढालने मात्र से हो सकता है– देवता तक बिना बुलाये उनके चरणो मे लोट–पोट हो सकते है। ऐसा धर्म–मत्र क्या आपको अन्यत्र कही मिलेगा?

धर्म की परिभाषा

धर्म की परिभाषा पवित्र एव शुद्ध है। लेकिन धर्मशब्द जितना शुद्ध व पवित्र है उतना ही इसके साथ कही–कही कुछ कचरा सग्रहित हो गया है– उसमे कुछ मिलावट हो गई है। शुद्ध धर्म शब्द को सही माने मे सीधे अर्थ मे अभिव्यक्त करना तो दूर रहा इस पवित्र धर्म शब्द के साथ अपने मन के विकारो को जोडकर आज की दुनिया उसका दुरूपयोग करने लग गई है। श्रेष्ठ पुरूषो के नाम के पीछे इस श्रेष्ठ शब्द को ले कर कुछ–न–कुछ स्वार्थ की पूर्ति भी की जा रही है।

किसी स्थल पर मैंने देखा कि एक होटल का नाम 'गाधी होटल' लिखा हुआ था। मेरे मन मे विचारणा स्फुरित हुई कि यहा नाम गाधी होटल लिखा गया है तो इसमे अवश्य गाधीजी के विचारो के अनुरूप भोजन सामग्री उपलब्ध होती होगी। गाधीजी भी अपनी शक्ति के अनुसार अहिसा परमोधर्म के सिद्धात को लेकर चल रहे थे। उनमे अहिसा परमोधर्म के सस्कार बेचरदासजी स्वामी की प्रेरणा से प्राप्त हुए थे ऐसा मैं अनुमानित करता हू। फारेन (विदेश) जाते समय गाधीजी को उनकी माता बेचरदास स्वामी के पास ले गई और उनसे प्रतिज्ञा करवाई कि दारू नही पीना मास नही खाना परस्त्रीगमन नही करना। इन तीनो सूत्रो मे मास और मदिरा तो हिसा के सूचक हें ही पर स्त्रीगमन भी महान हिसा का सूचक है।

गाधीजी के जीवन मे हिसा और महान हिसा की इन तीनो प्रवृतियो की रोक हुई। पर स्त्रीगमन महान पाप है ओर अडा मास मे परम हिसा हे और मदिरा भी उनकी बहिन का रूप है। इन तीनो प्रतिज्ञाओ ने गाधीजी के समग्र जीवन का रूपातरण कर दिया।

गांधी होटल बनाम मासाहार

मैने होटल का नाम गाधी होटल पढा और सोचा कि होटल का मालिक इस नाम को सही माने मे लेता होगा और वह इन महान पापो से बचकर चलता होगा। मैने इसकी जानकारी कि तो पता चला कि होटल का मालिक गाधीजी का सच्चा भक्त नही है। उसने अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए गाधीजी के नाम को पीछे जोडने की कोशिश की। गाधी होटल नाम रख कर दुनिया को भ्रमित किया। इसके बारे मे आगे जानकारी करने का प्रसग आया तो मुझे बताया गया कि महाराज इसका नाम तो गाधी होटल है लेकिन इसमे "मास अडा मदिरा जैसी चीजे तो मिलती है ही और भी न मालूम क्या–क्या काड होते है, यह कहा नही जा सकता।"

धर्म के आवरण में

आज इस धर्म शब्द का दुरूपयोग किस–किस रूप मे होने लगा है जिसके कारण कई लोगो के मन मे विचार होने लगा है कि धर्म शब्द खतरे की घटी है, कभी–कभी कुछ बाते कर्ण गोचर होती है धर्म स्थानो पर महा हिसा की चीजो का निर्माण होता हे। जबकि धर्म हमे समता का पाठ पढाता है। धर्म स्थानो पर पवित्र बहिनो का शीलव्रत भग होता है। ऐसे अपवादो की स्थिति बनना महान सोचनीय विषय है। धर्म शब्द और धर्म स्थानो का दुरूपयोग होने से आज की दुनिया धर्म से भयाक्रात होने लगी है। दुनिया मे कहावत है कि दूध से जला हुआ व्यक्ति छाछ को भी फूक–फूक कर भी पीने की कोशिश करता है। वैसे ही आज धर्म की स्थिति का प्रसग बिगडता हुआ चला जा रहा है। दुनिया समझती है कि धर्म–धर्म सब एक जैसे ही होगे धर्म स्थान–धर्म स्थान सब ऐसे ही होते होगे।

लेकिन बधुओ आज का युग विचार प्रधान युग है। धर्म स्थान–धर्म स्थान मे अतर है और धर्म–धर्म मे अतर है। मनुष्य–मनुष्य की प्रवृति मे अतर है, मनुष्य–मनुष्य मे अतर है।

कहने का तात्पर्य यह है कि विवेकशील पुरूष वास्तविक धर्म समता को जीवन मे स्थान दे। प्रभु महावीर का बताया हुआ धर्म समग्र हिसाओ को दूर करनेवाला है। जीवन को विकसित करने वाला है। शुद्ध आचरण भविष्य को तो उज्जवल बनाता ही है यह वर्तमान जीवन को भी उज्जवल बनाता है। यह स्थिति कब आ सकती है इस पर विचार किया जाय।

चातुर्मास क्यों

चातुर्मास का समय तीर्थंकरो ने क्यो निर्धारित किया? जो सत और सतिया आठ माह तक भिन्न-भिन्न स्थानो पर विचरण करके जन-जन को अहिसा सत्य अस्तेय अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य का पालन करने का उपदेश देते है महत्व समझाते है वीतराग सिद्धातो की पवित्रता का स्वर फूकनेवाले है। वे आठ माह मे कितने गावो को प्रेरणा देते हैं उनको प्रभु महावीर ने कहा कि आठ माह तक तुम ग्राम-ग्राम के लोगो को प्रेरणा दे सकते हो लेकिन तुम्हे वर्षा ऋतु मे चार माह तक एक ही स्थान पर रहना होगा और चार माह तक एक ही स्थान पर रह कर जहा चातुर्मास व्यतीत करो बिताओ वहा की जनता को इस पवित्र धर्म-इस परम धर्म के सिद्धातो की प्रेरणा दो। आज के भौतिकवाद मे आम व्यक्ति का अध्यात्म की तरफ मोड कैसे हो इसकी और विशेष प्रयत्नशील बनो, इन चार माह मे ही एक स्थान पर क्यो रहा जाए? आठ माह के शेष काल मे क्यो नही एक ही स्थान पर रहा जाए? इसके पीछे अनत तीर्थंकरो के निर्देशन का भाव यह है कि चातुर्मास मे जब पानी की प्रधानता होती है पानी बरसने लगता है तो इससे कई तरह के जीव-जन्तु पैदा हो जाते हैं। सत-सतिया यदि ऐसे समय मे विचरण करे तो छोटे-छोटे प्राणियो की हिसा होना स्वाभाविक है। तब हमारा जीवन विषम बनेगा सम नही।

यह वैज्ञानिक स्वरूप जनता के समक्ष उपस्थित करे और उन्हे यह बतावे कि जो छोटे से छोटे जीवो की रक्षा करनेवाले हैं वे बडे जीवो की घात कैसे कर सकते है? जो छोटे जीवो को अपनी आत्मा के तुल्य समझते हैं और यह सोचते है कि बरसात की बारीक बून्दे गिर रही हैं तो उनमे रहे हुए जीवो का हनन गमनागमन से नही किया जाए चाहे भूखे रह जाए चाहे बेला या तेला हो जाए लेकिन बारीक बून्दो मे सत सतीवर्ग भिक्षा के लिए भी नही जा सकते। प्रभु महावीर ने कहा कि बारीक बून्दो मे भिक्षा के लिये जाने से तुम्हारा पहला महाव्रत भग होगा। छोटे से छोटे प्राणी तुम्हारी आत्मा के तुल्य है। हिसा स्वय करो नही कराओ नही और हिसा करनेवाले का अनुमोदन नही करो मन से वचन से काया से तीन करण और तीन योग से। इस दृष्टि से बरसती हुई बून्दो मे भिक्षा के लिए नही जाते है तो वे अहिसा परमोधर्म का पालन करते है। एक दिन दो दिन या तीन दिन तक खाना नही मिलेगा तो यह स्वत ही तप हो जाएगा। इसलिए प्रभु ने कहा कि छोटी-छोटी बून्दे गिरती हो तो भिक्षा के लिए साधु साध्विये नही जा सकते।

कुछ व्यक्ति कल्पना करते है कि बरसती बून्दो मे भिक्षा के लिए नही जा सकते। लेकिन आज चातुर्मासी का दिन है चातुर्मासी क्या हे, इसका क्या महत्व है आदि बाते लोगो को समझानी है आज बहुत लोग आये हुए है, उनको अहिसा का उपदेश देने के लिए बून्दे आते हुए भी सभास्थल पर पहुचा जाए तो इसमे क्या हर्ज है? यहा यह विचारणीय है कि हमारा उद्देश्य केवल प्रवचन सुनाना ही नही है। अपनी मर्यादा के प्रति भी सजग रहना है। हमारी वह सजगता हमे आगाह करती है कि तुम अहिसा के प्रति सजग रहो यदि बारीक बून्दे आ रही हे तो हम सामने वाले फ्लैट से यहा नही आयेगे, आप चाहे कितनी ही सख्या मे बैठे हुए हो, क्यो कि हमारे आने–जाने की प्रक्रिया से जल कायिक जीवो की हिसा होगी तो हमारा उपदेश निरवद्य नही रहेगा। भगवान ने कहा कि उपदेश अहिसक तरीके से ही देना है।

प्रभु ने यहा तक कहा कि खुले मुह से उपदेश नही दिया जा सकता। जैसे बरसती बून्दो मे विचरण नही करने से पानी के जीवो की रक्षा होती है वैसे ही खुले मुह से उपदेश न देने से वायु के जीवो की रक्षा होती है। यह केवल स्थानकवासी सप्रदाय की ही मान्यता नही है। किसी की व्यक्तिगत मान्यता नही है। यह तीर्थंकर प्रभु द्वारा निर्दिष्ट सिद्धात है। इसी सिद्धात के आधार पर इन बरसती हुई बून्दो मे भिक्षा के लिए नही जा सकते। यदि तुम भूखे रह जाओगे तो तप होगा और यदि तप होगा तो अन्दर के विकार शमित होगे विचार शुद्ध होगे, जीवन मे "समता भाव" जगेगा, लेकिन हिसा करके खुले मुह उपदेश दिया तो साध्वाचार की सहजिकता नष्ट होगी। जो लोग तथ्य नही जानते है, वे हा, हा कर देगे लेकिन हमारी अन्तर आत्मा चैन से नही रहेगी। हमारी आत्मा कहेगी कि हम भगवान की आज्ञा का उलघन करके खुले मुह से उपदेश दे रहे है, प्रभु आज्ञा की चोरी करके उपदेश दे रहे है? ऐसी स्थिति मे समभाव नही रहेगा और हम धर्म की प्रभावना नही कर सकेगे। इसलिए कहा है कि साधक खुले मुह नही बोल सकता वह इसलिए महत्वपूर्ण है कि छोटे से छोटे और बडे से बडे प्राणी की रक्षा हो– यह प्रतिज्ञा ले कर चलता है।

कितु यह स्मरण रहे जैसे जीवो की सुरक्षा करनी है। उसी प्रकार सत ...यो को अपने स्वास्थ्य की भी सुरक्षा करनी हे। यदि लघु शका आदि की हाजत हो जाए तो बरसते पानी मे भी विचरण किया जा सकता है। यदि ऐसा नही करेगे तो जीवन खतरे मे पड जायेगा फिर हम अन्य जीवो की रक्षा कैसे कर सकेगे। इसलिए यह अपवाद है। सयमी जीवन की सुरक्षा हेतु अपवाद हो सकता है किन्तु अधिक को सुनाने के लिए नही। क्योकि उत्सर्ग और अपवाद एक ही

उद्देश्य की सिद्धि के लिये आत्मिक समाधि के उद्देश्य से सयमी जीवन अगीकार किया जाता हे। उस समाधि मे जहा बाधा आती है वही अपवाद मे गमन होता हे। कहा है– उत्सर्गात् परिभ्रष्ट स्याद्वाद गमनम' मल मूत्रादि के अवरूद्ध करनी से समाधि मे भग होता है जबकि प्रवचन नही देने से समाधि मे भग नही आता अपितु समाधि सुस्थिर रहती है अतएव सयमी जीवन मे जहा सकट उपस्थित होता है वही सयमी जीवन की सुरक्षा के लिये अपवाद का आश्रय लिया जाता है। मै कह रहा था कि वर्षा ऋतु मे एक स्थान पर रहने का उद्देश्य है– अहिसा की पूर्ण आराधना और वह साधना सयमी जीवन की सुरक्षा का अभेद्य कवच है।

जैसे चलते–फिरते जीवो की सुरक्षा के लिए चार माह तक चातुर्मास मे एक ही स्थान पर रहने का प्रसग हे वैसे ही चातुर्मास मे अमुक–अमुक वस्तु को ग्रहण नही करने का विधान है। आज चातुर्मासी पाक्षिक प्रतिक्रमण से पहले मर्यादा के अनुसार कपडा धागा आदि ले सकते हैं लेकिन प्रतिक्रमण के पश्चात सूत उन आदि की कोई वस्तु नही ले सकते।

गृहस्थो के घरो मे कई तरह की चीजे रहती है। वर्षा ऋतु मे उनमे लीलन–फूलन आने की सभावना रहती है वे चीजे ले ले तो इससे अनत जीवो की घात हो सकती है भगवान ने अपने ज्ञान से ऐसा देखा इसलिए इस प्रकार का निर्देश दिया।

चातुर्मास में क्षेत्रीय अवधि

आज जिस स्थान पर प्रतिक्रमण होगा उस गाव या नगर की जो सीमा है उसके चारो दिशा मे चार–चार मील तक चातुर्मासकाल मे जाना आना हो सकता है। ४ मील पहले का वर्तमान का ६ किलामीटर दो फर्लांग तक जरूरी काम के लिए या अन्य कोई प्रसग उपस्थित हो तो जा सकते है। लेकिन चार मील से अधिक दूर नही जा सकते– यदि जाते है तो मर्यादा भग होती हे। चार मील के अदर–अदर जाना कल्पता है। किसी ऐसी जगह चातुर्मास हो गया जहा श्रावको के घर कम हे। फ्रासुक (निर्दोष) आहार कम मिलता है तो दूसरे शाकाहारी घरो से आहार पानी ले सकते हैं। कितु उस चार मील के क्षेत्र मे से जिसमे एक बार आहार ले लिया वह क्षेत्र भी चातुर्मास की सीमा मे माना जायेगा। चातुर्मास उठने के पश्चात वहा एक–दो रात्रि से अधिक नही रह सकते हे। शेष आठ माह कही भी विचरण कर सकते हे। कई बार २-३ मील तक गोचरी लेने जाना पडता हे। राणावास मे चातुर्मास हुआ वहा सतो को दो–तीन मील तक जाने का काम पडता था।

यहा भी राणावास जेसा ही वातावरण दिखाई दे रहा हे क्योकि ५

भिक्षा के लिए आस-पास की कालोनीज के फ्लेटो मे जाने का प्रसग आता हे। मुनिगण लीलन-फूलन को बचा कर जाते है लेकिन भगवान की आज्ञा को दृष्टि मे ले कर चलते हैं। चार माह मे सत-सतीवर्ग को अपनी देनिक मर्यादाओ का ख्याल रखना है। ये सारी सत जीवन की मर्यादा, अहिसा की साधना हेतु बताई हे।

यह साधना श्रावक श्राविकाओ के लिए भी आवश्यक हे। उनके लिए भी निर्देश है कि श्रावक-श्राविकाओ को चार माह मे क्या कुछ करना चाहिए? आज पाक्षिक का दिन हे। बबई के लबे क्षेत्र मे दूर-दूर रहनेवाले भाई-बहिन आज यहा पहुच गये है। चातुर्मास बैठाने की दृष्टि से पहुचे हैं, लेकिन आप का क्या कर्तव्य है, इस का ध्यान रखना है- हम साधु-साध्वियो के आप छोटे भाई-बहिन है। भगवान ने चार तीर्थ बताये- साधु-साध्वी श्रावक ओर श्राविका। श्रावक, श्राविका छोटे भाई-बहिन होने के कारण उनके लिए भी धर्म आराधना का अलग से विधान है। चातुर्मास के दिनो मे आप साधु-साध्वियो की तुलना मे बिलकुल निवृत नही हो सकते, किन्तु आपको भी इस बात का ख्याल रखना है। विशेषकर बहिनो को कि घर मे कई दिनो तक आटा, बेसन, आचार आदि चीजे रह जाती है तो उनमे जन्तु उत्पन्न हो सकते है बिना देखे उनको सिजो लिया तो हिसा हो जाती है, इससे आपका श्रावक धर्म सुरक्षित नही रह सकता। जैसे आप पानी छान कर उपयोग मे लाते है वैसे ही आपको लीलन-फूलन का भी ध्यान रखना चाहिए।

श्रावक का विवेक

कई भाई-बहिन सोचते हैं कि कद-मूल नही खाना चाहिए। यह ठीक है, इनमे अनन्त जीव होते है किन्तु लीलन फूलन मे भी अनन्त जीव होते है।

शास्त्रो मे उल्लेख है- कच्चा पानी चाहे टकी, तालाब, नल या कुए का हो, उसमे भी लीलन फूलन की नियमा बताई है अत इसमे भी विवेक की आवश्यकता है। आप भी नियम ले कि चातुर्मास मे कच्चा पानी नही पीयेगे। स्वास्थ्य की दृष्टि और आत्मिक दृष्टि से भी लाभप्रद है।

आप सामायिक-पोषध की साधना करे। इसके साथ ही कम से कम चार माह के लिए सचित का त्याग करे। अनेक भाई-बहिन त्याग लेने के लिए तत्पर हो जाते है। कल मेहता जी की धर्मपत्नी ने भी त्याग लिया। अनोपचद जी सेठिया ने सचित का त्याग लिया। कइयो ने रात्रि भोजन का त्याग लिया। अहिसा की साधना के लिए रात्रि भोजन का त्याग भी होना चाहिए। ब्रह्मचर्य की मर्यादा और परस्त्री गमन का तो सर्वथा त्याग होना चाहिए।

मद्य-मास का खाना तो जेन धर्म के अनुयायी नही खाते होगे। कदाचित

स्कूल कालेज मे पढने वाले युवा लोगो मे से कोई खानेवाले हो तो आपका कर्तव्य है कि उनको समझावे– सतो के सपर्क मे ला कर उनका समाधान करावे। आज के युवा लोगो की समझ मे यह बात आ जायेगी तो वे मन से स्वत इसको छोड देगे। वे इस बात को समझ लेगे कि कौन–सी गलत चीज है और कौन–सी सही। मैं समझता हू कि आज के युवक जिज्ञासु हैं। वे चाहते हैं कि उनको सही समाधान मिले। सही समाधान नही मिलने से वे विकृतमार्ग पार चले जाते है। आप समता तभी अपना सकेगे जब कि आप अपनी दृष्टि को समतामय बनायेगे। इसके लिए आप खान–पान और व्यवहारिक रूप मे परिवर्तन लावे।

झूठ नही बोले चोरी नही करे चोरी करने का तो प्रश्न ही नही है। ब्रह्मचर्य का पालन पूर्ण नही कर सके तो परस्त्री का त्याग करे और स्वस्त्री के साथ मर्यादा रखे।

परिग्रह को पाप का मूल माना है। परिग्रह हिसा को बढाने वाला है। इन पाचो महाव्रतो के कारण ही अहिसा धर्म धरा पर टिका है। जो हिसा करेगा वह अहिसा का पालन नही कर सकता है जो हिसा करता है वह सत्यादि व्रतो का पालन भी कैसे कर सकता है? परिग्रह रखनेवाले भी पूर्ण अहिसा का पालन नही कर सकता। श्रावक परिग्रह रखते हैं। इसलिए वे देशव्रती के वर्ग मे आते हैं लेकिन हम सत–सती वर्ग पूर्ण रूप से अपरिग्रही होते हैं। हमारा छोटे से छोटे क्षेत्र मे और बडे से बडे क्षेत्र मे रहने का प्रसग आता है। यदि हम इस परिग्रह के प्रपच मे पडेगे तो साधु मर्यादा का पालन नही कर सकेगे। दृष्टात के तौर पर हम चदा वसूल करने बैठ गये तो हम इसके कारण हिसा भी कर रहे हैं। और इस प्रकार अपने महाव्रतो को भी सुरक्षित नहीं रख सकेगे इसलिए सत सतीवर्ग से ऐसे हिसक कार्य नही करावे।

ध्वनिवर्धक यत्र बनाम मुनि मर्यादा

कभी–कभी श्रावक श्राविकाए कहते हैं कि भगवान महावीर का सदेश अधिक लोगो तक पहुचाने के लिए हमे माइक का प्रयोग करना चाहिए। लेकिन जहा माइक चलता है वहा (विद्युत) अग्निकायिक जीवो की हिसा होती है। यदि हम हिसा करके उपदेश देगे तो हमारा अहिसा व्रत कैसे स्थिर रहेगा और फिर हमारा चातुर्मास करने का क्या अर्थ होगा? भगवान ने आचारग सूत्र की पहली देशना मे अहिसा का प्रतिपादन किया है। हमारा धर्म तभी ठहर सकता है जब कि हम हिसा का त्याग करे। पृथ्वी पानी अग्नि वायु और वनस्पति के जीवो की रक्षा करे। विद्युत का प्रयोग करके यदि हम उपदेश देगे तो क्या हम भगवान की आज्ञा का पालन करेगे? यह हमारा ब्लैक करके उपदेश देना तो नही होगा।

भगवान की आज्ञा को तोडने की स्थिति बन गई तो बडी गडबड हो जाएगी।

कभी-कभी लोग कहते है कि लोगो को सुनाई दे उसके लिए आपको थोडा प्रायश्चित्त लेना पडे या शुद्धिकरण करना पडे तो शुद्धिकरण करके भी इसका उपयोग करिये। मै उनसे कहूगा कि आप व्यापारी है, सरकार की मूल्य सूची लगी हुई है उस मूल्य सूची को तोड कर या उसका उलघन करके आप दो नबर का पैसा अर्जित करते है। लेकिन जब सरकारी अफसर इसे जान जाते है और आपसे पूछते हैं कि सरकारी मूल्य सूची का उलघन करके ब्लैक से पैसा क्यो कमाया? तब आप कहते है कि इस पैसे मे से एक पाई भी मैने अपने काम मे नही ली। वह सारा पैसा दीन दुखियो की सहायता मे और धर्म कार्य मे लगाया। ऐसी दलील आप सरकारी अफसर के सामने देगे तो क्या वे आपको माफ करेगे?

'श्रोता नही'। जब आज की सरकार आपकी ब्लैक की स्थिति को माफ नही करती, तो हमारे सयमी जीवन के पाच महाव्रत जो कि हमारी साधना की मूल्य सूची है, उसका तोड कर हम माइक काम मे लेकर उपदेश देगे तो क्या भगवान महावीर या हमारे व्रत हमे माफ करेगे? क्या भगवान महावीर या हमारे साधनाव्रत आपके सरकारी अफसरो से भी कमजोर हो गये?

(मेरी बात आप लोग उस छोर पर बैठे हुए, सुन रहे है या नही? पीछे बैठे लोग हाथ ऊँचे कर रहे है। और यह कह रहे है कि मेरी आवाज वहा तक पहुचती हे चारो तरफ आवाज पहुच रही है यदि) आप हमे अहिसक बने रखना चाहते हैं तो आपका कर्तव्य है कि इस कार्य मे सतो से ब्लैक नही कराये। आप ऐसी हिसा के लिए खुले हे, माइक पर भाषण देते है लेकिन हमारे लिए ऐसी हिसा नही करने का प्रभु महावीर ने शास्त्रो मे स्पष्ट निर्देश दिया है। चातुर्मास छोटे से छोटे प्राणियो की रक्षा करके पूर्ण अहिसा की साधना के लिए किया जाता है। यह स्थिति चितन की हे। आप तटस्थ भाव से चितन करे। कदाचित् आपको यह भाव समझ मे नही आवे, यद्यपि ये भाव मेरे नही हैं, तीर्थंकरो की देन है- कदाचित् मेरे समझने मे अतर हो ओर आप अधिक जानते हो तो आप परामर्श दीजिए। में सुनने को तेयार हूँ, लेकिन भगवान के बताये विवेकसूत्र को पकडे।

तो मे कह रहा था इस धर्म करनी के लिए जो तत्पर होते हे, जो सच्ची श्रद्धा रख कर चलते हें भगवान की आज्ञा के अनुसार चलते हें उनके चरणो मे देवता भी नमस्कार करते हे।

आप गृहस्थ ह, परिग्रहधारी हे लेकिन हम सतो को इसमे नही डाले- मुझे आपसे नम्रतापूर्वक यही कहना हे कि आप हमे सावधान करिये कि यह काम हमारा ह। आप अपने आदर्श पर चलिए आप अहिसा का परिपालन करिये। इस

परिग्रह की झझट मे बडो–बडो की हिसा हो गई। पिता पुत्र का सहारक बन गया है। ऐसे कई उदाहरण है यदि उनको आपके समक्ष रखूगा तो समय अधिक लगेगा। आपके मानस मे जो विचार आवे उन प्रश्नो का समाधान यहा ले सकते हे। आप तटस्थ भाव से चितन करे यदि आपका मन माने तो उसके अनुसार आचरण करे।

इस चातुर्मास काल मे लाभ उठाकर आप अपने जीवन को समता साधना मे आगे बढावे बडे भाइयो के साथ छोटे भाई भी साधना के क्षेत्र मे आगे बढे।

निष्कर्ष मे वर्षावास मे चार माह एक स्थान पर रहने का मूल उद्देश्य है– प्राणी मात्र का समता भाव का सृजन हो और हम अपनी मर्यादाओ का अक्षुण्ण पालन करते हुए समता साधना मे आगे बढे।

दिनाक १२-७-८४
बोरीवली

*****

धर्म के स्वरूप एव उसकी फल श्रुति के विषय मे आज बहुत कुछ मतभेद है। धर्म का मूल स्वरूप क्या है तथा धर्म साधना का मौलिक उद्देश्य क्या होना चाहिए, इस विषय मे भी बडी भ्रातिया चल रही है और यह सब चल रहा है सही समझ के अभाव मे, इसी नासमझी के कारण धर्म साधना जैसी महत्वपूर्ण प्रक्रिया को चद भौतिक उपलब्धियो के लिए दाव पर चढा दिया जाता है।

धर्म का स्वरूप क्या है, उसे किन निष्काम भावनाओ से प्रेरित हो कर करना चाहिए तथा कामनाओ सहित साधना कैसा घाटे का व्यवसाय है, आदि विषयो पर विस्तृत विश्लेषण पढिये प्रस्तुत प्रवचन "निष्काम साधना" मे किंतु पढिये ही नही, इसे सही अर्थो मे जीवन मे ढालिये

—सपादक

२. निष्काम साधना

अनत उपकार करने वाले तीर्थेश प्रभु महावीर के चरणो मे अपने आध्यात्मिक जीवन के समर्पण के भाव रखते हुए उनके द्वारा बतलाये हुए तत्त्वो का कुछ विश्लेषण करने का प्रसग उपस्थित हुआ है।

तीर्थंकर महाप्रभु ने जिस पवित्र मार्ग का उपदेश दिया उस पवित्र मार्ग का अनुकरण करने के लिए भव्य जीवो के समक्ष कुछ विश्लेषण की आवश्यकता है। वह पवित्र मार्ग धर्म के रूप मे कहा जा सकता है। जैसी कि कल मैंने उत्कृष्ट धर्म की बात कही थी उसी धर्म को विवेचित करते हुए स्थानाग सूत्र के दूसरे ठाणे मे प्रभु ने धर्म के दो भेद बताये

धर्म के दो रूप

''सुय धम्मे चेव चरित्र धम्मे चेव''

धर्म दो प्रकार का– एक श्रुत धर्म और दूसरा चारित्र धर्म। श्रुत धर्म का तात्पर्य हे सम्यग् ज्ञान ओर सम्यग् दर्शन। जब तक मनुष्य को सम्यग् ज्ञान नही होता– सही जानकारी नही होती तब तक वह आत्मा ओर परमात्मा के स्वरूप को समझ नही सकता। सम्यग्ज्ञान सम्यग्दर्शन पूर्वक ही होता है। जिसने आत्मा और परमात्मा के सही स्वरूप को नही समझा वह वर्तमान जीवन मे क्या करना चाहिए और क्या नही करना चाहिए इसका विवेक भी नही कर सकता। ज्ञान के अभाव मे वस्तु के स्वरूप का विश्लेषण नही कर सकता। जो वस्तु का विवेचन नही कर सकता तो जीवन का विवेचन तो वह कर ही नही सकता। इसलिए प्रभु ने ज्ञान पर बहुत अधिक बल दिया।

''पढम नाण तओ दया''

पथम ज्ञान करो ओर फिर आचरण मे अथवा प्रयोग मे अपनाओ।

व्यापारी व्यापार करने के लिए दुकान पर बेठता हे। ग्राहक उस के पास माल की खरीद करने की दृष्टि से पहुँचता ह आर वह उस व्यापारी से ज्ञान प्राप्त करता ह कि कान–सी वस्तु किस रूप म हे किस कपडे का क्या मूल्य है किस

वस्तु का क्या भाव है। वह पहले यह जानकारी करता है और उस पर विश्वास करता है, उसके पश्चात ही वह वस्तु को खरीदने की कोशिश करता है। ससार मे जितनी भी वस्तुए हैं उन वस्तुओ मे से जिन को भी मनुष्य ग्रहण करता है– पहले ज्ञान प्राप्त करके ही ग्रहण करने की कोशिश करता है।

जब ससार की वस्तुओ का यह हाल है तो इस मनुष्य जीवन मे रहनेवाले चैतन्य देव को पहचानने और उसको उपादेय रूप मे स्वीकार करके चलने के प्रसग पर ज्ञान की विशेष आवश्यकता है। ज्ञान से ही जानने योग्य वस्तु जानी जाती है। सभी वस्तुए जानने योग्य होती है। जानने के बाद व्यक्ति अलग–अलग वर्गीकरण करता है कि यह वस्तु मुझे छोडनी है या ग्रहण करनी है। जो व्यक्ति ग्रहण करने लायक वस्तु को, ज्ञान पूर्वक ग्रहण करता है, वह उससे लाभ भी उठाता है।

यह स्थल भगवान महावीर के आध्यात्मिक मार्ग की दुकान है। आप यहा उपस्थित हुए है तो आपको भगवान की अमूल्य निधि को समझना चाहिए। और जीवन मे उतारना चाहिये।

प्रभु ने वर्तमान जीवन को ठीक बनाने के लिये साधना का क्या मार्ग बताया है, मुझे किस रीति से साधना करनी चाहिये, साधना करने से क्या फल मिलता है ओर साधना का उपाय क्या माना जाता है? इस बात का विचार आप सब चितन के साथ करे।

(मैं हिदी के साथ–साथ कुछ गुजराती शब्दो का भी प्रयोग कर देता हू– मै समझता हू कि गुजराती भाई हिदी भी समझते हैं और हिदी भाषी गुजराती कम समझते है। जो लोग हिदी के शब्द नही समझे वे बोल देवे, मै गुजराती मे समझा दूगा।)

आप लोग जब साधना के मार्ग पर चलते है तो पहले यह समझना आवश्यक है कि वर्तमान जीवन को भव्य और सुदर बनाने के लिए प्रभु ने साधना का उपदेश दिया उसका पहला पाया क्या है? आपको प्रभु महावीर ने क्या उपदेश दिया?

साधु जीवन के लिए पाच महाव्रत, पाच समिति और तीन गुप्ति बताई। लेकिन आप श्रावको के लिये क्या बताया? पाच अणुव्रत बतलाये। श्रावक कुल मे जन्म लेने के बाद पाच अणुव्रतो का पालन करना चाहिए। इन अणुव्रतो की साधना के द्वारा लम्बी–चोडी कर्म बन्ध की क्रियाओ को सीमित करने के लिए इनकी पालना आवश्यक हे। लेकिन इन व्रतो के स्वरूप को जानने के लिए समभाव की साधना भी आवश्यक हे। जव तक मनुष्य का मस्तिष्क सम नही होता

तब तक उसका ज्ञान भी सम नही होता। इसलिए भगवान ने श्रुत धर्म—सम्यग् ज्ञान और सम्यग् श्रद्धा को विशेष महत्व दिया है।

मोक्षमार्ग

शास्त्रो के निष्कर्ष के रूप मे आचार्य उमास्वाति ने मोक्षमार्ग का स्वरूप बतलाते हुए कहा है—

"सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्राणि मोक्षमार्ग "

सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान और सम्यक् चारित्र— तीनो मिलकर मोक्षमार्ग बनता हे। वे अपनी ओर से नही कह रहे हैं लेकिन शास्त्रो मे जो श्रुत और चारित्र' धर्म दो प्रकार का बताया है। उसको स्पष्ट करने के लिए कुछ विस्तार किया ज्ञान, दर्शन ओर चारित्र। इन तीनो मे श्रुत ओर चारित्र धर्म आ जाता है। उत्तराध्ययन सूत्र मे ज्ञान दर्शन चारित्र और तप का उल्लेख है। चाहे सम्यग्ज्ञान सम्यग्दर्शन सम्यकचारित्र ओर सम्यक तप कहे— ये चारो श्रुत और चारित्र धर्म मे आ जाते है। चारित्र धर्म आचरण करने योग्य धर्म जीवन मे तब वास्तविक रूप मे आता हे जब कि सम्यग्ज्ञान ओर सम्यग्दर्शन को ठीक तरह से समझ ले। हमारी श्रद्धा क्या है। हम ऐसे अपने को सम्यग्दृष्टि कहते हैं लेकिन हमारी दृष्टि का वास्तविक स्वरूप किस रूप मे होना चाहिये यह ज्ञान बहुत कम लोगो मे पाया जाता है। हम तप करते हें चारित्र का पालन करते हैं लेकिन किसलिए करते हे? हमारा उद्देश्य क्या है? भगवान का बतलाया हुआ मार्ग ले कर हम चल रहे हैं या केवल हमारे मन मे रही हुई भावनाओ की पुष्टि के लिए चारित्र धर्म का पालन कर रहे है? आचरण की दृष्टि से श्रावक के लिए अणुव्रत ओर साधु के लिए महाव्रत है। और इस चारित्र के अतर्गत ही तप हे। तप चारित्र का ही अग हे। तप १२ प्रकार के बताये हे। आज जो तपश्चर्या होती हे उस मे कही—कही धन प्राप्त किया जाता है। हम कहते हें कि हम सम्यग् दृष्टि हैं लेकिन इसके पीछे हमारा दृष्टिकोण क्या हे? दुनिया मे हम वाहवाही लेने के लिए तपश्चर्या करते हें धर्म आचरण करते हैं चारित्र का पालन करते हे सामायिक ओर पोषध करते हैं— या हमारी आत्मशुद्धि के लिए हम ये सब करते हे? लेकिन जब तक लक्ष्य ठीक नही होता तब तक आचरण भी ठीक नही बनता।

निष्काम साधना

शास्त्रकारो ने कहा कि तुम ज्ञान पूर्वक आचरण करो चारित्र धर्म का आचरण करो लेकिन किसलिये करो।

नो इह लोगट्ठयाए आयार महिट्ठिज्जा ना परलोगट्ठयाए आयार महिट्ठिज्जा

तुम जो कुछ भी धर्माचरण करो– इस लोक की भावना से मत करो। इस लोक का तात्पर्य क्या है और इह लोक का सबध कैसे जुडता है? इसे जरा समझ ले– मै आज पौषध करू, बेला या तेला करू तो इस बेले, तेले, उपवास, पौषध से मुझे इस जीवन मे कुछ लाभ मिले या मुझे इसका फल मिले। इसका तात्पर्य यह है कि मुझे कुछ रूपया–पैसा मिल जाए, लोगो मे मेरी तारीफ हो जाए– इसे इस लोक या इह लोक का फल कहते है। परलोक सबधी तप का फल क्या–क्या होता है। मै यह तपश्चर्या करू तो मुझे स्वर्ग मिले, देवलोक मिले और देवलोक का सुख भोगू– इस भावना से तप करने का निषेध किया है। यदि इसका निषेध है तो फिर किसलिये तपश्चर्या की जाए या पौषध आदि किया जाए? शास्त्रकार कहते है तपश्चर्या एकात रूप से निर्झरा के लिये करना चाहिए। किंतु इस उद्‌देश्य को बहुत कम व्यक्ति जानते होगे।

धमकतेला

मेवाड मे मैने सुना, इधर नही सुना, इधर भी होता हो तो पता नही मेवाड मे कभी–कभी कोई भाई आकर कहते "महाराज आज हमारी बीनणी के धमक तेला है" मैने उनसे पूछा "भाई, मुझे पता नही धमकतेला क्या होता है– शास्त्रो मे तो धमकतेले का उल्लेख है नही, यहा वह कैसे आ गया? "वे कहने लगे" "महाराज धमकतेला करके बीनणी सासु जी को धमकाये कि इतने रूपये या अमुक वस्तु दो तो पारणा करूगी, नही तो नही" जरा चितन करिये इस बहिन ने सासु जी को धमकाने के लिए तपस्या की। इसका तात्पर्य यह है कि उसने अपनी तपश्चर्या की पचास रू या सौ रू कीमत कर दी। क्या तपश्चर्या की इतनी क्षुद्र कीमत है? यह भगवान का बताया हुआ मार्ग नही है। कोई पैसे के लिए तपस्या करे तो उसको क्या मिलनेवाला है। उस बहिन को ज्ञान नही इसलिए पैसा लेती है। रूपया परिग्रह हे और तुम तपस्या परिग्रह छोडने के लिए करते हो।

परिग्रह से तप का सौदा

आपने १८ पापो के नाम सुने होगे? जिनको प्रतिक्रमण आता है उनको १८ पापो के बारे मे मालूम होगा। ससार मे जितने प्रकार के पाप है उन सबको १८ पापो से समाविष्ट कर दिया हे। परिग्रह कोन सा पाप है? हिसा झूठ, चोरी अब्रह्मचर्य और परिग्रह पाचवा पाप है। अब जिस बहिन ने तेला किया उसने पाप धोने के लिए किया या पाप ग्रहण करने के लिए? यह चितन का विषय है। भाइयो और बहिनो को ख्याल रखना हे कि ऐसा धमकतेला नही करे। तपश्चर्या के उपलक्ष मे कोई रू देने चाहे तो उनसे कह दे कि हमे रू नही चाहिए।

यदि कोई व्यक्ति शुद्ध दिल से नवकारसी करता हे तो उससे भी

नरक के बधन टूटते हे– इतने बधन टूटते है कि उसकी कोई कीमत नही की जा सकती। यह लघुतम धार्मिक क्रिया भी कितनी महत्वपूर्ण होती है इसको यदि हम चद चादी के टुकडो के लिए बेच दे तो हमारे जैसा नासमझ कौन होगा?

तराजू पर हीरा

एक गडरिया जगल मे बकरिया चरा रहा था। बकरियो को इधर से उधर मोडने के लिए पत्थर उठा कर फेक रहा था। उन पत्थरो मे उसको एक अमूल्य रत्न मिल गया जिसकी कीमत लाखो रूपये थी। उसने उस गोल–गोल रत्न को देखा लेकिन वह समझता नही था कि यह रत्न है। उसने उस रत्न को पत्थर का टुकडा समझा और मन मे विचार करने लगा कि बडे–बडे सेठो के बच्चे–बच्चियो के खेलने के लिए तरह–तरह के खिलौने होते हैं। मेरे बच्चो के लिए खिलौने नही हैं लेकिन यह पत्थर अच्छा है। इससे बच्चे खेलेगे यह सोचकर उसने उस पत्थर को फेका नही, अपने पास रख लिया। शाम को वह अपने घर की ओर जा रहा था मार्ग मे उसने सोचा बच्चा तो खेलेगा तब खेलेगा, मैं तो पहले खेल लू इस भावना से वह उस पत्थर को उछालता हुआ घर की ओर जा रहा था। वह दुर्व्यसनी तमाखू पीने का आदि था– जब वह गाव के नजदीक पहुचा तो सोचने लगा कि थोडी तबाकू लेता चलू। उस गाव मे अधिक दुकाने नही थी। वहा एक ही व्यापारी था। जो ग्रामीण लोगो की उनकी आवश्यकता का समान बेचता था और ग्रामीण लोग उसे सेठबा कहते थे। गडरिया दुकान पर जा कर सेठ को कहता है कि दो आने की तबाकू तोल दो। सेठ तकडी उठा कर तबाकू तोलने लगा लेकिन तकडी के पल्ले लेबल पर नही थे– काणम निकालने के लिए पत्थर दूढने लगा लेकिन उसको कोई पत्थर नजर नही आया। गडरिये के हाथ मे गोल–गोल चमकीला पत्थर देखा तो व्यापारी ने कहा कि देखू, इस पत्थर से काणम बराबर होती या नही। सयोग से काणम बराबर बैठ गई। व्यापारी ने सोचा कि यह पत्थर मिल जाए और इसको तकडी (तराजू) के बाध दू तो हमेशा की झझट मिट जाए। व्यापारी ने कहा यह पत्थर अच्छा है मुझे दोगे क्या। गडरिये ने कहा कि नही यह तो मै बच्चो के खेलने के लिए लाया हू। व्यापारी ने कहा दो चिमटी अधिक तबाकू दे देता हू पत्थर मुझे दे दो। गडरिये ने सोचा कि दो चिमटी तबाकू मिलती हे तो अच्छा ही है। उसने पत्थर व्यापारी को दे दिया ओर व्यापारी ने तराजू के पलडे के बाध दिया– काणम निकल गई ओर बार–बार की झझट मिट गई।

उस समय यातायात के साधन कम थे। लोग प्राय पैदल ही आते–जाते

उसने भी सोचा कि इस ग्रामीण व्यापारी को इस रत्न की पहचान नही है। उस ग्रामीण व्यापारी से पूछा इसे वेचोगे क्या? ओर वेचोगे तो क्या कीमत लोगे?

ग्रामीण व्यापारी ने सोचा कि पहले विना सोचे पाच रूपये की कीमत वताई थी– यह कोई कीमती पत्थर मालूम होता हे इसलिये उसने कीमत दस रूपय वतलाई। जौहरी ने कहा कि ७ रू ले लो । ग्रामीण ने कहा नही पूरे दस रूपये लूगा यह कीमती पत्थर हे। उस दूसरे जोहरी ने भी आटा दाल घी शक्कर आदि तुलवाया ओर रसोइये को बुलाकर चुरमा–बाटी बनाने का आदेश दिया ओर स्वय पहले जोहरी की तरह भाग घोटने ओर नहाने–धोने मे लग गया। तत्पश्चात् खूव छक कर भोजन किया– वह भी सोचने लगा कि अव तो में लखपति वन ही जाऊगा।

सयोग की वात हे कि उसी ग्राम मे तीसरा जोहरी ओर आ गया उसको भी भूख लग रही थी– उसने भी आटा दाल घी शक्कर तोलने का आर्डर दिया। उसकी नजर भी तकडी पर वधे हुए पत्थर की ओर गई। वह भी पूछता है कि यह क्या हे– ग्रामीण ने कहा कि पत्थर हे। वह सोचने लगा कि बात क्या है जो आता हे वह पत्थर को मागता हे। जोहरी ने पूछा कि इसकी कीमत क्या है? ग्रामीण ने सोचा कि पहले दस रूपये कीमत वताई थी ओर ७ रू देने के लिए दूसरे नबर पर आनेवाला तेयार था इसलिए इस बार ओर अधिक माग लू– उसने कहा कि इसकी कीमत २० रू हे। तीसरे नबर पर आनेवाला जोहरी चतुर था। उसने मस्तिष्क मे चितन किया कि यह कीमत बीस रूपये बता रहा है। यदि यह जानकार होता तो इस रत्न को तकडी के नही बाधता तिजोरी मे रखता। उसने अनुमान लगाया कि मेरे से पहले कोई जानकार साथी आ चुका ह इसलिये इसने कीमत बढा दी हे। म यदि उनकी तरह से खाने–पीने लग गया तो पहले आनेवाले व्यापारी आ जायेगे ओर सपत्ति का बटवारा हो जाएगा। खाना ता रोज ही खाता हू– एक दिन उपवास भी हो जाए तो कोई हर्ज नही।

यहा उपवास की कीमत हे– पैसे के लिए उपवास करने वाले यह नही जानते होग कि बेला तेला ओर लबी तपस्या तो अलग रही नवकारसी की कितनी कीमत होगी– जो जानते नही ह वे ही तप की कीमत करने को तेयार होते हे।

वह जोहरी पत्थर की पहचान करने वाला था। उसने कहा कि बीस रूपया की बजाय तुम इक्कीस रूपय ले लो ओर यह पत्थर का टुकडा मुझे दे दो। गावड क लोग ईमानदार होते ह कह दिया सो कह दिया फिर उसस मुकरते नही। ग्रामीण व्यापारी न २१ रू ले लिय ओर पत्थर उस जोहरी क हाथ मे दे दिया। वह जोहरी भी सोचन लगा कि अब ता सीधा घर जाना चाहिय– पत्थर

लेकर वह घर की ओर चल दिया।

इधर पहला जोहरी नीद से उठा और सोचने लगा कि अब तो लखपति बन जाऊगा। वह झूमता हुआ ग्रामीण व्यापारी की दुकान की ओर चल पडा।

उसी तरह दूसरा व्यापारी घोटा घोट करके, चूरमा-बाटी जीम कर झूमता हुआ गाव मे दुकान की ओर जाने लगा। उसने पहले व्यापारी को गाव के नजदीक जाते हुए देखा तो उसको शक हुआ कही रत्न पहले नही खरीद ले। उसने दूर से ही कहा कि मैने रत्न खरीदने की बात पहले कर ली है अब तुम उसको खरीद नही सकते। पहला जौहरी कहने लगा कि मैने तुमसे भी पहले बात कर ली हे। वात बढने लगी और दोनो आपस मे गुत्थम-गुत्था हो कर लडने लगे। दोनो को आपस मे लडते हुए देख कर ग्रामीण व्यापारी हसने लगा।

पहला जौहरी ग्रामीण से कहने लगा- "देखो भाई, पहले कीमत मैने लगाई थी। ग्रामीण वोला "मेने कीमत पाच रूपये बताई थी और आप ने चार रूपये वोले थे, लेकिन आपने मुझे दिया कुछ भी नही था। खरीदने का पेसा देते तो आपकी बात मानी जा सकती थी।"

दूसरा जोहरी कहने लगा कि मैं सात रू देने को तैयार था। ग्रामीण ने कहा कि सात रू देने की बात आपने कही थी लेकिन दिया एक पैसा भी नही। दानो जाहरी कहने लगे कि अब पेसा ले लो। ग्रामीण ने कहा कि अब पैसा क्या ले लू- खरीदने वाले ने पेसे दे दिये और पत्थर ले गया। दोनो ने पूछा कि कौन ले गया? ग्रामीण ने कहा कि आपका ही साथी आया था- मैने कीमत २० रू बताई थी लेकिन वह २१ रू दे कर ले गया।

दोनो जोहरी कहने लगे अरे तू ठगा गया।" उसने कहा "मै क्यो ठगा गया ठगाए आप!' मेने तो वह पत्थर चिमटी भर तवाकू के वदले मे लिया था- म इसकी कीमत नही जानता था- आप कीमत जानते हुए भी घोटा-घोट मे रह गय आर माल तीसरा ले गया। इसलिए आप दोनो ठगा गये।

यह जीवन अनमोल रत्न

वधुआ यह ता एक रुपक हुआ। लेकिन आज जानते हुए भी आप लोग क्या कर रहे है। आपका मनुष्य जन्मरूपी अमूल्य हीरा मिला हे। कही आप इसे व्यर्थ मे तो नही खो रहे है। इस सबध मे कुछ पक्तिया सुना देता हू -

''नर तेरा चोला रत्न अमोला वृथा खोवे मतीना''

वृथा खोवेमती ना, वृथा खोवे मती ना।

नर तेरा चोला रत्न अमोला वृथा खोवेमतीना।

वधुओ यह जो मनुष्य पर्याय का चोला आपको मिला हे अनत पुण्य के योग से यह न मालूम केसे भूले भटके आपके हाथ मे आ गया है। लेकिन आपने इसे कहा वाध रखा हे? उस गाव के व्यापारी की तरह तराजू के तो नही बाध रखा हे? कहने का तात्पर्य यह हे कि इस मनुष्य जीवन को किस कार्य मे लगा रहे है? गाव के व्यापारी की तरह उस बहुमूल्य रत्न को तकडी की डडी मे तो नही लगा रहे हे? सतो के पास जाने पर जानकारी होगी कि यह नर देह अमूल्य है इसकी कोई कीमत नही हे। इतनी जानकारी हो जाने पर भी आप घोटम–घोट मे लग रहे हें वाल सवार रहे हें। कोई अपनी धर्म करनी को बेच रहा हे। जैसे अभी मेंने धमकतेले की वात कही। उस बहिन ने अपने तेले की तपस्या की कोई कीमत नही समझी इसीलिये उस ग्रामीण व्यापारी की तरह २० रू मे बेच देती हें। यदि उसकी सासु जी ने उसे धमकतेले के उपलक्ष मे २० रू दे दिये और उसने अपनी तपस्या वेच दी तो वह ग्रामीण महिला अज्ञानी ही कहलाएगी।

आप कहते है कि हम भगवान के अनुयायी हैं अनुयायी होना शुद्ध श्रद्धा पर अवलम्बित है लेकिन प्रत्येक साधना को वेचने की कोशिश करेगे तो आपकी श्रद्धा स्थिर कहा रही? श्रद्धा ठीक नही हे तो कुछ भी ठीक नही है। महावीर ने कहा है कि 'श्रद्धा परम दुल्लहा' श्रद्धा वहुत दुर्लभ वस्तु हे– वडी कठिनता से प्राप्त होती है। इस श्रद्धामय केसे हो इस सवध मे में अभी आपके समक्ष वैज्ञानिक विश्लेषण नही कर रहा हूँ, कितु आपको इतना ही वता रहा हूँ कि आप क्या कर रहे है– आप धर्म के मार्ग पर नही चल रहे है आप धर्म की छोटी–मोटी चीजो के लिए वेचने को तेयार हो जाते हे।

तेला बनाम मेटासिन

किसी वहिन के वच्चे को बुखार आ गया तो वह कहेगी कि बच्चा ठीक हो जाए तो तेला कर लूगी कभी कोई वहिन कहती हे कि मेरा पोता हो जाए तो तेला करू।

भद्रिक वहिन कहती है कि वच्चे का बुखार ठीक हो जाए तो तेला करू। बुखार उतारने के लिए आज डाक्टर लोग मेटासिन की गोली देते हें ओर वह गोली २५ पैसा मे आती है तो उस वहन ने अपने तेले की कितनी कीमत की?

पोता मागने वाली बहिन ने अपनी तपस्या की कीमत अपनी बीनणी (पुत्रवधू) जितनी कर दी क्योकि पुत्रवधू आने पर ही पोता आयगा।

आज यह कैसा तमाशा हो रहा ह। मेरे भाई वहिन क्या–क्या कामना लेकर चलते हैं। इसलिए भगवान ने कहा।

"नो इह लोगट्ठयाए तव महिट्ठिज्जा "

इस लोक या परलोक की कामना से किसी प्रकार का तप मत करो। तुम ऐसी साधना करो जो तुम्हारे कर्म वृन्दो को उडाने वाली हो।

शुद्ध नवकारसी

राजा श्रेणिक भगवान महावीर से पूछने लगा कि भगवन् "मेरी प्रथम नरक का बन्धन कैसे टूटेगा?' तो प्रभु ने कहा "राजन, यदि तुम शास्त्र विधि से एक नवकारसी करने का नियम कर लो तो नरक का बन्धन टूट सकता है।' श्रेणिक ने फिर पूछा "भगवन्, कितने समय की नवकारसी होती है?" भगवन ने कहा ' रात्रि १२ बजे से सूर्योदय के ४८ मिनिट पश्चात् तक कुछ न खाओ-पीओ तो नवकारसी हो जाती है।" श्रेणिक ने कहा यह तो बहुत आसान है। लेकिन दूसरे दिन सूर्योदय से पहले मालिन ताजे फल लेकर आई तो राजा ने मुह मे डाल दिया ओर नवकारसी नही कर पाया।

मै आप लोगो से ही पूछ लू- आप लोग भी नवकारसी करते है? बहुत से लोग करते होगे, लेकिन उसमे भी गलतिया निकालने की कोशिश करते हैं। वे तर्क देते हैं कि शास्त्र मे लिखा है "उग्गेसूरे" पाठ आता है, अत सूर्योदय से पीछे ४८ मिनिट नही खायेगे। किन्तु यहा विचारणीय है कि सूर्योदय से पहले खाया जाए तो क्या होगा? यह मुसलमानो का रोजा तो नही हो जायेगा? कम से कम रात्रि मे १२ बजे के बाद कुछ भी खाया पीया नही जाए तो यह शास्त्रीय विधि से नवकारसी होगी। इससे नरक के बधन टूट सकते हैं।

जहा नवकारसी का इतना फल है तो उपवास, बेले, तेले का फल कितना होता होगा। लेकिन अज्ञान के कारण मिले हुए चितामणि रत्न को खो देते है। मे उन भाई-बहिनो से क्या कहू- मैं कहना चाहूँगा कि प्रत्येक क्रिया को ठीक तरह से समझने की कोशिश करे।

आज प्राय यह भी भूल गये हैं कि नवकार मन्त्र कैसे गिनना चाहिये, कई भाई बहिन महाराज से आकर पूछते है कि कोई ऐसा मत्र बता दो, जिससे कार्य सिद्ध हो जाय। उन्हे ज्ञात नही है कि नमस्कार मत्र से बढकर और कोई मत्र नही हे।

आपको जानना चाहिये कि नवकारसी क्या हे, तप क्या है, अणुव्रत और महाव्रत क्या ह सामायिक क्या है पहले इन बातो का ज्ञान होना आवश्यक है। जिसका प्रथम कक्षा की वर्णमाला भी नही आती हे वह आकर कहे कि एम ए की पढाई करा दा ता क्या वह एम ए की पढाई का विषय समझ पायेगा? वेसी ही आज आम लोगो की दशा वन रही ह। अपनी विद्वता वताने के लिए लम्वी चोडी वात कह दगे लेकिन अणुव्रत और महाव्रत क्या हें, इसका भी ज्ञान मुश्किल से कर पायग।

में घाटकोपर गया तो वहा के भद्रिक भाई कहने लगे कि हमने आज तक सामायिक के विषय मे ऐसा विस्तृत एव आगमिक विवेचन नही सुना भावनगर 15 राज तक इस बारे मे विवेचन चला। यदि आप प्राथमिक बातो को अच्छी तरह से नही समझेगे तो आध्यात्मिक जीवन को प्राप्त नही कर पायेगे। इस लिए प्रभु महावीर का सदेश हे कि–

''पढम नाण तओ दया''

पहले विषय को अच्छी तरह समझे फिर आचरण करे। में भी आध्यात्मिक पाठशाला का विद्यार्थी हू, उसी नाते आपको परामर्श दे रहा हूँ। अपने गुरूदेव से जो अध्ययन किया वही आपको समझाने का प्रयास कर रहा हूँ। रुपक आपके सामने इसलिए रखता हूँ कि बात ठीक तरह से आपकी समझ मे आ जाए। रत्न कौन ले गया और हाथ मलते कौन रह गये। इसी तरह तपस्या करके २० रु मे सतुष्ट हो जाए तो यह आप पर निर्भर है। आप इन बस बातो पर चितन करेगे तो जीवन आनदमय बनेगा। आप धर्म के मूल रुप को समझे। धर्म की सक्षिप्त व्याख्या करते हुए प्रभु ने कहा– समियाए धम्मे' अर्थात् समता मे धर्म है। वह समता आपके जीवन मे गहराती जायेगी तो निश्चित यह जीवन शान्ति से भर जाएगा।

१३-७-८४

बोरीवली (पूर्व)

सामायिक साधना जैन साधना पद्धति की आधार शिला है या हम यो कह सकते है कि सामायिक की प्रक्रिया जैन साधना का हार्ट है। सामायिक समता साधना की वह प्रारभिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा साधना की चरम मजिल तक पहुँचने का मार्ग प्रशस्त हो जाता है।

आगम सामायिक साधना का विहगम विवेचन उपलब्ध होता है। आगमिक दृष्टि से सामायिक का अर्थ है– आत्मा का मौलिक भाव। समय का अर्थ किया गया है– आत्मा और उसका भाव सामायिक।

आध्यात्म साधना की समस्त क्रिया विधियो में आज सामायिक की साधना का विशेष जोर है अर्थात् श्रावकवर्ग स्वाध्याय, ध्यान पौषध आदि अन्यान्य प्रवृत्तियो मे गति करे या न करे, सामायिक साधना मे तो यत्किञ्चित् ही सही, पर गति करता है।

कितु विचारणीय है कि आज का आम साधक सामायिक की विशुद्ध विधि से अनभिज्ञ–सा ही है। सामायिक की पूर्व भूमिका क्या है? सामायिक का सैद्धातिक पक्ष क्या है? सामायिक का परिवेश क्या होना चाहिए? सामायिक व्रत के पाठो का अर्थानुसधान क्या है? सामायिक का उद्देश्य एव उसकी फल श्रुति क्या है? आदि विषयो आज बडी विसगतिया एव भ्रान्तियॉ चल रही है। यही कारण है कि आज की सामायिक साधना एक द्रव्यात्मक एव व्यावहारिक प्रक्रिया बनकर रह जाती है– उसमे सरसता एव समरसता प्राप्त नही हो पाती है। और इसके अभाव मे सामायिक साधना मे जो आनद की उदभावना होनी चाहिए वह नही हो पाती है।

सामायिक जैसी उच्चतम साधना की प्रक्रिया किस विधि से सपन्न होनी चाहिये उसका मौलिक उद्देश्य क्या होना चाहिए? उसका विशुद्ध आगमिक स्वरूप क्या होता है आदि विषयक विविध आयामी जिज्ञासाओ का विशुद्ध सैद्धातिक एव मनोवैज्ञानिक समाधान प्राप्त करिये प्रस्तुत प्रवचन माला मे–

– सपादक

३. सामायिक साधना

तीर्थंकर वाणी-गगा का पानी

विश्व के भव्य प्राणियो पर अनत–अनत कृपा करके तीर्थंकर देव ने जो पवित्र उपदेश दिया हे उस उपदेश की महिमा सीमित शब्दो मे व्यक्त नही की जा सकती– उसका वर्णन इस साधारण जिह्वा के द्वारा नही हो सकता है। देवताओ के गुरु वृहस्पति भी उनकी पूर्ण स्तुति गान नही कर सकते।

ऐसे तीर्थंकर देव की हम जितनी भी उपासना करे उतनी ही कम हे। उन्होने सारे विश्व को एक अनूठा मार्ग दिया है। अनूठे मार्ग का तात्पर्य है कि किसी अन्य स्थिति से जिसकी तुलना नही की जा सके। ऐसा मार्ग उन्होने बताया ओर वह मार्ग इतना पवित्र कि सब प्राणियो को, सब आत्माओ को शुद्ध ओर पवित्र वना दे।

गगा का जल स्वच्छ ओर निर्मल माना जाता हे उसमे कई जडी बूटिया और ओषधिया मिल जाती है। ऊची–ऊची पहाडियो से हो कर गगा का पानी आता हे तो कई औषधिया उसमे घुल जाती है जो उसका उपयोग करने वाले व्यक्तियो के शारीरिक रोगो का उपशमन करता हे। यह एक ऐसी उपमा हे जो किसी सीमा तक चल सकती है। क्योकि इसमे ओषधिया मिली हें। लेकिन भगवान की वाणी रूपी पवित्र जल मे नय–नक्षिपो और सूक्ष्म से सूक्ष्म अनेक विचार–धाराआ का पुट लगा हुआ है– जिसका पान करने वाला व्यक्ति केवल शारीरिक दृष्टि से ही नही मानसिक और आध्यात्मिक दृष्टि से भी शाति प्राप्त करता हे ओर दोनो तरह क रोगो का शमन करता है। रोग शमन ही नही सामायिक साधना से समता की सर्जना भी होती है।

शारीरिक एव मानसिक रोगो का शमन करने के लिए तो डाक्टर हकीम मनोचिकित्सक अथवा वेद्य चिकित्सा करते ह लेकिन आत्मिक रोग मिटाने के लिए कौन से चिकित्सक हे? वे हे समता योग की साधना मे निरत सन्त–महात्मा।

यद्यपि मानसिक रोग मिटाने के लिए कुछ मनावज्ञानिक अनुसधान कर रह ह। किंतु वह भी अधूरा हे। वीतराग देव की वाणी एसी आषधि ह। जो शारीरिक मानसिक वाचिक सब रोगो की निवृत्ति करन वाली ह।

आप कहेगे कि यह कैसे हो सकता है? लेकिन मैं ठीक कह रहा हू। आप गहराई से चितन करे तो पता चलेगा– चितन से भी इतना पता नही चलेगा– जितना आप अनुभव करके पता लगा सकते हैं। केवल कथन से उतना अनुभव नही होगा जितना प्रयोग मे लाने से अनुभव होगा। कुछ प्रयोग करके तो देखे सामायिक साधना के द्वारा किस प्रकार पूरे जीवन मे समता की सर्जना हो जाती हैं।

सामायिक-स्वरूप

प्रभु ने इन सब भव भ्रमण के रोगो को मिटाने के लिए जो साधना का मार्ग दिया है उस साधना मार्ग का सबसे छोटा से छोटा स्वरूप सामायिक सूत्र है, इस सामायिक मे कितना रहस्य भरा है, इसकी उपमा किससे दी जाए? इसे कुभ कलश या कल्पवृक्ष कह दिया जाए। किन्तु यह उपमा भी पूर्णत घटित नही होती इसके अतिरिक्त और कोई तत्सम उपमा नही है अत यही उपमा दे रहा हू। कल्पतरु का ठीक तरह से उपयोग करने पर इससे मनवाछित फल प्राप्त होता हे, सुख प्राप्त होता है। इसी प्रकार जो परम सुख सदा के लिए मिल जाए, कभी समाप्त न हो ऐसे परम सुख को पाने के लिए सामायिक है।

जरा चितन करिये कि जिस सामायिक की साधना इतनी महत्वपूर्ण है, उसे आज आप लोग कितना समझ पाये हैं। सामायिक करते–कितने वर्ष हो गये– काफी वर्ष हो गये होगे, पर सामायिक का स्वरूप क्या है सामायिक की विधि क्या है, यह कुछ ख्याल मे आया? आपसे क्या कहू? आपका क्या अपराध है– आप उपालम्भ देने के योग्य नही है। आप जिज्ञासु है, आपके मन मे भावना रहती है कि हमे कोई बतावे, आपके पास इतना समय नही कि शास्त्रो का मक्खन निकाले– निचोड निकाले। सत सतीवर्ग का कर्तव्य हे कि मूल स्वरुप शास्त्रो मे कहा पर आया हुआ हे। यह आपको बतावे, यह आवश्यक भी है। हम आप पर यहा जोर डालते है कि सामायिक करो। आप कितने विनीत है कि इशारा या आदेश मानकर सामायिक कर लेते है। प्रतिक्रमण भी बहुत से भाई रोज करते है।

जो कुल चुस्त हे और जिनके मन मे लगन है वे ३२ दोष टालकर ४८ मिनिट के लिए सामायिक करते हे लेकिन वे भी बैठ गये– माला फेर ली, एक आध भजन गा लिया आंर ४८ मिनिट व्यतीत होने पर समझ लिया कि सामायिक आ गई। यह मानसिक सतुष्टि का कारण बना लेकिन इससे आगे बढना भी हे। आवश्यक ह।

विद्यालय मे विद्यार्थी पढने जाते हे, तो वहा जाने के लिए उनकी अलग पोशाक हाती हे उसका पहनना पडता हे। ओर स्कूल के जो नियम होते हे उनका पालन करना पडता हे। आजकल स्कूलो मे पढने का स्टेन्डर्ड वढ गया हे।

सामायिक-कल्पवृक्ष

हम आध्यात्मिक जीवन क विद्यार्थी ह– हमने आध्यात्मिक स्कूल मे प्रवेश लिया पोषाक पहन ली लकिन अध्ययन कितना कर रहे हैं यह मुख्य प्रश्न हे। आध्यात्मिक स्कूल म प्रवेश पाने वाले १०० वर्ष के भी हागे ११५ वर्ष की बहिन का मेन दखा है– इससे अधिक उम्र की भी मिल सकती ह– लेकिन ५०-६० वर्ष हो जाए तब तक क्या हम उसी कक्षा मे बेठे रहे या आगे बढे?

सामायिक कल्पवृक्ष की उपमावाली है उसका लाभ हमे मिला या नही? द्रव्य कल्पवृक्ष के नजदीक जाते ही सबसे पहले हमे ठडक मिलती हे फिर इष्ट फल मिलता है। उसी तरह आप सामायिक करन बठ तो सबसे पहले छाया मिलनी चाहिये। आप कहगे केसी छाया? छाया ता यहा हे ही लेकिन मे इस छाया के बारे म नही कह रहा हू– वसे तो आपके बडे घरो मे या पलेटो मे कूलर या एयर कन्डीशनर भी मिलगे लेकिन इतना सुख मिलने पर भी क्या शाति मिलती हे? बाहरी भोतिक शाति मिलने पर भी अदर की शाति नही मिल तो बाहरी शाति–शाति नही है। अदर हाय–हाय चल रही ह। रावण के पास कितनी सामग्री थी लेकिन उसको सुख की नीद नही आती थी।

आज सोचने की बात है आपको या आपकी सामायिक को कल्पतरु की उपमा तभी दे सकते है जब कि आपक पास आनवाला व्यक्ति शीतलता अनुभव करे उसकी मानसिक शाति मिले आप मुह से बोले या न बोले उसका यह अनुभव हो जाए और वह कहने लग कि एसी सामायिक हमे चाहिये।

सामायिक भूमिका शुद्धि आसन में समता

साधु जीवन मे ब्रह्मचर्य के लिए 9 बाड बताई है। उनमे तीसरी बाड यह बताई कि जिस आसन पर स्त्री बैठी हो उसी आसन पर अतर्मुहूर्त के पूर्व एक ब्रह्मचारी पुरुष बैठता है तो उसका मन विचलित हुए बिना नही रहता।

मैं आपको समझाने के लिए कह रहा हू। आसन चाहे सूत का हो या ऊनी हो, लेकिन पुरुष का आसन अलग हो और महिला का अलग हो। सामायिक साधना मे आप बैठते है तब तक ब्रह्मचारी है। सामायिक का पाठ उच्चारण करते है उसमे सावद्य योग से बचने का उल्लेख है। १८ पापो से बचना है उसमे हिसा, चोरी, झूठ, अब्रह्मचर्य और परिग्रह– इन सब का त्याग करते है। जिन उपकरणो को लेकर बैठते हैं वे भी निर्धारित होने चाहिए। आप घर मे सामायिक लेकर बैठे है और एक बहुत बडे तपस्वी महात्मा आ गये। आपका घर फरसना है– सामायिक मे आप उचित पदार्थों के हाथ लगा सकते है लेकिन आप उनको अपने घर का भोजन भी नही बहरा सकते, क्योकि आपने ४८ मिनिट के लिये घर की वस्तुओ का त्याग किया है। आपको हाथ फरसना है तो पहले घर के लोगो से आज्ञा लेनी होगी। क्योकि उस पर आपका अधिकार नही है। घर मे जितनी सपत्ति है उस पर भी आपका अधिकार नही है। ४८ मिनिट के लिये सबका त्याग हो गया। जब सबका त्याग हो गया तो उस समय तक के लिए आपकी पत्नी भी बहिन के समान है। यही नही उस समय आप समता मे स्थिर है– अपने–पराये के भेद से उपर है।

आसन मे घिसर–पिसर नही होना चाहिये– कभी बहिने या नौकर पुरुष का आसन महिला को और महिला का पुरुष को दे देते है, यह नही होना चाहिए। कपडे सामान्य होने चाहिये, उनमे पसीने की बदबू नही आनी चाहिये। आप कहेगे की महाराज इतना बन्धन लगाएगे तो हम सामायिक करना ही छोड देगे। मै आपको वस्तु स्वरुप समझा देता हूँ। जितना कर सके करे नही कर सके तो अपनी कमजोरी को समझे। कितु वस्तु स्थिति को समझ कर चले।

सामायिक-पोषाक में समता

सामायिक की पोषाक अलग रहनी चाहिये। आपके पास पोषाको की कमी नही होगी– आलमारियो मे कपडे सडते होगे। इसलिये सामायिक की पोषाक अलग रखना कठिन कार्य नही हें। अभी आप गृहस्थ हे। तीन करण तीन योग से साधु नही वने हें त्याग नही किया हे फिर भी आपके जीवन से भी अन्य लोग प्रभावित होने चाहिए। कितु आप के कपडे साधु जेसे नही होने चाहिए हमारे जसा चाल पट्टा नही होना चाहिये। इससे लोगो को भ्रम हो जाता हे कि साधु वेठे ह या गृहस्थ ह? भ्रमवश लोग मत्थएण वदामि कह देते हें। कोई अजनवी आवे

कपड़े साधु जैसे देखे और हाथ में घड़ी बंधी हुई देखे तो वह बाहर जा कर कहेगा कि इनके महाराज तो हाथ में घड़ी बांधते है। इस प्रकार आपकी पोषाक से यह भ्रांति हुई या नहीं? इसलिए सावधानी रखना चाहिए कि आपकी पोषाक से कोई भ्रांति उत्पन्न न हो।

पहले श्रावक एक लांगी धोती पहनते थे लेकिन आज कई लोगों को धोती बांधना भी नहीं आता। आसन धोती चद्दर और मुहपत्ति ये द्रव्य सामायिक के सूचक है। पुरुषों के ये उपकरण अलग होने चाहिये और महिलाओं के अलग होने चाहिये। कपड़े स्वच्छ होने चाहिये ताकि फूलन न आने पाये। उन पर आजकल हवा से फूलन जल्दी आ जाती है। ऐसे फूलन के कपड़े से जीवों की हिंसा होती है इसलिये विवेक रखना आवश्यक है। सामायिक में चर्बीयुक्त एवं फैशनेबल विकारोत्पादक वस्त्र नहीं होने चाहिये।

सामायिक स्थान में समता

अब दूसरी बात आती है क्षेत्र शुद्धि की– किसी स्थान पर बैठ कर सामायिक करनी चाहिये। पहले के श्रावकों के लिए स्वतंत्र पौषधशाला होती थी। शास्त्रों में उल्लेख है कि आनंदजी श्रावक शंखजी और पोखलीजी के घरों में पौषधशालाएं अलग थी जिसमें बैठ कर वे लोग आत्मा के पोषण के लिए सामायिक प्रतिक्रमण पौषध आदि करते थे। उनके पौषधशालाओं में ऊल–जलूल वस्तुएं नहीं होती थी सांसारिक पदार्थ नहीं होते थे। प्लेन भीते–दीवाले सामायिक के उपकरण और स्वाध्याय के लिए कुछ धार्मिक पुस्तके होती थी जो सामायिक की पुष्टि करने वाली होती थी– बाकी व्यर्थ की वस्तुएं नहीं होती थी क्योंकि उनका भी प्रभाव पड़ता है।

ध्यान उधर जाता है। हमने केवल एक दर्पण यहा रख छोडा है। भारतीय ने पूछा– "क्या उस दर्पण को नमस्कार करते हो?' उन्होने कहा "नही यहा बैठ कर चितन करते है कि जैसी इस दर्पण मे स्वच्छता है, इसमे दूसरे का प्रतिबिब गिरता है– हमारा मन इस दर्पण के समान ही स्वच्छ बन जाए। इस दृष्टि से इस धर्म स्थान् पर और कोई चीज नही रखते।

स्थान की दृष्टि से आपकी बडी–बडी हवेलिया है फ्लेट है। उनमे कई कमरे बने हुए होगे, मोटर गरेज भी होगे लेकिन क्या किसी फ्लेट मे सामायिक साधना के लिए कोई अलग स्वतत्र रुम कमरा है, ऐसे रुम तो होगे– जहा बैठ कर सासारिक कार्य करते है। वहा बैठकर आर्थिक चितन करते होगे– ऐसे स्थान अनेक तरह की सामग्रियो से भरे रहते है, वहा बाल बच्चो के विवाह करने की बाते करते है। वहा का वायुमडल भी ऐसा ही बना रहता है, परमाणु दूषित बन जाते है। कल्पना करिये आपको यह मालूम है कि अमुक स्थान वैश्या का स्थान है। आप वहा पर पहुचे, वह स्थान खाली है लेकिन वहा जाने पर आपके मन मे कैसी तरगे उठेगी। जो सवेदनशील व्यक्ति है उन पर प्रभाव पडे बिना नही रहता।

मै एक बार उदयपुर की जेल मे प्रवचन देने गया। जैसे ही मैने उस जेल की बिल्डिग मे प्रवेश किया वैसे ही मेरे मन मे एक अलग ही स्थिति का निर्माण हो गया। मैने चितन किया कि ऐसा क्यो हुआ! मै निर्णय पर पहुचा कि यह ऐसा ही स्थान है। जहा अधिकाश भयग्रस्त अथवा आपराधिक वृत्ति के लोग रहते हैं। अत जब हम सामायिक लेकर बैठे तो स्वच्छ, स्वतत्र कमरा हो। वहा पर अन्य किसी प्रकार की चर्चा नही होनी चाहिए।

सभी व्यक्ति अपने घर मे धर्मस्थान अलग नही बना सकते क्योकि सब की आर्थिक स्थिति एक सी नही होती। इसलिए धर्म साधना के लिए सार्वजनिक स्थान होते है। वही पर सामायिक, पौषध आदि होने चाहिये। लेकिन मैने कई स्थानो पर देखा है कि दानदाताओ की लिस्ट धर्मस्थानो पर लगी रहती है। जब पूछा जाता है ये क्यो लगाई है? तो वे कहते हैं कि सार्वजनिक धर्मस्थानो पर दानदाता का नाम लगा रहेगा तो दूसरे लोगो को प्रेरणा मिलेगी, कई लोग चाहेगे कि हमारा भी नाम दानदाताओ की लिस्ट मे आना चाहिये। उनका नाम हो गया, मेरा भी नाम होना चाहिये। किन्तु विचारणीय है कि नाम के लिए किया गया वह दान कितना लाभप्रद होगा?

यही नही आज धर्मस्थानो को ऐसा सजाया जाता है। जैसे कि विवाह के मण्डप हो। वहा आने वाला व्यक्ति भवन के सौदर्य को देखेगा, आत्मा के सौदर्य को नही। वहा आत्म साधना नही कर्म बधन की ही अधिक सभावना है।

धर्मस्थान बनाम परिग्रह स्थान

आज धर्मस्थानो पर क्या हो रहा है? धर्मस्थानो पर चंदा चिट्ठा करके वहां के वातावरण को परिग्रहमय बनाया जा रहा है। वहा संतो को भी ला कर बिठा देते है जहा बिजली की रोशनी होती है। धर्मस्थान पर छोटे से छोटे जीव की भी हिंसा नही होनी चाहिए। आप वहा सामायिक मे बैठे हैं बिजली जल रही है आपने पुस्तक हाथ मे ले ली– पढ रहे है– उसमे मन लग रहा है और अचानक बिजली चली गई आप का रस टूट गया– आपका मन कहेगा कि बिजली जल्दी से जल्दी आवे तो अच्छा। अब आप बताईये आपकी इस भावना मे पावर हाउस चालू करवाने के भाव आये या नही? और इस रूप मे क्या पावर हाउस के चलने पर तद्द्वारा चालित कल कारखाना आदि की क्रिया आपको लगेगी कि नही? आप सामायिक मे बैठे हैं– सामायिक मे सावद्य कर्म करे नही करावे नहीं मन से वचन से और काया से। यह सब चिंतन का विषय है। तो मै यह कह रहा था स्थान शुद्धि आवश्यक है।

कभी–कभी आप यह शिकायत करते है कि महाराज सामायिक मे बैठे है पर हमारा मन ठिकाने नही रहता– इतने वर्ष हो गये लाभ नही मिला किंतु मै कहता हूँ लाभ मिले कैसे आप विधि से सामायिक नही कर रहे है।

सामायिक साधना का उचित समय

क्षेत्र की स्थिति के अनुसार ही काल की स्थिति भी समझ लेनी चाहिए। सामायिक के लिए कौन–सा काल अच्छा है? वस सभी काल अच्छे है। किंतु आपको किस समय निश्चिंतता रहती है– मन मे उथल–पुथल नही रहे ऐसे समय का निर्णय होना चाहिए।

उत्तम रहता है क्योकि आप दिन भर काम करते रहते है मस्तिष्क का चपका घूमता रहता है। मन थक जाता है उस समय सामायिक लेते हो तो वहा नीद आएगी आलस्य आएगा। इसलिए उस समय सामायिक की आराधना ठीक तरह से नही होगी। जब व्यक्ति समय पर सोता है तो सारी नशे शात रहती है– सारी थकान ओर आलस्य दूर हो जाता है। इसलिये पिछली रात्रि का समय उत्तम है। न बाल वच्चे जग रहे है और न घर मे कोलाहल है उस समय आप साधना अच्छी तरह से कर सकते हे। वैसे समय नही मिलता है तो जब भी समय मिले उस समय करिये। लेकिन सही समय करिये। सही समय करनी है तो द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव की दृष्टि से भी ब्रह्ममुहूर्त महत्वपूर्ण है।

सामायिक में भाव शुद्धि : समता

भावो को स्थिर और पवित्र रखने के लिए आपके वातावरण की स्थिति अच्छी रहनी चाहिए। मान लीजिए धर्मस्थान मे उपयुक्त तीन द्रव्य क्षेत्र एव काल शुद्ध हे, किंतु भाव की दृष्टि से आप परिवार के लोगो के साथ बैठे है वहा सासारिक कार्यो की चर्चा हो रही है तो भाव ठीक नही रहेगे। 'वहा भावो मे समता नही विषमता बनी रहेगी। जबकि सामायिक समता साधना के लिये है।

वैसे ही सार्वजनिक धर्म स्थान केवल पौषध, सामायिक के लिए है वहा आप जानते हे, बहिने जाती हैं, वहा सामायिक लेकर बैठे है, तो गृहस्थाश्रम की वाते नही होनी चाहिए। यदि ऐसा होता है तो भाव शुद्ध नही रहता। जो बहिन धर्म स्थान मे जा कर कहे कि तुम्हारी छोकरी की शादी कहा हुई, वह ऐसा है, पडोसी वैसा हे वह वाई लडती है, वह भाई लडता है। यह सारी पचायत धर्म–स्थान पर होती हे तो भाव शुद्धि नही रहती।

भाव शुद्धि का यही उपाय हे कि साधना करने के लिए आनेवाला प्रत्येक भाई–वहिन धर्मस्थान मे प्रवेश करते ही मोनव्रत ले ले। मुझे ज्ञान चर्चा करनी है, ससार की कोई चर्चा नही करनी हे।

भगवान के समवसरण मे लोग पहुचते थे तब पाच अभिगम सूचित करते थे। भगवान के समवसरण मे एकेद्रिय जीव की भी हिसा नही करनी है, इसका ज्ञान उन लोगो को रहता था। राजा महाराजा श्रेणिक, कोणिक जैसे भी वहा पहुचते थ तो सचित्त का त्याग करते थे। सचित् अर्थात् जीवयुक्त पदार्थ– जेसे फूलमाला धारण किय हुए ह तो उसको उतार कर समवसरण के वाहर रख देते थ। इलायची सचित ह दूसरा को सगटा नही होना चाहिए। इसलिए उस भी नही ल जात थ। व यह जानत थ कि यह धर्म स्थान ह इधर–उधर हिलूगा तो माला आदि क एकन्द्रिय जीवा का कष्ट हागा। अत सचित का त्याग करते थ। अचित

के लिए विवेक रखते थे। वे अभिमान सूचक पोषाक पहनकर नही जाते थे क्योकि वे जानते थे कि यह नम्रता रखने का स्थान है श्रावक के आचार का सूचक है वे उत्तराशन लगाते थे। कई श्रावक मुहपत्ति बाधते थे। वे जानते थे कि यह अहिंसक स्थान है यहा खुले मुह बोलेगे तो असख्य जीव मरेगे। समवसरण मे प्रवेश करने से पहले निसीहि निसीहि कहते थे। इसका मतलब यह है कि मै अब ससार के कार्यो को छोडता हू, दो घडी भर के लिए धर्म स्थान मे प्रवेश करता हू। फिर आता है दृष्टि वदन। भगवान दृष्टि मे आये तो झुक गये और फिर विधिवत् वदन किया। समवसरण मे इस तरह से प्रवेश होता था।

विधिवत् वदन

तिक्खुत्ता के पाठ की विधि का भी विशेष अर्थ है। आप कैसे समझेंगे? पुस्तक मे अर्थ दिया है। लेकिन उसमे मस्तिष्क लगाना पडेगा। तिक्खुत्ता के पाठ के साथ कैसे वदन करेंगे इसकी भी ट्रेनिंग लीजिए। सत लोग कई बार देते भी है। विधिवत् वदन का गहरा महत्व है। इसमे मानसिक एव आध्यात्मिक लाभ तो है ही शारीरिक लाभ भी है। सीने के पास की नसे फेफडो मे खून सप्लाई करती है, विधिवत् वदन से उसमे ताजगी आती है। आप का उपयोग ऐसा रहना चाहिए कि हाथ के साथ मन घूमे। इस प्रकार तीन वक्त घुटने टिक जाए पाचो अग झुक जाए– यह सामान्य स्थिति का वदन है।

आज तो पाचो अग झुकाना तो दूर रहा सिर भी– पूरा नही झुकाते है। वदन का महत्व नही समझने के कारण ही ऐसा करते है। महत्व समझ लिया जाए तो स्वत विधिवत् वदन के भाव उत्पन्न होगे।

मान लीजिए आपको अमुक गाडी से कलकत्ता जाना है तो आप इस बात का ज्ञान करेगे कि कलकत्ता जानेवाली गाडी कितने बजे चलती है और उसमे बैठने के क्या–क्या नियम है क्या–क्या सावधानी बरतनी है– इस जानकारी के बाद कितने समय पहले स्टेशन पर जा कर खडे हो जायेगे? आध घटा या 15 मिनिट पहले चले जायेगे। वहा पहले जाने का महत्व समझते है। मैने सुना था राजकोट के बारे मे कि वहा के लोग समय के इतने पाबद थे कि प्रवचन से 5 मिनिट पहले सारा हाल खाली मिलता था और 5 मिनिट बाद सारा हॉल खचाखच भर जाता था। (यह आचार्य श्री जवाहरलाल जी महाराज साहब के समय की बात है। गुरु श्री को वहा जाने का आग्रह किया गया था लेकिन वे 25 दीक्षाओ के प्रसग से रतलाम चले गए।)

बडे अदब एव विधि के साथ तिक्खुत्ते के पाठ से वदन करेगे तो आलस्य हट जायेगा। बिना आलस्य हटाये सामायिक मे बैठ गये तो झपकी आयेगी। जंसा कि व्याख्यान के समय कुछ लोगो को आती है। कभी–कभी मे सावधान भी कर देता हू। वे पटेल के आसन से न बैठे जो कि सुस्ती के आसन हे सामायिक मे आसन का भी विवेक आवश्यक है। ऐसे आसन से बैठना चाहिए जिससे कि प्रमाद न आवे– निद्रादेवी आप पर अपना अधिकार न जमा लेवे।

हा, तो मैं कह रहा था– वदन विधिवत् होने से आलस्य दूर होगा। मन भी वदन के साथ सयुक्त होगा। एक बात का ध्यान रखे तिक्खुत्तो की पाटी के समान ही नमस्कार महामत्र का भी अपना महत्त्व है। उसका उच्चारण भी किस भाव विशुद्धि के साथ होना चाहिए। यह चितनीय है।

जैसा कि मैने कहा मन को वदन के साथ घुमावे। वैसे ही नमस्कार मत्र के उच्चारण के साथ–साथ भी मन को सयुक्त रक्खे। आप नमस्कार मत्र का उच्चारण 'न'' के साथ करते है या ण के साथ? शास्त्रकारो ने उच्चारण ''ण'' के साथ किया है– जैसे णमो अरिहताण, णमो सिद्धाण, णमो आयरियाण, णमो उवज्झायाण, णमो लोए सव्व साहूण। ये जो पाच नमस्कार मत्र है, ये सब पापो का नाश करने वाले है, अत श्रद्धा के साथ इसका उच्चारण शुद्ध रूप से किया जाए।

मैं जब उदयपुर मे था तब श्री दीपचद जी भूरा ने सध्या को प्रश्न किया कि हमे उच्चारण करते कितने ही वर्ष हो गये। क्या हमारे पापो का नाश हो गया? उस समय मै मौन व्रत मे था। मैने दूसरे दिन सुबह व्याख्यान मे कहा कि पाच पद तो बहुत है– एक पद के नमस्कार से भी सारे पाप नष्ट हो जायेगे।आवश्यकता है विधिवत् भावपूर्ण नमस्कार की।

सामायिक ले कर बैठे है। तिक्खुत्तो के पाठ के उच्चारण के साथ नवकार मत्र का उच्चारण आता है तब यह सोचे कि यह हमारे सारे पापो का नाश करनेवाला है। हम पापो का नाश करने के लिए बैठे हैं। कैसे नाश करना तो ''णमो अरिहताण'' का उच्चारण करते ही सोचे कि अरिहतो ने घातीकर्मो को क्षय किया तो मै भी घातीकर्मो का क्षय करने के लिए सामायिक मे बैठा हू। चार घातीकर्मो का नाश करने के बाद आगे के चार कर्मो का क्षय होगा। मुझे आठो कर्मो को क्षय करके सिद्ध बनना है।

यहा नमस्कार महामत्र एव तिक्खुत्तो का शब्दश अर्थ समझ लेना अधिक उपयुक्त होगा।

णमो अरिहताण।
णमो सिद्धाण।
णमो आयरियाण।
णमो उवज्झायाण।
णमो लोए सव्व साहूण।
णमो पच णमुक्कारो। सव्व पावप्पणासणो।
मगलाण च सव्वसि। पढम हवई मगलम।

णमो	नमस्कार हो
अरिहताण	श्री अरिहतो को
सिद्धाण	श्री सिद्धो को
आयरियाण	श्री आचार्यों को
उवज्झायाण	श्री उपाध्यायो को
लोए सव्व साहूण	लोक मे विद्यमान सब साधुओ को
एसो	इस प्रकार यह
पच णमुक्कारो	पाच पदो को नमस्कार
सव्व	समस्त
पावप्पणासणो	पापो का विनाशक है
च	और
मगलाण सव्वसि	सब मगलो मे
पढम	प्रथम
मगलम	मगल
हवइ	है

देवय	धर्म देव
चेइय	ज्ञानवत या चित्त को प्रसन्न करने वाले (एसे आपको)
पज्जुवासामि	उपासना करता हू
मत्थएण	मस्तक झुका कर
वदामि	नमस्कार करता हू

यह द्रव्य क्षेत्र, काल आर भाव की दृष्टि से सामायिक सबधी कुछ चर्चा की गई हे। इरियावहिय के पाठ से शुद्धिकरण करा करते हैं। यह भी आपको समझाना हे। इसका अर्थ समझान मे काफी समय लगेगा। इसका अर्थ कुछ विस्तृत समझाना पडेगा। केवल तोता रटन्त से कोई अर्थ सिद्ध नही होगा।

एक व्यक्ति ने तोता पाल रखा था। उस तोते को रटाया कि बिल्ली आवे तो बचते रहना। मालिक ने तोते का पिंजरे से बाहर निकाला– मालिक ने निश्चित हो कर समझ लिया कि तोता होशियार हे। इसने रट लिया ह। अत बिल्ली से बचता रहेगा। मालिक अपने काम मे लग गया ओर उधर बिल्ली ने आ कर तोते को पकड लिया। तोता चू चू करने लगा। वह समझ नही पाया कि बिल्ली क्या है और बचना क्या हे। वेसे ही सामायिक के पाठो का केवल तोता रटन से काम चलने वाला नही है। कही–कही तोता रटन भी आवश्यक हे। किंतु साथ मे समझ भी आवश्यक हे।

इसके साथ–साथ– 'इरियावहिय' क्या है। सामायिक की भूमिका कहा चालू होगी आदि विषयो को खुल कर समझना होगा। वर्तमान की स्थिति क्या हे भूतकाल की स्थिति कैसी थी– यह सब समझाना हे। इसे समय पर ही आपके समक्ष रक्खा जा सकेगा। अभी तो इतना ही स्मरण रक्खे कि सामायिक साधना के पूर्व भी हमारी समता भावना का सृजन होता चला जाए। आज इतना ही

दिनाक १४-७-८४
बोरीवली बबई

४. सामायिक साधना-ईर्यापथ शुद्धि (१)

वीतराग वाणी श्रोता और वक्ता

उपकृति के महा समुद्र प्रभु महावीर न भव्यजनो क उपकार क लिए कितनी उत्कृष्ट कृपा की हे उन्होने अपनी अतर की अनुभूति का उपदश दिया। यद्यपि उपदेश देना आत्म कल्याण क लिए आत्म शुद्धि के लिए माना गया ह निर्जरा का हेतु माना गया हे। पाच स्वाध्यायो मे धर्मकथा उपदेश का भी विवेचन है। पर जिन आत्माओ को– साधको को अपनी आत्म शुद्धि करना अभिष्ट ह– जो आत्म शुद्धि करना चाहते ह जो अभी परिपूर्ण ज्ञानी नही बने ह व कृतकृत्य अवस्था को प्राप्त करने के लिए उपदेश दे यह एक सामान्य बात ह। किंतु जो कृतकृत्य हो चुके जिन्हे केवल ज्ञान प्राप्त हो गया। व उपदश द या न द उनकी साधना म कोई अन्तर पडने वाला नही ह। तथापि व उपदेश दते ह– यह महान उपकृति का कार्य है। तीर्थकर प्रभु की देशना मुख्यतया पर कल्याण स अनुप्रेरित होती है। जो सत महात्मा भगवान की वाणी क सहारे उपदेश करते ह व भी लाभोपकारी होते ह। प्रभु की वाणी के साथ दिया जानवाला उपदेश जिस विधि से देना चाहिए उस विधि से देते ह तो व उपदश अवश्य निर्जरा करते ह– आत्म शुद्धि करत ह। विधि से दिये जाने का तात्पर्य ह वीतराग देव की वाणी का उपयोग पूर्वक शुद्ध उच्चारण करे और साथ ही साथ मूल आगमपाठ को सम्मुख रख कर उसके अर्थ का विवेचन करे। मूल आगम सूत्रों की व्याख्या करते हुए उसे जन ग्राह्य बनाया जाय। दृष्टात भी कुछ ऐसे दिये जाये जिनसे श्रोता अच्छी तरह से ग्रहण करके आत्म शुद्धि म प्रवृत्त हो सके।

सोचना चाहिए कि मै क्या व्याख्या करता हू बडे–बडे गणधरो ने किस प्रकार व्याख्या की है। मै उनकी तुलना मे कुछ नही हू। मुझे व्याख्यान देना है, श्रोता सुने न सुने। कदाचित् श्रोतागण एकाग्रचित हो कर नही सुनते है तो उनकी आत्मशुद्धि मे कमी रहेगी। निर्जरा कम होगी, मेरी तो आत्म शुद्धि होगी ही।

इसी प्रकर श्रोता यह समझे कि मैं कितना सौभाग्यशाली हू कि जो प्रभु महावीर ने गणधरो, राजा महाराजाओ और विद्वानो की परिषद के समक्ष उपदेश दिया, वही उपदेश मुझे सुनने को मिल रहा है। मैं कितना पुण्यशाली हू– कि वीतरागवाणी का उपदेश मिल रहा है इस श्रद्धा के साथ सुने। यह नही कि महाराज की परीक्षा ले रहा हो।

श्रोता व्याख्यान स्थल पर पहुचने के बाद सामायिक लेकर बैठे यदि वह न बने तो सवर कर ले तो व्यर्थ का पाप रूक जाता है। सवर करने मे कष्ट नही होता। उसका एक छोटा–सा प्रतिज्ञा सूत्र है। यदि वह नही आए तो पाच नवकारमत्र पढ कर बैठे और मन मे सकल्प कर ले कि मै जब तक व्याख्यान मे हू तब तक मेरे सब पापो का त्याग है। ऐसा कर ले तब तो सोने मे सुहागा आ जाए और आत्मशुद्धि का मार्ग प्रशस्त हो जाए। मै कह रहा था कि जो श्रोता और वक्ता दोनो श्रद्धान्वित हो तल्लीन हो जाते है उनके लिए आत्मशुद्धि अवश्यमेव है।

निष्काम वक्ता

भगवान महावीर ने केवल ज्ञान प्राप्त कर लिया, उनके लिए आत्मशुद्धि का प्रश्न नही रहा। केवलज्ञान से पहले साधक तप करता है। लेकिन तीर्थकर देव केवलज्ञान के बाद तप नही करते। वे व्याख्यान भी आत्म शुद्धि के लिए नही देते क्योकि उनकी आत्म शुद्धि तो हो गई, वे कृतकृत्य हो गये। प्रश्न हो सकता है फिर वे उपदेश क्यो देते है? समाधान है जनता के हित के लिए उपदेश देते है। स्वय प्रभु ने अपने उपदेश का प्रयोजन बताया हे– "सव्व जग जीव रक्षण दयट्ठ याए पावयण भगवया सुकहिय।' अर्थात् ससार के समस्त जीवो की रक्षा रूप दया के लिये प्रभु उपदेश देते हें वह उपदेश हमारे लिए महत्वपूर्ण हे। मे उपदेश की पद्धति के विषय मे कुछ कह रहा था।

साधना और फलेच्छा

उपदेश देने का अर्थ हे विवेकवान प्राणी आत्मा पर लगे हुए कर्मो को हटाने का प्रयास करे। आत्मा पर आठ प्रकार के कर्म लगे हुए हे ओर वे कर्म समय–समय पर आत्मा को तग करते ह, कष्ट देते हे। उसको आर्थिक दृष्टि से वाधा पहुचाते हे। मनुष्य चाहता हे कि मे व्यापार करू, अधिक से अधिक फल मिल जाए। लेकिन इच्छानुकूल फल नही मिलता। व्यक्ति सोचता हे कि क्या कारण ह कि साधना का इच्छित फल नही मिल रहा हे?

उसकी दृष्टि पडोसी की तरफ जाती है। शायद पडोसी ने कुछ कर दिया है इसलिए फल नहीं मिल रहा है। कभी उसकी दृष्टि ग्रह गोचर पर जाती है। वह कभी सोचता है भाग्य ऐसा ही है इसलिए फल नहीं मिलता। भाग्य क्या है यह समय आने पर समझाया जा सकेगा। अभी तो इतना ही समझे कि जो पूर्व जन्म में कर्म किये हैं। वे भाग्य की संज्ञा प्राप्त करते हैं। वे अंतराय कर्म ही बाधक हो जाते हैं। इन कर्मों को हटाने के लिए साधना है। किंतु संसार का सुख मिला कि आप साधना भूल जाते हैं।

किसान खेती करता है। अन्न उत्पन्न करने के लिए और साथ में भूसा घासफूस अपने आप तैयार हो जाता है। वैसे ही जो व्यक्ति आत्म शुद्धि करण के लिए साधना करता है उसके पीछे संसार का वैभव छाया की तरह आता है। जिस समय सूर्य पीठ की तरफ है उस समय छाया को पकड़ने की कोशिश करोगे तो वह आगे भागेगी। प्रातःकाल पश्चिम की तरफ पीठ और पूर्व की तरफ मुंह करोगे कि मुझे छाया नहीं प्रकाश चाहिए और प्रकाश पाने के लिए जाओगे तो छाया का क्या हाल होगा? वह पीछे-पीछे भागती हुई आयेगी। वैसे ही आप आत्म शुद्धि के सन्मुख हो जाएं तो ये संसार के वैभव सब [illegible] छाया की तरह पीछे-पीछे भागेंगे।

लेकिन मनुष्य संसार के वैभव के लिए धर्म साधना करता है तो उसका [illegible] में नजर नहीं आयेगा। साधना का मूल उद्देश्य है। आत्म शुद्धि [illegible] के लिए शाश्वत आनंद की प्राप्ति सामायिक साधना इसकी आधारशिला [illegible] है।

सामायिक-साधना का शिलान्यास

के लिए समय निकाल लेते है कितु सामायिक की विधि की जानकारी के अभाव मे बिना विधि किये ही सतो के पास आ कर कहते है– महाराज सामायिक पचका दे। कितु आप सामायिक की विधि सीखे। विधि से सामायिक करना कितना महत्वपूर्ण है यह समझने का विषय हे।

सामायिक प्रारभ करने की विधि मे धर्म स्थान मे कैसे पहुचे इसका कुछ उल्लेख किया जा चुका है। जब धर्म स्थान मे प्रवेश करते है तो किसी से खुले मुह बात नही करे। धर्म स्थान मे आप पाप टालने के लिए आये है। कितु खुले मुह बोलने का पाप लग जाता है। धर्म स्थान मे आना सोने की थाली के समान है। लेकिन खुले मुह बोलने से उस सोने की थाली मे ताबे की मेख लग जाती है। मुह पर कपडा हो। मुहपत्ति हो या जेबी रूमाल को भी तिरछा करके बाधा जा सकता है यह भी धर्म के कार्य मे उपयोगी बन सकता हे और यह कितना सहज है।

समय का मूल्य नही समझ कर धर्म स्थान मे उसका दुरुपयोग करना भी एक प्रकार की हिसा है। अत धर्म स्थान मे आपका एक क्षण भी व्यर्थ नही जावे। आप यहा पर मनोरजन करने के लिए अथवा नीद लेने के लिए नही आये हैं। यहा आकर नीद लेगे तो क्या होगा? आप आत्म उपासना नही कर पायेगे। किसी–किसी के चेहरे पर सुस्ती देख कर मैं सोचता हू। कुछ तो मेरे शब्द ऐसे क्लिष्ट है जो आपको अभ्यास नही होने के कारण समझ मे नही आते होगे। कितु यदि आप ध्यान से सुनेगे तो कुछ समझ मे आयेगा। आपकी सुस्ती उड जायेगी। आजकल आमतौर पर स्कूल मे अध्यापक क्या करते है? अपनी ड्यूटी बजा कर चले जाते है। विद्यार्थी पढे या नही पढे, उन्हे इससे कोई सरोकार नही। क्या मै भी इसी मे इतिश्री समझ लू कि आपको धर्म की कुछ चर्चा सुना दू? नही हमे इससे आगे बढना होगा।

सामायिक मूल पाठों के सदर्भ में

सामायिक की विधि की बात करते है तो सर्वप्रथम इरियावही का पाठ आता है। आप इसके एक–एक शब्द का अर्थ समझे और उस पर चितन करे कि प्रभु ने पाप प्रवृतियो से मुक्त होने के लिए कितनी गहरी प्रक्रियाए बताई है।

आलोचना सूत्र

भगव	–	हे भगवन्!
इच्छाकारेण	–	इच्छा पूर्वक
सदिसह	–	आज्ञा दीजिये

इरियावहिय	–	इयापथिकी–गमनागमन क्रिया का
पडिक्कमामि	–	प्रतिक्रमण करू
इच्छ	–	आज्ञा प्रमाण है
इच्छामि	–	चाहता हू
पडिक्कमिउ	–	निवृत होने का
इरियावहियाए	–	इयापथ सबधी
विराहणाए	–	विराधना स
गमणागमणे	–	जाने व आने मे
पाणक्कमणे	–	किसी प्राणी को दबने स
बीयक्कमणे	–	बीज के दबने स
हरियक्कमणे	–	हरी वनस्पति के दबने स
ओसा	–	ओस
उतिग	–	कीडिया के बिल
पणग	–	पाच रग की काई
दग	–	सचित जल
मट्टी	–	सचित मिट्टी
मक्कडा–सताणा	–	मकडी के जाल–इनको
सकमणे	–	कुचल जाने स
जे	–	जो
मे	–	मने
जीवा	–	जीवो की
विराहिया	–	विराधना की हो (पीडा पहुचाना)

लेसिया	–	मसले हो
सघाइया	–	इकट्ठे किये हो
सघट्टिया	–	गाढ छुए हो
परियाविया	–	परितापना (पीडा) पहुचायी हो
किलामिया	–	थकाये हो–कष्ट पहुचाये हो
उद्दविया	–	हेरान किये हो
ठाणाओ	–	एक स्थान से
ठाण	–	दूसरे स्थान पर
सकामिया	–	दुर्भावना से रखे हो
जीवियाओ	–	जीवन से
ववरोविया	–	रहित किये हो
तस्स	–	उसका
दुक्कड	–	दुष्कृत–पाप
मि	–	मेरे लिए
मिच्छा	–	निष्फल हो

इन पाठ मे कहा गया है– भगवन् आपकी आज्ञा चाहता हू। यद्यपि तीर्थंकर भगवान यहा नही है, मोक्ष पधार गये है। वैसे महाविदेह क्षेत्र मे बीस विहरमान तीर्थंकर है। आप आज्ञा किन से लेते है? गुरु महाराज से। गुरु महाराज भी यहा नही है। 'सदिसह भगवन्', शब्द सूचना करता है कि धर्म स्थान मे यदि सत सतिया वहा विराजते है तो वे भगवान के सिद्धात का प्रतिपादन करने वाले है। अत उनके लिए भगवन् शब्द का प्रयोग हो सकता है।

भगवन् शब्द एक दृष्टि

कभी–कभी लोग चौक जाते हैं कि भगवन् शब्द का प्रयोग कैसे कर दिया, क्या यहा भगवान आ गये? कितु विचारणीय है कि किसी पुरुष का नाम महावीर रख दिया तो नाम रखने से क्या वह महावीर हो गया? वास्तव मे भगवन् शब्द ऐश्वर्यशाली के अर्थ मे भी प्रयुक्त होता है। भगवन् शब्द से हमे सीधा परमात्मा वाचक अर्थ नही ले लेना चाहिए। आगमो मे मुनियो स्थविरो के लिए भी भगवन् शब्द का प्रयोग अनेक स्थलो पर उपलब्ध होता है। जैसे–तेहि अणगार भगवतेहि तेहि तेहि भगवतेहि आदि। 'इस अर्थ मे भगवन् कहना एक सभ्य सबोधन है।' इसीलिए इच्छाकारेण पाठ मे भागतभगव शब्द से भगवान सामने नही है तो साधु–सत जो भी वहा पर है उन्हे उनके प्रतिनिधि मानकर उनसे आज्ञा

लेसिया	–	मसले हो
सघाइया	–	इकट्ठे किये हो
सघट्टिया	–	गाढ छुए हो
परियाविया	–	परितापना (पीडा) पहुचायी हो
किलामिया	–	थकाये हो–कष्ट पहुचाये हो
उद्दविया	–	हेरान किये हो
ठाणाओ	–	एक स्थान से
ठाण	–	दूसरे स्थान पर
सकामिया	–	दुर्भावना से रखे हो
जीवियाओ	–	जीवन से
ववरोविया	–	रहित किये हो
तस्स	–	उसका
दुक्कड	–	दुष्कृत–पाप
मि	–	मेरे लिए
मिच्छा	–	निष्फल हो

इन पाठ मे कहा गया है– भगवन् आपकी आज्ञा चाहता हू। यद्यपि तीर्थंकर भगवान यहा नही है, मोक्ष पधार गये है। वैसे महाविदेह क्षेत्र मे बीस विहरमान तीर्थंकर है। आप आज्ञा किन से लेते है? गुरु महाराज से। गुरु महाराज भी यहा नही है। 'सदिसह भगवन्', शब्द सूचना करता है कि धर्म स्थान मे यदि सत सतिया वहा विराजते है तो वे भगवान के सिद्धात का प्रतिपादन करने वाले हैं। अत उनके लिए भगवन् शब्द का प्रयोग हो सकता है।

भगवन् शब्द एक दृष्टि :

कभी–कभी लोग चौक जाते हैं कि भगवन् शब्द का प्रयोग कैसे कर दिया, क्या यहा भगवान आ गये? कितु विचारणीय है कि किसी पुरुष का नाम महावीर रख दिया तो नाम रखने से क्या वह महावीर हो गया? वास्तव मे भगवन् शब्द ऐश्वर्यशाली के अर्थ मे भी प्रयुक्त होता है। भगवन् शब्द से हमे सीधा परमात्मा वाचक अर्थ नही ले लेना चाहिए। आगमो मे मुनियो स्थविरो के लिए भी भगवन् शब्द का प्रयोग अनेक स्थलो पर उपलब्ध होता है। जैसे–तेहि अणगार भगवतेहि तेहि तेहि भगवतेहि आदि। "इस अर्थ मे भगवन् कहना, एक सभ्य सबोधन है।' इसीलिए इच्छाकारेण पाठ मे भागतभगव शब्द से भगवान सामने नही है तो साधु–सत जो भी वहा पर हैं उन्हे उनके प्रतिनिधि मानकर उनसे आज्ञा

लनी चाहिए। जिन श्रावको को विधि की जानकारी नही हे वे पहले उत्तर दिशा या पूर्व दिशा मे आकर वदन करते हे– जब उनसे पूछा जाता हे कि उधर क्या ह? तो वे कहते हे कि श्री मदिर स्वामी उधर विराज रहे हे। इसलिए उधर मुह करके वदन कर रहे हे।

यहा यह विचारणीय हे कि ऋषभ देव ओर महावीर भगवन् के शासन की पद्धति लगभग एक हे ओर बीच के जो २२ तीर्थंकर हैं उनकी पद्धति महाविदेह क्षेत्र की तरह हे। पहले ओर अतिम तीर्थंकर वहा रहते नही फिर महाविदेह क्षेत्र मे रहनेवाले भगवान से आज्ञा लेते हे यह कहा तक सगत हे?

कल्पना करिये कि आप महाराष्ट्र मे रहते है, यहा के मुख्यमत्री से आज्ञा नही लेते हे ओर आज्ञा लेते ह मध्य प्रदेश के मुख्यमत्री से तो क्या यह उचित है? आज्ञा लेनी हे तो पहले महाराष्ट्र के मुख्यमत्री या सबधित अधिकारी से लेनी चाहिए क्योकि यहा का कार्य महाराष्ट्र के मुख्यमत्री अथवा अधिकारी से सबधित ह न कि मध्यप्रदेश के अधिकारियो से इसलिए महाविहद क्षेत्र के तीर्थंकर अलग ह। आज्ञा लेनी हे तो भरत क्षेत्र मे रहने वालो से आज्ञा ले न कि श्री मदिर स्वामी से। इस विषय मे भीनासर सम्मेलन मे भी सर्व सम्मति से स्वीकार किया गया है कि सिघाडे के मुख्य साधु को प्रतिक्रमण के समय आचार्य श्री की आज्ञा लेनी चाहिए। ओर आचार्य श्री शासन पति श्रमण भगवान महावीर की लेवे।

तीर्थंकरों का उत्तराधिकार

यद्यपि भगवान आज यहा पर विराजमान नही ह। तथापि जिसको वे अधिकार सोप कर जाते ह। उन्ही को प्रतिनिधित्व मिलता हे। जेसे राष्ट्रपति का पद खाली नही रहता वे कही जाते ह तो किसी को अपने स्थान पर बिठा कर जाते ह।

इसी तरह भगवान् मोक्ष म पधारते ह तो अपना प्रतिनिधित्व किस को सोप कर जाते ह। भगवान् महावीर न सुधर्मा स्वामी को अपना अधिकार सोपा था ओर कहा था कि मेरा पूरा अधिकार तुम्हे सोपता हू चतुर्विध सघ की रक्षा करना। आगे देखना तुम्हारे जिम्मे ह। केवली भगवन किसी का उत्तदायित्व नही लेते ह। इसलिए गोतम स्वामी न उत्तरदायित्व नही लिया। क्योकि महावीर के निर्वाण के बाद ही उन्हे केवल ज्ञान हो गया था। तीसरे पद का उत्तरदायित्व मिलता ह। भगवान महावीर न सुधर्मा स्वामी को उत्तरदायित्व सोपा। इस विषय का [illegible] ग्रथ म स्पष्ट उल्लेख है कि– तित्थाहिया सुहम्मो [illegible]। [illegible] अग्गिपन्नाणण।

[illegible] स्वय प्रभु महावीर [illegible]

कर्मा अग्निवेश्यायन गोत्रीय सुधर्मा को तीर्थधिपति (आचार्य) पद पर प्रतिष्ठित किया। इसी प्रकार 'वीरवशपटटावली' मै भी सुस्पष्ट उल्लेख मिलता हे कि भगवान महावीर ने आर्य सुधर्मा को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया

भवियजणे पडिबोहिय बावत्तरि पालिउण वरिसाई।
सोहम्म गणहरस्सय, पट्ट दाऊ सिव पत्तो।।

सुधर्मा स्वामी को केवल ज्ञान हो गया तो वे अपना अधिकार जम्बू स्वामी को सभला गये। जम्बू स्वामी ने प्रभव स्वामी को सभलाया। इस प्रकार यह आचार्यो की अनवरत चली आ रही परम्परा है। विधिवत जो आचार्य है वे प्रतितिधि के रुप मे होते है। वे जिस दिशा मे विचरते है उस दिशा की ओर मुह करके सत सतियो को आज्ञा लेने चाहिए और श्रावक–श्राविकाओ को सत–सतियो से। लेकिन यदि वहा पर कोई साधु या साध्वी विराजमान नही हो तो जिधर शासन नायक विचर रहे हो उधर मुह करके उनसे आज्ञा लेने का विधान है। इसीलिए इरियावहिया के पाठ मे कहा गया है–

"इच्छाकारेण सदिसह भगवन्
इरियावहिय पडिक्कमामि"

हे भगवान् मै सामायिक के पूर्व की विशुद्धि मे प्रवेश करना चाहता हू।

सामायिक-कल्पवृक्ष

सामायिक साधना कल्पवृक्ष से अधिक महत्वपूर्ण है। विधि से करेगे तो इच्छित फल मिलेगा। आम का वृक्ष लगाया जाता है। उसका विधिवत् सिचन किया जाता है, तभी आम का फल मिल सकता है। इसी प्रकार सामायिक साधना भी विधिपूर्वक करनी चाहिए।

कल एक प्रश्न आया था कि मनवाछित कामना पूरी करने वाला कल्पवृक्ष आज कहा है? कितु ऐसे कल्पवृक्ष को कही बाहर खोजे, वह आपके पास है– और वह सामायिक की विधिवत् साधना ही है।

भाव सामायिक-जम्बूकुमार की

जम्बूकुमार का नाम आपने सुना होगा। उनका आठ कन्याओ के साथ विवाह हो चुका है– विवाह के बाद प्रथम रात्रि मे पलग पर बैठा है– उसकी आठो पत्निया उसको घेर कर बैठी है। जितना श्रृगार उनको सजाना चाहिए था उतना सजाये हुए है। देव कन्याओ सा सौन्दर्य लिये मे खडी हैं और सभी जम्बूकुमार को आकर्षित कर रही हैं। लेकिन जम्बूकुमार के मन मे भाव सामायिक –साधना का विधिवत् स्वरुप आ चुका था। तब तक वह साधु नही बना था सुधर्मा स्वामी का एक ही उपदेश उसने सुना था। जो उसके मन को आदोलित कर चुका था।

देवकन्याओ तुल्य आठ नवपरीणता नारिया उसको आकर्षित करने के लिए खडी थी। लकिन वह भी कितना विशिष्ट पुरुष था भोग क सर्वोत्तम साधनो की उपलब्धि के समय अपनी अप्सरा तुल्य पत्नियो के समक्ष समता योग–साधना की चर्चा कर रहा ह। चर्चा ही नही। उन्हे भी ससार से विरक्ति का सदेश दे रहा है।

आचार्य श्री गणेशीलाल जी महाराज साहब फरमाया करते थे कि विद्वान वाद–विवाद करते हैं तो वाणी से लडते ह मूर्ख हाथो से लडते हैं और कुत्ते लडते ह दातो से। तो कहने का तात्पर्य यह है कि उसने कोई लडाई नही की वह समभाव मे था। मोह का प्रसग विषम भाव ह। एक व्यक्ति के पीछे मोहभाव पैदा हो जाता है। चाहे वह पत्नी लूली लगडी ही क्यो न हो। लेकिन इतनी दुखदाई हो जाती है आर पति को इतना नियत्रित कर लती है कि वह अपन माता–पिता से लडने को तैयार हो जाता है। यह विषम स्थिति है।

इस विषम स्थिति से ऊपर उठा हुआ जम्बूकुमार विवाह की प्रथम रात्रि मे देवकन्याआ तुल्य अपनी आठ पत्नियो के साथ शयनकक्ष मे वैठा हुआ था। उधर उसी रात्रि मे पाच सा चोर आये और उन्होने जम्बूकुमार के घर का सारा सामान दहज मे आये सामान सहित गाठो मे बाध लिया आर सिर पर उठाकर वे पाच सो चोर चलने को तेयार हुए। सरदार का हुक्म हुआ कि चलो। लेकिन उन सबके पेर नही उठते ह– सबके पेर चिपक गये। चोरा का सरदार सोचता हे कि मैंने इतनी चोरिया की किन्तु आज तक कोई हाथ पर चिपकान वाला नही मिला। आज मरी अवस्वापिनी विद्या क्या नही काम कर सकी? मे दो विद्याए जानता हू। एक तो ताले खोलना की दूसरी विधि से पानी छिडकता हूँ तो जागने वाल सब सो जाते है। आज एसा कान–सा व्यक्ति आया। जिस पर मेरे द्वारा छीटे गये पानी का असर नही हो रहा है।

जो सच्चे भाव स सामायिक साधना विधिवत करता ह उस पर किसी का असर नही होता। इसीलिए चारा क सरदार द्वारा छीट डालन का असर उन पर नही हुआ।

बहुत बडा जानकार मालूम होता है। इसी ने मेरे साथियो के पेर चिपकाये है। मे इससे जीत नही सकता। मुझे इसके चरणो मे समर्पित हो जाना चाहिए।

ऐसा सोच कर वह आगे बढा और जम्बूकुमार को साष्टाग प्रणाम किया। जम्बूकुमार की पत्नियो ने देखा कि कोई पुरुष आया हे। इसलिए वे वहा से अलग हट गई। चोरो का सरदार प्रणाम करके उठा ओर कहने लगा कि महापुरुष, तुम जीते मे हारा। मै तुम्हारा धन नही ले जाऊगा। मे यह सारा धन यही पर छोडता हू और इसके अतिरिक्त मैने आज तक जितनी चोरिया की है उन सबके इकटठा किया हुआ धन दो गुफाओ मे छिपा रखा हे वह भी आपको सौप देता हू। मेरे पास जो दो विद्याए है– ताले खोलने की और सबको नीद मे सुलाने की। ये दोनो विद्याए भी मै तुम्हे देता हू पर तुम मुझे पैर चिपकाने की विद्या सिखा दो।'

जम्बूकुमार कहने लगा "मै न तो दुनिया के ताले खोलना चाहता हू ओर न दुनिया की नीद उडाना चाहता हू। मुझे नीद मे सुलाने की ओर ताले तोडने की विद्या नही चाहिए।"

चोरो का सरदार फिर कहता है कि सारा धन ले लो लेकिन पैर चिपकाने की विद्या मुझे बता दो।

जम्बूकुमार ने कहा मैने किसी विद्या का प्रयोग नही किया है और न मैं कोई ऐसी विद्या जानता हू– न मैने किसी तरह के मत्र का प्रयोग किया है।

चोरो का सरदार कहने लगा कि फिर हमारे पैर कैसे चिपके?

जम्बूकुमार ने कहा कि मेरे मन मे इतनी भावना जरुर आई थी– जब तुम्हारे साथी सामान बाध रहे थे, तब आवाज आई थी, उससे मै समझ गया था कि कोई धन इकट्ठा कर रहा है। मैने सोचा कि मेरा धन चाहे कोई भी ले जावे, मेरे लिए यह मिट्टी के समान है– कल तो मै सयम लेने वाला हू। मै चाह रहा था कि आज की रात्रि मे धन चोरी न हो। कल यह धन कही जाए मुझे कोई ऐतराज नही है, क्योकि लोग समझेगे कि आठ तरुणियो को वर कर लाया है लेकिन क्या करे, बेचारा, इसका सारा धन चोरी चला गया है इसलिए साधु बन गया है।" इतनी सी भावना मेरे मन मे आई थी कि आज की रात्रि मे चोरी न हो।

चोरो के सरदार ने कहा कि इतनी सी कामना से हमारे हाथ पाव चिपक गये– अब हमे आपका धन नही चाहिए। आपकी दिव्य शाति के आगे मे पराभूत हो गया हू। अब हम सभी आप का ही अनुसरण करेगे।

बधुओ, यह मनोभावना की सिद्धि है, कल्पतरु का सार है। इतनी सी इच्छा ने, कि आज की रात्रि मे धन नही जाए, चोरो के पैर चिपका दिये। ऐसी सिद्धिया कहा से मिलती है। हमारे पास कल्पतरु आशापूर्ण करने वाला है। यदि

हम बिना उपयोग के देखना चाहे तो देख नही सकते यदि आप उपयोग के साथ वस्तु ढूढेगे तो मिल जायगी। हमारी सामायिक कल्पतरु है। मनवाच्छित इच्छा की पूर्ति करने वाली है लेकिन कब? विधि के साथ चलेगे तब।

सामायिक बनाम समता

सामायिक के पाठ का आगे का प्रारुप समय पर ही बताया जा सकेगा। अभी तो मै यही कहना चाह रहा हू कि सामायिक की साधना ही समता की साधना है।

सब रुपो मे मगल कारिणी यह समता ही जग मे सार रुप है– आप चाहे इस कान से सुनिये या उस कान से आज सुनिये चाहे कल सुनिये– जिस रोज आपको अपनी जीवन मगल मय बनाना होगा समग्र सुख को पाने की अभीप्सा होगी उस रोज इस समता देवी को वरना ही होगा। आज दुनिया इस समता देवी को नही एक सामान्य नारी का वरण कर प्रफुल्लित हो जाती है। थोडा–सा जवानी मे प्रवेश हुआ नही कि उसकी भावना दौडती है कि मेरी शादी हो जाए।

बधुओ आप जिस शादी की कामना करते है उससे सुख मिलता है या दु ख? जरा कलेजे पर हाथ रख कर विचार करे– शायद आप नही बोलेगे। जिन्होने शादी नही की वे उमग मे जी रहे है। किंतु जिन्होने शादी कर ली वे इसका परिणाम भोगते हुए कभी कोई मेरे सामने आकर रोने लगते है। मै पूछता हू कि क्यो रोते हो? तो कहते है महाराज क्या करु मेरी समझ मे नही आ रहा है मेरा जीवन ऐसा बिगड गया कि साप छछुदर की गति बन गई है। मै कहता हू, पहले से ही सोच समझ कर काम करते। भग पीना हाथ की बात है लेकिन उसकी लहर गिराना हाथ की बात नही है। आपने कुछ सुखी व्यक्ति देखे होगे लेकिन अधिकाश की क्या दशा होती है यह आप जानते है।

प्रत्येक व्यक्ति धन वैभव के पीछे दौडता है लेकिन धन वैभव मिल जाने पर भी उसके मन मे शाति नही है। शाति मिले कैसे? इस सबध मे एक रुपक दिया है।

की आयु पाई है। १० वर्ष की मेरी आयु होती तो इतने समय तक वजन नही ढोना पडता।

कुत्ता कहने लगा कि मेरी आयु भी बहुत हे। दरवाजे पर बठ कर भो–भा करना पडता है और न समय पर खाने को मिलता ह। बदर कहने लगा कि मैं भी दुखी हू क्योकि लोग मेरे पीछे पड जाते हे।

मनुष्य कहने लगा कि मुझे तो आयुष्य कम मिली– लबी आयुष्य मिलती तो अच्छा रहता। 30 वर्ष खेलकूद मे चले जाते हे। 30 वर्ष के बाद आनद लेने का समय आता है तो रोजी रोटी का सवाल सामने आ जाता हे। अन्त मे चारो ने सोचा कि क्या करे– किसी योगी के पास चला जाए ताकि वहा जाने पर समस्या का हल हो जाए।

चारो मित्र योगी के पास गये। मनुष्य कहने लगा कि मेरी जिदगी लबी होनी चाहिए। तीस वर्ष मे तरुणाई आते ही चल बसता हू इसलिए मेरी आयु बढा दीजिए।

गधे ने कहा कि मेरी आयु कम कर दीजिए। क्योकि मै हैरान हू। कुत्ते ने कहा कि मै भी अधिक आयु के कारण दु ख पाता हू, मै परेशान हो जाता हू, इसलिए मेरी आयु कम कर दीजिये।

बदर कहने लगा कि बच्चे मेरे पीछे पड जाते है। इसलिए मेरी आयु भी कम कर दीजिए।

योगी पुरुष ने विचार किया और कहा कि चारो की आयु का समाधान हो सकता है। तीन मित्र आयु कम करना चाहते है और चौथा मित्र लबी आयु चाहता है। इसलिए मनुष्य की आयु के साथ चेज कर देता हू– गधा कुत्ता और बदर की आयु बीस–बीस वर्ष से कम करे मनुष्य की आयु ६० वर्ष बढा देता हू। समाधान सुनकर चारो मित्र खुश हो गये।

मनुष्य की आयु के ३० वर्ष तो खेलकूद और पढाई मे चले गये। ३० वर्ष के बाद माता–पिता ने कहा कि शादी करो। शादी के बाद उसके गले मे घटी बध गयी। जो व्यक्ति स्वतत्र था वह बधन मे आ गया। माता–पिता की सेवा भी कपनी सरकार (पत्नी) कहेगी तो करेगा। कपनी सरकार जितनी आज्ञा देती है उसी का अनुसरण करता है।

मैं क्या कहू, गुरुदेव फरमाते थे कि जैसे मदारी कहता है– उठ बे बदर, बैठे बे बदर– यही स्थिति आज बहुत से व्यक्तियो की है, और इसी कारण आज माता–पिताओ की दयनीय दशा बनती जा रही हैं। दो चार बच्चे हो गये दिन रात गधे की तरह वजन ढोने लगा। रात–दिन घुलता रहा। बीस वर्ष गधे की तरह भार

दान मे बीत गए। बाद मे २० वर्ष मे और भी कष्ट पाता है।

मै दिल्ली मे आचार्य देव के साथ था वहा एक व्यक्ति आचार्य देव के पास आ कर गिडगिडाने लगा– अन्नदाता दुःखी हू, एम ए पास हू, पत्नी भी एम ए है नौकरी नही मिल रही है कमाई का जरिया नही है। चार बाल बच्चे पहले है एक गर्भ मे है। आप मोटे महाराज हैं यह व्यवस्था कर दे कि कम से कम गर्भ से आनेवाले के लिए कुछ सामान जुट जाए।

आचार्य श्री ने कहा कि मै साधु हू– मेरा मन्त्र तुम्हे भारी पडेगा। उसने कहा महाराज बता दे।

चार बच्चे तुम्हारे है और पाचवा आनेवाला है– अब कम से कम व्रत ले ले कि आगे से ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करेगे और दोनो भाई बहिन की तरह रहोगे। उसने कहा नही– महाराज यह तो नही होगा।

क्या जिदगी भर यही सार है? जरा चितन करे।

मनुष्य के ३० वर्ष आनद के साथ बीते २० वर्ष गधे की तरह बीते– आगे के २० वर्ष और चालू हुए तब तक बाल बच्चे बडे हो गए। वे कहने लगे कि हम तो कमाई करने जा रहे है। आप बैठ जाओ दरवाजे पर– घर की रखवाली करो। बाल बच्चे लडते–लडते उसके पास आते है। ७० वर्ष हो गया तो बाद मे बदर की तरह कोई कद्र नही करता है।

क्या आप इसी प्रकार का जीवन ले कर चलना चाहते है। मनुष्य जन्म कितना बहुमूल्य है कैसे आगे बढना चाहिए? सोचिये आगे क्या करना है? कल्पवृक्ष पाना है तो सामायिक की विधि सीखे।

बच्चे भी स्कूल मे जाते है तो पहले उनको अक्षर ज्ञान नहीं होता– अटपटा लगता है। समझ मे आने पर अच्छा लगता है और आगे बढता है तो आनद आता है। इसी तरह यह भी आध्यात्मिक स्कूल है। प्रारभ मे अटपटा लगेगा। विधि सीख जाए तो निश्चित आनद आएगा।

१६-७-८८

५. सामायिक साधना-इर्यापथ शुद्धि -(२)

आकाश के समान निर्मल, अनत सूर्यो के प्रकाश से भी अधिक प्रकाशवान वर्तमान मे सिद्ध अवस्था मे विराजमान प्रभु महावीर ने तीर्थकर पद पर रहते हुए जगत पर महान कृपा करके साधना मार्ग बताया। ऐसा मार्ग तीर्थकर देव के अतिरिक्त और कोई नही बता सकता है। विगत दो दिनो से तीर्थकर प्रभु द्वारा निर्दिष्ट सामायिक साधना की मौलिक विधि का प्रतिपादन चल रहा है। आज भी मै उसी विषय को कुछ स्पष्ट करने का प्रयास कर रहा हू।

वास्तविक विधि से जो सामायिक साधना करता है, उस साधना मे कैसा आनद आता है समत्व भाव की कैसी अनूठी अनुभूति होती है यह कथन से नही अनुभव से ही जाना जा सकता है।

तीर्थकर देव ने गृहस्थ धर्म की दृष्टि से साधना का प्रारभ सामायिक साधना से किया। साधु जो सर्वव्रती जीवन अगीकार करता हे, वह गृहस्थ जीवन मे रहता हुआ ही बाद मे साधु बनता है। इसलिए गृहस्थाश्रम मे रहता हुआ श्रावक यदि सामायिक की भलीभाति आराधना कर लेता है तो उसके लिए साधु जीवन की आराधना सहज सुगम बन जाती है। इस दृष्टिकोण से तीर्थकरो ने स्पष्ट प्रतिपादन किया हे कि सामायिक साधना का अधिकारी सम्यग्दृष्टि ही हो सकता हे ओर जव वह सम्यग्दृष्टि के बाद पचम गुणस्थानवाला श्रावक बनता है तो उसके लिए सामायिक बहुत महत्वपूर्ण एव आवश्यक साधना है, किन्तु सामायिक की जो विधि बताई गई हे यदि उस विधि का सम्यक् रुप से पालन हो सके तो सामायिक साधना इतनी सुदर बन सकती हे जिसकी कोई कल्पना नही की जा सकती ।

आज जो लोग सामायिक मे बेठते है वे कुछ शास्त्रीय पाठ बोल लेते हे कितु उनका अर्थानुसधान नही करते। सामायिक का प्रत्याख्यान ले कर ४८ मिनिट विता कर मन मे सतोष कर लेते हे कि हमने सामायिक कर ली। कितु उन्हे सामायिक का जो आनद आना चाहिए वह नही आता। यदि कोई व्यक्ति अविधियुक्त भोजन करके उठे या अरुचिकर भोजन करके उठे तो उसको तृप्ति ठीक तरह स नही होती वही दशा सामायिक की स्थिति की हे।

सामायिक के लिए प्रस्थान मार्ग शुद्धि

सामायिक की पृष्ठ भूमिका के लिए प्रभु की बतलाई हुए विधि का म आपके सामने रख रहा था।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन इरियावहियं पडिक्कमामि इच्छं इच्छामि

इन पदों का कुछ अर्थ विगत दिनों आपके समक्ष रखा गया है। भगवान की आज्ञा का विशेष महत्त्व है। इस आज्ञा की छत्र छाया में की जाने वाली सामायिक की विधि का कुछ विवेचन किया जा चुका है। भगवन शब्द की संक्षिप्त व्याख्या भी कल मैं आपके समक्ष रखा गया। आगमिक पाठ इरियावहियं में आगे का विधान है कि इधर–उधर जाना–आना हुआ घर से चल कर यहां आया धर्मस्थान में पहुंच आदि गमनागमन सम्बन्धी गति क्रिया को इरियावहियं के नाम से पुकारा है। इस इरियावहियं से संबंधित जो भी पाप लगा हो जो मानसिक वृत्ति दूषित हुई हो उस दूषण को मैं धोना चाहता हूं। आप कहेंगे कि हम जब चल कर आए हैं तो चलना शरीर से होता है पैरों से होता है उससे मानसिक वृत्ति के दूषण का क्या प्रसंग है? लेकिन आप ध्यान रखिये कि शरीर और मन दोनों सापेक्ष हैं संयुक्त रूप से हैं। दूसरे शब्दों में कहूं तो एक दूसरे के बिना एक दूसरा रह नहीं सकता। संज्ञी मनुष्य संज्ञी प्राणी जिसके मन है वह संज्ञी पंचेन्द्रिय है। जिसके मन नहीं है वह असंज्ञी पंचेन्द्रिय है। लेकिन जिसमें मन है वह शरीर के बिना नहीं रहता है। मन को अलग नहीं निकाल सकते। शरीर को अलग हटाने पर मन का स्वरूप नहीं रहता। संज्ञी पंचेन्द्रिय के शरीर रहते हुए मन न हो यह नहीं हो सकता। जहां शरीर है वहां मन है और मन है वहां शरीर है। यहां इतना और समझ लें कि मन का क्षेत्र सम्पूर्ण शरीर है। कोई कहे कि मन एक निश्चित स्थान पर ही रहता है तो यह मान्य नहीं है। जितना शरीर का स्थान है उतना ही मन का स्थान है। आत्मा की तरह समान ही मन भी पूरे शरीर में व्याप्त है।

जा रहा है तो श्रावक का कर्तव्य बताया है कि जैसे साधु चलता हे वैसे ही श्रावक को भी चलना चाहिए। यदि सजग हो कर चले तो प्राणियो का उपमर्दन करने का पाप नही लगेगा। दया पचक कर जाते है तो आप प्राय साधु की तरह रहते हैं। धर्म स्थान के लिए चल रहे हैं तो आपको इरियासमिति– हरी वनस्पति, लीलन–फूलन देखते हुए चलना चाहिए अविधि से नही चलना चाहिए। विधि के साथ गये तो मन का दूषण कम होगा और यदि अविधि के साथ गये, जीवो की घात होगी। उसका शुद्धिकरण करने से पहले सामायिक मे बैठते है, तो सामायिक ठीक तरह से नही सधेगी, पुण्य बध हो जायेगा लेकिन सामायिक का लाभ जैसा मिलना चाहिए वैसा नही मिलेगा। इसलिए श्रावक का कर्तव्य है कि धर्म स्थान मे पहुचते समय इस बात का ख्याल रखे। साधक इरियावहिय का पाठ करता हुआ सोचे कि पैरो से चल कर आने मे, पैरो से कोई जतु मरा हो, उसका दूषण आये बिना नही रहता। योगो की लापरवाही से मनुष्य पाप करता है। एक दृष्टि से मनुष्य जागता हुआ भी सोया हुआ है। मन की अनवधानता एक प्रकार का सोना ही है। गमनागमन से जो दूषण होता है, इरियावहिय के पाठ से उसकी निवृत्ति करके फिर सामायिक ले।

शरीर शुद्धि-मन शुद्धि

बरसात के मौसम मे आप कही बाहर चले गये और कही कीचड मे पड गये, जिससे आपका शरीर कीचड से लथपथ हो गया। घर आकर क्या कीचड लगे हुए शरीर से भोजन करेगे? आप चतुर है, कीचड लगे शरीर से भोजन नही करेगे। इस दृष्टि से आप सावधानी बरतते है। लेकिन ज्ञानीजन कहते है कि आत्मा को भोजन या खुराक सामायिक से मिलती है, तो सामायिक रुपी भोजन आत्मा को जीमाना है। शरीर तो कीचड से नही भरा है। लेकिन मन कीचड से भरा हुआ है, पहले मन को साफ करे। मन को साफ किये बिना ही सामायिक मे बैठ गये तो आनद की अनुभूति नही होगी। आप कहेगे कि मन पर कीचड कैसे लगा? आप किसी प्राणी को सता कर या दबा कर आये है तो आप का मन मैल से भरा हुआ है। उसको धोने के लिए भगवान ने कहा कि इच्छाकारेण की पाटी पढो। मन का शुद्धिकरण किये बिना आपका मन सामायिक मे नही लगेगा। गृहस्थाश्रम का कार्य करते हैं तो उसमे भी मन नही लगेगा। कोई मनुष्य किसी को सता कर आया है, चाहे उसको उसने गुप्त रुप से सताया हो, किसी दूसरे को मालूम नही हो, फिर भी वह व्यक्ति धर्म स्थान मे ही आया है, उसका मन स्थिर नही रहेगा वह सोचेगा कि मै उसको सता कर या मार कर आया हू। अब क्या होगा। यह तो किसी को जानबूझ कर सताने की बात है लेकिन यदि किसी को

न त जेल में सताया जाता है तो भी उसका मन शुद्ध नहीं रहता। एक ऐतिहासिक घटना है।

विचारों का प्रभाव- पशु पर भी

किसी गुरुकुल में विद्यार्थी अध्ययन कर रहे थे। छुट्टी का दिन था। गुरुकुल के विद्यार्थी सार्वजनिक छुट्टी के दिन हर्ष मनाते हैं। साथी लोग निकल बगीचे में पहुंचे वहां एक इमली का वृक्ष था। बच्चों में कौतूहल होता है इमली खाने की लालसा रहती है। एक बच्चे ने इमली गिराने के लिए पत्थर फेंका। इमली गिरी लेकिन पत्थर उस इमली के उस पार एक कालिंदर सर्प पर गिरा। पत्थर गिरते ही सर्प क्रोधित हुआ। सर्प क्रोधित होने पर किसी को नहीं गिनता। जिधर का विद्यार्थी था उधर भागा। सब विद्यार्थी सर्प की लाल-लाल आंख देखकर भागने लगे। जिसने पत्थर मारा था वह भी भागा। अध्यापक नजदीक ही थे उन्होंने सर्प का तिरस्कार किया। अध्यापक ने उस बच्चे से पूछा कि क्या हुआ? उस विद्यार्थी ने अध्यापक को सच्ची बात बता दी। किंतु उसके मन में भय समा गया वह सर्प मुझे ही देख रहा था अब मेरा क्या हाल होगा? विद्यार्थी का मन चिन्तन हो गया वह घबराने लगा। गृहपति ने उससे कहा कि घबराओ नहीं। अन्य विद्यार्थियों से उन्होंने कहा कि यह तुम्हारा भाई है इसकी रक्षा करना तुम सब का कर्तव्य है।

उनमना बैठा था।

एक रोज वह तालाब मे स्नान करके घर की ओर आ रहा था कि झाडियो की बाड मे से वह सर्प बाहर निकला बच्चे ने देखा– वही सर्प आ गया। उसने सोचा कि अब यह मुझे छोडेगा नही, डस लेगा। इतनी दूर से यह यहा पर आ गया है तो अब मै कहा पर छिपूगा? अब मुझे इससे माफी माग लेनी चाहिए और खुशी पूर्वक जीवन समर्पित कर देना चाहिए। अब इससे मै समता भाव से माफी माग लेता हू। यह सोच कर विद्यार्थी डरा नही। वह भगवान का ध्यान करता हुआ कहने लगा कि भगवन् यह मेरा भाई है, मै इस पर द्वेष नही करता, लेकिन गफलत से मेरा मन मलिन हुआ। यदि यह मुझे डसता है तो मैं तुम्हारी शरण मे हू। विद्यार्थी ने मन मे समताभाव धारण करके उस सर्प से कहा नागराज! मैंने इमली खाने के लिए पत्थर फेका था, तुम्हे मारने के लिए नही। यह मेरी गफलत या भूल हुई कि इमली खानी थी तो पेड पर चढ कर इमली तोडनी थी। मैने बहुत बडी गलती की, आप पर चोट लगी। आप इतनी दूरी से आये हैं, अब में आपको कष्ट देना नही चाहता आप मुझे माफ करिये। आप मुझे डसना चाहे तो मै अपना यह पाव लबा करता हू आप खुशीपूर्वक मुझे डसिए। सर्प आगे बढ कर फण फैलाता है वह विद्यार्थी को देखता है और आखो से अश्रु बहाता है।

बधुओ, आप चितन करेगे कि क्या सर्प मे भी समझ होती है? कुछ सर्प समझ वाले भी होते है। सज्ञी सर्प मे ज्यादा समझ होती है।

जब उस विद्यार्थी ने माफी माग ली तो सर्प के मन मे पश्चाताप हुआ। इस विद्यार्थी ने इमली खाने के लिए पत्थर फेका था मुझे मारने के लिए नही। यह कितना साहसिक है, यदि यह चाहता तो मुझे मार डालता। इसमे मुझे पत्थर फेक कर मारा नही उल्टा अपना जीवन समर्पित कर रहा है। वह सर्प शिला पर स्वत फन पटक कर समाप्त हो जाता है।

बधुओ! मे यह बता रहा था कि हम अनजान मे भी किसी को सताते है तो उसके मन मे वेर भाव बेठ जाता हे। अत सामायिक की साधना के पूर्व जाने अनजाने से हुई जीवो की विराधना को आलोचनापूर्वक दूर करने के लिए इरियावही का पाठ आवश्यक हे।

सामायिक साधना की आगे की विधि पर समय पर ही प्रकाश डाला जा सकेगा।

दिनाक १७-७-८४
बोरीवली (पूर्व) बबई

आहार पानी ग्रहण करता हे ओर वडा होने के वाद व्यावहारिक शिक्षण प्राप्त करता है। वह शिक्षण भी मुख्य तौर पर रोजी रोटी का शिक्षण। रोजी राटी इन दो शव्दो मे प्राय आज का समस्त शिक्षण समाविष्ट हो जाता हे आज ही नही रोजी रोटी का शिक्षण अनादिकाल से चला आ रहा है। यह वात दूसरी हे कि पहले उसके तरीके कुछ भिन्न थे ओर आज भिन्न हे। लेकिन कोई भी व्यक्ति दो हाथो से प्रयत्न करता है तो भूखा नही रहता। पहले भी साधन जुटाता था ओर आज भी जुटाता है। पशु पक्षी भी भूखे नही रहते, वे भी अपना पेट भरते हं।

आज यात्रिक युग आ गया कला का युग आ गया। पहले की अपेक्षा मानव ऊचे बगलो मे रहने लगा है, सुख सुविधा की साधन सामग्री सुगम हो गई।

यदि इस प्रगति के आधार पर मनुष्य सोचता हे कि हम आगे चढ गये तो यह आगे बढना केवल रोजी रोटी की दृष्टि का हे इसे जीवन की शाति की दृष्टि से आगे बढना नही कहा जा सकता हे, जीवन की शाति तो पहले के युग मे जब कि रोजी रोटी का इतना साधन नही था, अधिक थी, आज रोजी रोटी का साधन होने पर भी शाति उतनी नही रही। आज अशाति वढी है। जहा मनुष्य की शारीरिक आवश्यकताओ की पूर्ति का इतना विकास हो गया कला का विकास हुआ, इन सारे विकास मे सासारिक जीवन का पोषण करने मे जिन-जिन हिसाओ की आवश्यकता होती है। रसोई बनाते है, व्यापार करते हे, यातायात के साधन काम मे लेते है आदि ये सब गृहस्थ अवस्था की परिधि के कार्य है। साधु पर्याय मे रहने वाले ससार के आरभ समारभ का परित्याग करते है, इसलिए वे व्यापार सबधी, रसोई बनाने सबधी, यातायात सबधी साधन काम मे नही लेते है। वे इस प्रकार की हिसा का परित्याग करके वीतराग वाणी के अनुसार परिपूर्ण अहिसक बनते है।

सासारिक अवस्था मे कभी-कभी झूठ बोलने का प्रसग आता है, लेकिन साधु झूठ का परित्याग करते है, वे परिपूर्ण सत्य की प्रतिज्ञा ग्रहण करते हैं। गृहस्थ अवस्था मे रहने वाले कभी-कभी दूसरे की मालकियत की चीज उससे बिना पूछे उठा लेते है, लेकिन साधु एक सुई भी मालिक की बिना परमिशन के नही उठा सकते, इसलिए चोरी करने का प्रसग नही है। इसी तरह से गृहस्थाश्रम मे रहने वाले को अब्रह्मचर्य का प्रसग रहता है आहार, निद्रा, भय, मैथुन, परिग्रह की परिधि मे ससार के प्राणी रहते है। लेकिन साधना मे आगे बढने वाला बडी मजबूती के साथ ब्रह्मचर्य व्रत अगीकार करता है और स्त्री जाति से विलग रहता है। छोटी बच्ची का भी स्पर्श नही करता।

प्राय अधिकाश ससारी प्राणी अर्थ सग्रह मे लगे हुए है कितु मुनि सर्वथा

करने के पश्चात् सामायिक साधना मे ४८ मिनिट के लिए सभी प्राणियो की आत्मा के तुल्य समझ सकता है।

साधना मे आनद की अनुभूति करना चाहते है, तो सामायिक विधिवत् करनी चाहिए। पहले जो दोष लगे हैं उनका परिमार्जन करके सामायिक मे विशेष प्रगति करनी चाहिए। इसका निर्देश तीर्थंकारो ने दिया है।

स्वच्छ दीवाल - स्वच्छ मन

सामायिक की विधि मे इच्छाकारेण की पाटी आई, उसका थोडा स्पष्टीकरण कल कर दिया था। सामायिक लेने से पहले अपने मन की धुलाई कैसे करनी चाहिए इसकी पूरी लिस्ट गिनाई गई है। ससार मे जितने प्राणी हे उनको पाच वर्गो मे विभक्त किया जा सकता है। एकेन्द्रिय, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौरिन्द्रिय और पचेद्रिय। एकेद्रिय जाति के पृथ्वी के जीव वनस्पति के जीव, पानी के जीव, लीलन–फूलन के जीव, अग्निकाय के जीव, वायु काय मे जीव इन सब जीवो का उपमर्दन धर्म स्थान मे आते हुए मेरे से हुआ हो तो उसके लिए मिच्छामि दुक्कड देता हू अर्थात मनुष्य को किसी प्राणी को मारने का अधिकार नही है, लेकिन जब वह प्रमाद से उठता बैठता है तो इससे कुछ हिसा अवश्यभावी है। कितु धर्म स्थान मे साधना की अनुमति लेना है, तो प्रायश्चित लेकर शुद्धिकरण करना चाहिए। क्योकि किसी वस्तु को साफ किये बिना उस वस्तु मे स्वच्छता सबधी प्रगति नही हो सकती। उदाहरण के तौर पर किसी दीवाल पर चित्र बनाना है तो उसमे चित्रकार कहेगा कि पहले दीवाल को साफ करो, प्लेन करो। साफ दीवाल होगी तभी चित्र चित्रित हो सकेगा। इसी तरह से किसी को अपना कपडा बढिया रगना हो तो रगरेज पहले पुराने कपडे को धो कर साफ करता है।

वैसे ही जब हमे अपने मन पर आध्यात्मिक अनुभूति का रग चढाना है, ससार की अवस्था से प्रगति मार्ग पर जाना है, समस्त सुखो का कल्पवृक्ष पाना हे या मनवाछित सुख पाना है तो मन को साफ करने के लिए मिच्छामि दुक्कड दिया जाना अवश्यक है। इसका तात्पर्य यह है कि इन प्राणियो को मारने का मेरा अभिप्राय नही था लेकिन प्रमादवश अनजाने मे मेरे से हिसा हुई हो तो मै मिच्छामि दुक्कड देता हू।

जीवन का शुद्धिकरण करने के लिए सामायिक मे बैठते है। सामायिक से पहले इतने से शुद्धिकरण से काम नही चलता है, आगे कौन–सी पाटी आती है? तस्सउत्तरी का नाम सुना होगा। कल इरियावहिअ का उच्चारण और विवेचन कर दिया था। लेकिन आगे की पाटी का विवेचन करने से पहले तस्सउत्तरी की पाटी का अर्थ समझा देता हू। आप पहले एक–एक शब्द के अर्थ को हृदयगम करे।

न कारेमि	–	(कायोत्सर्ग को) न पारू
ताव	–	तब तक
काय	–	शरीर को
ठाणेण	–	स्थिर रख कर
मोणेण	–	मौन रख कर
झाणेण	–	ध्यान धर कर
अप्पाण	–	आत्मा को (शरीर को)
वोसिरामि	–	(पाप से) अलग करता हू, छोडता हू

किसी के साथ सबध कुछ कटु हो जाते है या किसी व्यक्ति ने अपनी पोशाक को स्वच्छ बना दिया, लेकिन उसमे सल पडे हुए है तो उनको निकालने के लिए आप उस्त्री करते है। उसी तरह से मन के सल निकालने के लिए तस्स उत्तरी का पाठ है। इरियावही के मिच्छामि दुक्कड से कितने ही पाप धुल जाते हैं, किंतु कितने ही रह जाते है उनके लिए प्रायश्चित करे। इसीलिए इस पाठ मे कहा है– पायच्छित करणेण

एक बच्चा सडक पर चल रहा है, उपयोग के साथ चलने की चेष्टा की लेकिन मार्ग मे किसी व्यक्ति से टक्कर हो गई। उसने बच्चे को चाटा मार दिया, ऐसा जोर से मारा कि बच्चा तिलमिला गया। वह व्यक्ति चाटा मार कर धर्म स्थान पर आया। वहा आ कर उसने मिछामि दुक्कड नही किया। उसको प्रायश्चित करना चाहिए था। लेकिन नही किया। गुरु महाराज के पास आ कर कहा कि मे धर्म स्थान की ओर आ रहा था मार्ग मे बच्चे ने कुछ बोल दिया और मैने उसे पीट दिया। गुरुदेव समझाते है– "बोल दिया तो बोल दिया, तुम्हारा कर्तव्य था कि उसको समझा देते। फिर से वैसा नही करने की हिदायत दे देते। मार्ग मे कोई व्यक्ति कहता है कि तुम पागल हो, तो क्या उसके कहने से तुम पागल हो जाओगे।' गुरु महाराज के पास आकर उसने पूरी बात नही कही। पूरी बात कहता तो गुरु महाराज कहते कि तुमने बडे श्रावक हो कर नन्हे से बच्चे को क्यो पीट दिया। गुरु महाराज के पास पूरी बात कह देता तो शुद्धिकरण हो जाता और प्रायश्चित ले लेता।

गृहस्थ के लिए भी निरपराध व्यक्ति को नही मारने का सकल्प होता हे। मार दिया तो उसके लिए प्रायश्चित लेने का विधान हे तो सीधे तरीके से प्रायश्चित ले कर शुद्धिकरण करे।

मै तो बडा श्रावक था लेकिन प्रायश्चित नही करने के कारण पशु बन गया, अब मै श्रद्धा से सम्यक्त्व सहित व्रतो की आराधना एव व्रत का पालन करु। इस प्रकार श्रद्धापूर्वक व्रत का निरन्तर पालन करते हुए यदि आयुष्य बन्ध हो जाए तो वह पुन स्वर्गलोक मे जा सकता है।

भगवान ने आपके लिए पाच अणुव्रत, तीन गुणव्रत और चार शिक्षा व्रत की शिक्षा दी है। इस शिक्षा व्रत मे सामायिक भी है। सामायिक करना महत्त्वपूर्ण साधना है। आप सुख, सुविधा, आत्म शाति चाहते है, तो सामायिक करने का अवश्य प्रयत्न करे। साधना बिना इस लोक और परलोक मे शाति नही मिलेगी।

मन का शूल निकालने के लिए सामायिक के पूर्व शुद्धिकरण करना है। आप श्रद्धा वस धर्म श्रवण करने की दृष्टि से धर्म स्थान मे पहुचते है। किंतु यहा यह विवेक रखना आवश्यक है कि आप इससे कितना लाभ उठा सकते है? सामायिक के कितने भेद हैं इसकी व्याख्या करने मे सुरेन्द्रनगर मे एक पक्ष व्यतीत हो गया था। १५ दिन मे सात प्रकार के भेदो की व्याख्या कर पाया। यहा पर तो पूरा चातुर्मास काल है, आपको यह विषय रुचिकर हो तो इसकी कुछ विस्तृत व्याख्या की जाए, किंतु इसे आप ध्यानपूर्वक सुनने की चेष्टा करे। जो ध्यानपूर्वक सुनते हैं, सतो के सपर्क मे आते हैं, उनके जीवन मे परिवर्तन आता है। यही नही आदर्श श्रावको के सपर्क से भी जीवन क्रम बदल जाता। सेठ सुदर्शन के सपर्क से अर्जुन माली मे कितना परिवर्तन आ गया। अर्जुन माली का नाम आपने सुना होगा वह कितना पापी था? उसने कितने मनुष्यो का खून किया था। सेठ सुदर्शन श्रमणोपासक श्रावक था। अर्जुन माली ने उससे पूछा "भगवान्, आप कौन हैं?" उसने कहा "मै श्रमणोपासक हू आप कहा जा रहे हैं?" मैं श्रमण भगवान महावीर के दर्शन करने कि लिए जा रहा हू भगवान श्रमण थे। उनके उपासक श्रमणोपासक हैं, उनकी शक्ति कैसी थी वे कैसे दयालु थे। उनके उपदेश से अर्जुन माली सरीखे पापी का आमूल चूल परिवर्तन हो गया।

आपने वाल्मिकी का नाम सुना होगा। वे पहले कौन थे। वे पहले डाकू थे। उनको थोडा सा सत वाणी का योग मिला तो उनके जीवन का परिवर्तन हो गया। कहावत हे –

'एक घडी आधी घडी, आधी मे पुनि आध।
तुलसी सगति साधु की कटे कोटि अपराध।"

इस वर्षा के समय मे दूर–दूर के भाई उपस्थित हुए। ऊपर तडातड की आवाज हो रही हे फिर भी आप शाति से सुन रहे है। यह आपकी श्रद्धा की अभिव्यक्ति हे। किंतु मे जो कुछ कह रहा हू, इसे आप समझे। सामायिक सत्सग

का अग हे। श्रावक श्राविकाओ को यदि सामायिक रग आ जाता है तो कैसा आनन्द आता है। कभी श्रावक धर्म के मार्ग पर नही हो लेकिन श्राविका धर्मात्मा हे तो वह श्रावक को धर्म के मार्ग पर मोड देती हैं।

वीकानेर के श्री श्रीमालजी धर्म मे कुछ नही समझते थे। बहिन चीनीबाई घर मे आई तो ससार ऐसे कर दिये कि सभी धर्म के मार्ग पर चलने लगे। कहने का अर्थ यह है कि हम साधनो मे जितना मनोयोग एव समय लगायेगे उतना ही जीवन समतामय बनेगा। सामायिक की साधना उतनी ही आनन्दप्रद होगी।

दिनाक १८-७-८४
बोरीवली (पूर्व) बबई

७. साधना और प्रदर्शन

पिछले कुछ दिनो से सामायिक साधना के सबध मे विवेचन चल रहा है। साधु और श्रावक अपनी–अपनी साधना मे आगे बढने का प्रयत्न करते है। मुनि जीवन की साधना सर्वव्रती साधना है। यदि वह साधना अपनी मौलिकता मे अक्षुण्ण चलती रहती है तो साधक को कुछ उपलब्धिया, उपलब्ध हो जाती है। जिन्हे हम सामान्यजन भाषा मे चमत्कार कह सकते है, किंतु यदि उन उपलब्धियो से साधक अहकार मे झूमने लगे और उसका प्रदर्शन करने लगे कि मुझे यह प्राप्त हो गया, वह हो गया तो समझना चाहिए कि वह साधक जितना आगे बढा है उतना ही नीचा गिरेगा। क्योकि उसने सामान्य सी उपलब्धि को बहुत मान लिया है। जो व्यक्ति जरा सी उपलब्धि को बहुत मान लेता है वह व्यक्ति फिर आगे नही बढ सकता।

उपलब्धि का प्रदर्शन

एक व्यापारी व्यापार करने के लिए जाता है और एक वर्ष या दो वर्ष मे उसको अच्छी आय हो गई परिणामत वह अहकार मे फूल जाता है और उस प्राप्ति का ससार के सामने प्रदर्शन करता है तो वह व्यापारी आगे तरक्की नही कर सकता।

ज्ञानीजनो का कथन है कि तुम अपने जीवन की आर्थिक कमजोरियो को बाहर रखो लेकिन अपनी उपलब्धियो को, अपनी आमदनी को और जीवन मे प्राप्त होने वाली उपलब्धियो को दुनिया के सामने प्रदर्शित मत करो।

कोई साधु इस प्रकार के प्रदर्शन मे लगता है तो उसका मस्तिष्क जो अपूर्व खोज मे आगे बढ रहा था उसके विकास मे रुकावट उत्पन्न हो जायेगी तथा जो प्राप्त हुआ था वह भी बिखरने लगेगा। यदि यह वृत्ति साधुओ मे आ गयी हो तो उसका सशोधन करना चाहिए। यह भी प्रकारातर से, आत्मा के विकास मे बाधक होने से एक प्रकार का पाप है।

प्रभु महावीर ने कहा कि तुम सामायिक की विधि साधने से पूर्व इस बात का ध्यान करो कि मेरा कहा–कहा ध्यान बटा है और मैं तरक्की मे कहा–कहा पीछे हटा हू।

जीव हिसा से निवृत्ति हेतु इरियावहिय का पाठ कहा गया। अब प्रायश्चित के लिये तस्स उत्तरी के पाठ का क्रम आता है।

किसी छोटी आत्मा को दबाया कीडो को दबाया या और किसी जतु को दबाने से पाप हुआ उसका शुद्धिकरण कर लिया किंतु आत्मा के अदर रहे हुए शल्य को नही निकाला। सामान्य से विकास से अह का शल्य भीतर मे बन गया। तो आगे का विकास दब गया और जो शक्ति विकसित हुई थी उसके ताला लग गया– उसको बद कर दिया। यह शल्य के रुप मे एक प्रकार से स्वय की हिसा का प्रसग हे। अपने अतर की बात व्यक्ति स्वय ही जान सकता है कि मैं कितना प्रदर्शन कर रहा हू और भीतर मे कैसा हू, मैं कितनी योग्यता रखता हू। व्यक्ति अपनी गरिमा का प्रसार करने मे बहुत माहिर होता हे। वह जितना बाहर प्रदर्शन करता है उतना अदर मे नही होता है।

यदि दूसरो को दिखाने की दृष्टि से ऐसा करता है तो उसको जीवन मे शाति नही मिलती। इसलिए सामायिक की इस विधि मे भगवान ने तस्स उत्तरी के पाठ मे विसोहि करणेण विसल्ली करणेणे के द्वारा शल्य रहित हो जाओ और फिर पाप कार्मो को नष्ट करने के लिए ध्यान की साधना करो अपनी दृष्टि से अतर की ओर मोडो अतर मे प्रवेश करके आतिरिक साधना मे लगो यह सन्देश दिया है।

शल्यरहित साधना

आतिरिक साधना कब की जा सकती है। इसके लिए भगवान ने केवल ज्ञान मे देखा और अनुभूति के आधार पर कहा कि जब तक मनुष्य बाहर की ओर दौडता है अथवा बाहर की ओर दृष्टि फैलाता है तब तक अदर की तरफ नही देख पायेगा। बाहर लुभावने दृश्य हैं तो भीतर के दृश्यो को नही देख सकता। इसलिए बाहर के आकर्षणो से मन को मोडो ओर भीतर को देखो।

यह शरीर है। ज्ञान दर्शन चारित्र ओर तप की आराधना इसी शरीर से होती है मानव जाति के शरीर से ही मोक्ष प्राप्त होता हे परम शाति मिलती हे। तीर्थंकर भगवतो ने मोक्ष किससे प्राप्त की? इसी शरीर के माध्यम से जिसको आप धारण करके बैठे हे। इसी जाति यानि मनुष्य जाति के शरीर मे उन्होने साधना की ओर मोक्ष प्राप्त किया। आज के मनुष्यो मे से यदि कोई अदर की उपलब्धिया ओर शक्तिया प्राप्त करेगा तो इसी शरीर से ही करेगा।

भगवान कहते है कि जब तुम ध्यान की साधना मे बेठते हो तो इस शरीर का भी ध्यान छोड दो। जो शरीर निकट का उपकारी हे उसका भी ध्यान छोडोगे तो मोक्ष प्राप्त कर सकोगे।

मै अधिक सुक्ष्म बातो मे चला गया। ये वारीक वाते हरेक की समझ मे कम आती है लेकिन यह साधना भगवान की वताई हुई हे ओर सारे जेन समाज को मान्य है इस साधना मे चैतन्य की ओर ध्यान दिलाया हे। चेतन्य का मतलव है आत्मा और इस शरीर मे आत्मा हे।

पत्तियों को नहीं मूल को सींचिये

मै आपके समक्ष वर्तमान जीवन की रिथति को लेकर कह रहा हू। आप सभी चाहते है कि वर्तमान जीवन मे हम सुखी वने, समृद्धिशाली बने, पवित्र बने, लेकिन यह नही सोचते कि किन कारणो से वेसी अनुकूल परिस्थति नही बन रही है। आपने मूल को नही पकडा। आम मे जो मधुर रस आता हे वह इस वृक्ष की हरी–हरी पत्तियो के कारण नही आता है, अपितु जमीन मे जो उसकी जड हे, जो ऊपर से रुखी–सुखी मालूम होती है, उसी का सिचन अच्छी तरह से करने से आम के फल मे मधुर रस आता है। इसी दृष्टि से आध्यात्मिक बातो मे रस ले। वैसे आध्यात्मिक बाते रूक्षी मालूम होती हैं लेकिन याद रखिये कि जीवन मे सुख चाहते है तो इन आध्यात्मिक बारीकियो को समझाना होगा। इस दृष्टि से अभी से ही प्रयास क्यो नही किया जाए। आप अपने सद्‌गुणो को विकसित करे और चैतन्य आत्मा का ख्याल करे।

जड चीजो को देखते हुए तो अनादि काल बीत गया। यह चश्मा क्या है, घडी क्या है? ये जड है। जड और चेतन्य को पहचानो। जो अपने आपको नहीं जानता, वह जड है और जो अपने आपको पहचान सकता है वह चैतन्य है।

भगवान कहते हैं कि तू अनादि काल से अपने मूल स्वरुप नही पहचान सका। अनेक गतियो मे रुलता हुआ मानव तन मे आ गया। फिर भी अज्ञ का अज्ञ ही रहा।

समुद्र के जीव जल की हिलोरो के साथ उपर नीचे आते है कभी मुनष्य भी हिलोरो के साथ उपर–नीचे आ जाए और नही सभला तो कहा चला जाएगा? ससार समुद्र मे चला जाएगा।

भगवान ने कहा कि साधना करनी है तो शरीर का भी ध्यान मत रखो। यदि आत्मा से भिन्न विषयो का ध्यान करोगे तो तीन काल मे भी आत्म कल्याण की ओर नही बढ सकोगे।

जिन व्यक्तियो का ध्यान केवल इस प्रदर्शन पर केद्रित हो जाता है कि मेरे पास इतनी सपत्ति है। मैं उसे दुनिया को दिखा दू। उस व्यक्ति की क्या स्थिति बनती है। इस सबध मे एक छोटा सा रुपक ले –

सपत्ति का प्रदर्शन भी हानिकर

एक मोतीलालजी नाम के सेठ थे। इस सेठ के पास अरबो की सपत्ति थी। सेठ के पिता ने इस अपार सपत्ति को तलघर मे भडार मे रख छोडा था। उपर से वे सादे तरीके से रहते थे क्योकि वे जानते थे कि सपत्तिको जितना प्रगट किया जायेगा उतने ही इसको पाने वाले पैदा हो जायेगे। पिताजी ने तो सपत्ति को इस तरह से रखा लेकिन उनकी मृत्यु के बाद मोतीलालजी ने सोचा कि मेरे पास इतनी अपार सपत्ति हे लोगो को इस अपार सपत्ति की जानकारी नही होगी तो लोग मेरा आदर नही करेगे। यदि लोगो को मालूम हो जाए कि मेरे पास इतनी अधिक सपत्ति है तो वे मेरा सम्मान करेगे तारीफ करेगे। मोतीलालजी को यह कीर्ति की चाह हुई। अर्ध रात्रि मे उन्होने उपाय सोचा की अदर के तलघर मे दबी हुई सपत्तिके बारे मे दुनिया को मालूम हो जाए ऐसा उपाय करू। रात्रि के चितन के पश्चात् प्रात काल उठे और परिवार मे जो सभ्य लोग थे। ३, ४ बेटे थे उनकी पत्निया थी और स्वय की पत्नी थी। सारा परिवार बेठा था। मोतीलाल सेठ उनसे कहने लगे कि रात्रि मे मेरे मन मे चितन चला कि अपन इतने धनवान है। लेकिन लोग अपने को धनवान के रुप मे नही जानते। लोगो को इस बात की जानकारी केसे हो कि मैं इतना धनवान हू। मेरा चितन हुआ ओर प्रसिद्धि पाने के लिए एक उपाय मेरे मस्तिष्क मे आया। आप सब परिवार वालो के सामने में वह उपाय प्रस्तावित करता हू। आप उस प्रस्ताव को पास करे तो उसके अनुसार आगे बढा जा सकता है। उन सब ने कहा कि बताइये आपका प्रस्ताव क्या हे? मोतीलाल सेठ ने कहा 'यहा के राजा को भेटना देकर मेहमान बना कर अपने घर पर बुलाया जाए। उसको बढिया भोजन कराया जाए ओर अपने पास जितना धन हे वह सब राजा को दिखाया जाए। जिससे दुनिया के मन मे जिज्ञासा हो कि इतना बडा सम्राट इनके घर पर क्यो आया हो न हो कुछ महत्त्वपूर्ण बात है। राजा के साथ बडे-बडे अधिकारी भी आयेगे उन पर भी अपना प्रभाव जमेगा।

सब ने एक स्वर मे समर्थन किया ओर कहा 'पिताजी आपका प्रस्ताव बहुत अच्छा हे। हम सब का समर्थन हे।

समझदार- छोटी बहू

लकिन पास मे ही सेठ की सबसे छोटी बीनणी (छोटे लडके की पत्नी) बेठी थी। वह बडी बुद्धिशालिनी थी आध्यात्मिक जीवन मे रस लेने वाली थी। वीतराग वाणी का श्रवण करने वाली थी। वह जानती थी कि वीतराग का उपदेश यह है कि तुम गोपनीय सामग्री को जितना गोप करके रखोगे उतना ही अच्छा है। लोक व्यवहार मे अपनी सपत्ति राजा को बताकर वाहवाही की चाह नही करनी

चाहिए। इससे सपत्ति के लुटेरे तैयार हो जायेगे। वह मन ही मन गभीर चितन कर रही थी। मोतीलालजी सब की तरफ दृष्टि डाल रहे थे। उन्होने छोटी बहू पर भी दृष्टि डाली। उसने प्रस्ताव का समर्थन नही किया था। सेठ ने पूछा कि छोटी बहू तुम क्यो नही बोल रही हो? छोटी बहू ने नम्रता पूर्वक मधुर स्वर मे कहा "आप बडे–बडे चितन कर रहे है, तो मै सबसे छोटी हू, मै क्या कहू। सेठ ने कहा "नही–नही तुम्हारे मन मे क्या बात आई है वह भी बताओ, मेरा प्रस्ताव अच्छा है या नही।" उसने कहा "मुझे माफ करे तो कहू।" सबने कहा– "कहो"।

उसने कहा कि देखिये आप खतरे की घटी मोल रहे है, अपने धन का प्रदर्शन करने का सोच रहे है। राजा को और दूसरे लोगो को अपनी सपत्ति नही दिखानी चाहिए। क्या किसी को दिखाने मे सपत्ति और बढ जाएगी? दिखाने से खतरे मे पड जायेगे। सब बडे कहने लगे कि यह समझती नही है, आखिर सबसे छोटी ही है, यह दीर्घ दृष्टि से सोच नही सकती।

दूसरे दिन मोतीलालजी बढिया पोषाक सजाकर रत्नो की भेट ले बग्गी मे बैठ कर सम्राट के सामने पहुचे। भेट सामने रखी। सम्राट ने दीवानजी से पूछा "ये कहा के सेठ आये हैं, ये कौन है?" दीवान ने कहा कि हुजूर ये आपके यहा के ही मोतीलालजी सेठ है। इनके पिता बहुत चतुर व्यक्ति थे उन्ही के ये सुपुत्र है। सम्राट ने भेट स्वीकार कर ली। मोतीलालजी सेठ ने कहा कि हुजूर मेरा निमत्रण है कि आप मेरे झोपडे मे पधारिये और एक टाइम का भोजन वहा अरोगिये। सम्राट ने सोचा कि इतनी भेट यहा पर लाया है तो घर जाने पर और भेट देगा। सम्राट ने दीवानजी की तरफ दृष्टि डाली, उन्होने कहा "हुजूर ये नये सेठ प्रगट हुए है, इनका निमत्रण अवश्य स्वीकार करना चाहिए।"

सेठ निमत्रण दे कर फूला नही समाया। बाहर आकर सेठ ने लोगो से कहा कि वह सम्राट के पास जा कर आया है। कल सम्राट मेरे घर पर आयेगे। लोगो ने उसकी तारीफ की। तारीफ सुन कर सेठ और उसके लडके फूले नही समाये। परिवार मे छोटी बहू के सामने लक्ष्य कर के सेठ ने कहा कि यह तो मगलाचरण हे सम्राट घर पर आयेगे तो हमारा कितना आदर होगा।

सम्राट घर पर आये। सोने की थाली मे रत्नो के कटोरे सजा कर चादी के पाटिये पर रखे ओर थाल मे तरह–तरह की भोजन सामग्री परोसी गई। तलघरो की पूरी सपत्ति निकाल कर हॉल मे प्रदर्शनी लगा दी गयी। सम्राट जीमने बैठा तो चादी का बाजोट (पटिया) सोने की थाली ओर रत्नो के कटोरे देखकर चकित हो गया।

भोजन के पश्चात् सेठ और उसके लडके कहने लगे कि हॉल मे

पधारिये। हॉल मे सपत्ति देख कर सम्राट आश्चर्यकित हो गया। इतना धन मेरे भडार मे भी नही है। ऐसा सेठ तो मुझे खरीद सकता है। उपर से उस ने सेठ का आदर किया ओर अदर से सोचने लगा कि यह चाहे तो मेरी जागीर भी खरीद सकता है। मुझे कुछ करना पडेगा।

सम्राट अपने महल मे पहुचा उसे चेन नही पड रही थी। दीवान पूछा कि क्या बात है? सम्राट ने कहा 'सेठ के पास इतनी सपत्ति रह गई तो यह मुझे राज्य से निष्कासित कर सकता है। दीवान जी इसका कुछ उपाय करना चाहिए। दीवान जी ने कहा 'जहा अपाय है वहा उपाय भी हे। यह सेठ तो आपके आधीन ही है। आप चाहे तो इसका सारा धन अपने भडार मे भर सकते है। लेकिन यदि ऐसा केरेगे तो दुनिया उलट जायेगी, इसलिए तरकीब से काम लेना पडेगा। मेवाड की तरफ की कहावत हे दुनिया ठगनी मक्कर से ओर रोटी खानी शक्कर से।' सम्राट करने लगा दीवान जी उपाय जल्दी बताओ।' दीवान ने कहा आप उन सेठजी को अपने यहा आने का निमत्रण दीजिये। उनके यहा आने पर क्या करना यह मै आपको एकात मे बता दूगा।' सम्राट के मन मे बहुत उतावली हो रही थी अत उसने दीवानजी सहित कुछ कर्मचारियो को सेठ के यहा भेजा।

जब दीवानजी ओर कर्मचारी मोतीलालजी सेठ के घर जा रहे थे तो लोगो ने सोचा कि आज फिर क्या बात है? वे सोचने लगे कि राजा को घर बुलाने का कार्य नही करता तो दीवानजी क्यो आते? दीवानजी ओर बडे–बडे अधिकारी सेठ के यहा पहुचे। सेठ ने पूछा केसे आना हुआ? दीवान ने कहा 'सम्राट ने आपको याद किया हे पधारिये। सेठ ने बढिया वस्त्र पहने ओर बढिया बग्गी मे बैठ कर महल की ओर चला। वहा पहुचने पर सम्राट ने भोजन से स्वागत के पश्चात अपने बराबर आसन दिया ओर सत्कार करके आसन पर बिठाया। मोतीलालजी सोचने लगे कि म ता जिदा ही स्वर्ग मे आ गया हू, सम्राट के बराबर बन गया। पान–बीडा मुह मे रखा। दीवानजी ने गुप्त बात सम्राट को एकात मे बता दी थी। सम्राट कहने लगा मुझे अब ज्ञात हुआ कि आप इतने धनवान होते हुए बुद्धिशाली भी हे। जेसी की कहावत ह 'गुदडी म लाल आपने कभी प्रगट नही किया कि आप इतन धनवान ह। अब मेरे मन मे यह बात आई कि आप जेसे बुद्धिशाली नागरिक वश नही कर सकते? इतने रोज तक समस्या उलझी हुई थी उसको सुलझाने के लिए प्रयास चालू था पर कोई उसका उत्तर नही द सका ह। आप बुद्धिशाली ह आप मेरा समाधान कर सकते हे।

सेठ साहब ने बडे गर्व से कहा – कहिए क्या प्रश्न ह म उत्तर दता हू। सम्राट ने कहा कि देखिये सोच समझ कर उत्तर दीजिये क्योकि प्रश्न के पीछे

एक शर्त है। एक प्रश्न को कोई सही उत्तर देता है तो इनाम मिलता है और जो उत्तर नही दे पाता है उससे पाच करोड रुपये लिये जाते है। सेठ साहब कुछ ठडे पडे। प्रश्न का उत्तर देने की क्षमता मुझ मे है या नही, यह वे जानते थे।

सम्राट ने कहा "पहला प्रश्न यह है कि ऐसा कोन सा तत्त्व है जो प्रतिपल प्रति क्षण विनष्ट होता रहता है और दूसरा प्रति पल बढता रहे ऐसा कौन-सा तत्व है?

प्रति पल और प्रति क्षण शब्द सुन कर सेठ गुमराह हो गया। उसने कहा कि हुजूर प्रश्न गभीर है, उत्तर नही दे सका तो पाच-पाच करोड रुपये देने को तैयार हू, लेकिन मुझे 24 घटो का समय मिलना चाहिए। दीवानजी ने कहा "इनको समय दीजिए, कहा जाने वाले हैं, उत्तर नही दे सका तो दुनिया मे अपनी बदनामी नही होगी।"

सेठ साहब बग्गी मे बैठ कर घर की और रवाना हुए। रास्ते मे लोग मुजरा करने लगे लेकिन सेठ साहब गुमसुम थे। लोग सोचने लगे कि क्या बात हो गई? सम्राट के और इनके टक्कर हो गई या क्या हुआ, जो ये इतने गुमसुम है? घर पर पहुचा घर के सारे सदस्य विकल हो गये और पूछने लगे कि क्या हो गया? सेठ ने कहा कि क्या कहू बहुत विपत्ति आ गई है। राजा ने ऐसे प्रश्न पूछे है जिनका उत्तर नही दिया तो पाच करोड रुपये देने होगे। उत्तर तो मेरी जिन्दगी मे भी आयेगा नही। दो प्रश्नो के दस करोड रुपये देने पडेगे। सम्राट और भी प्रश्न कर सकता है। यह बात उसके सबके सामने कही। उसकी दृष्टि छोटी बहू की तरफ गई। सेठ कहने लगा कि उसने बहुत बुद्धिमत्ता की बात कही थी, लेकिन अपन सब उसकी मजाक उडाने लगे। सबने छोटी बहू की तरफ दृष्टि डाली। उस समय वह चाहती तो अपना आक्रोश निकाल सकती थी लेकिन उसने गभीरता से कहा 'ससुर साहब जो कुछ हुआ सो हो गया, अब चिता मत करो और सम्राट को कहला दो कि उस समय मैंने भोजन किया ही था कि आपने बुलवा लिया। मै जल्दी मे था मै समझ नही पाया। आपने ऐसा ना कुछ प्रश्न किया है उसका उत्तर तो मेरी छोटी बहू भी दे सकती है। कल दरबार मे आ कर वह उत्तर देगी।" सेठ ने सोचा छोटी बहू कहे वेसा ही करना चाहिए।

मोतीलाल सेठ ने सम्राट को वैसी ही सूचना कर दी। सूचना सुनकर सम्राट की सभा मे भी सन्नाटा छा गया। सब सोचने लगे कि मोतीलाल सेठ इतना होशियार हे कि इन प्रश्नो को ना कुछ समझता हे और ऐसे ना कुछ प्रश्नो का उत्तर स्वय देना उचित नही समझता हे इसलिए उत्तर छोटी बहू देगी। वह बहुत होशियार मालूम पडती हे।

सब लोग उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे दरबार म अच्छी सजावट थी। बहू को लाने के लिए अच्छा रथ भेजा गया। सेठ की पुत्रवधू ने सादी पोशाक पहनी। एक हाथ मे दूध का कटोरा लिया दूसरे हाथ मे घास का पुला लिया और लेकर राज दरबार म पहुची। रास्ते मे लोग सोचने लगे कि यह क्या करेगी, कुछ समझ मे नही आ रहा हे। सब मे एक जिज्ञासा बनी हुई थी। राज दरबार मे सम्राट आसपास सभासद बैठे हुए थे। द्वारपाल ने आकर सूचना दी 'मोतीलाल जी सेठ की पुत्रवधू आ गई हे सम्राट ने कहा आने दो । वह सभा के बीच मे पहुच गई। उसके एक हाथ म दूध का कटोरा और दूसरे हाथ मे घास का पूला था। इन दोनो चीजो को देख कर सम्राट ने पूछा– 'क्या आप ही मोतीलाल जी सेठ की पुत्रवधू हे? उसने कहा कि जी हा। क्या आप प्रश्नो का उत्तर देने के लिए आई ह? तो दूध का कटोरा ओर घास का पूला लेकर क्यो आई हो? इससे तो कचरा फेल जाएगा। दूध का कटोरा साथ क्यो लाई हो? क्या इतनी भूख लगती हे कि बीच मे दूध पिये बिन उत्तर नही दे सकोगी? उसने कहा कि हुजूर मतलब से लाई हू– विशेष उद्देश्य से ले कर आई हू।' सम्राट ने कहा– 'हमारा नया प्रश्न पेदा हो गया। तुम प्रश्नो का उत्तर देने आई हो तो फिर घास का पूला क्यो लाई? उसने कहा – हुजूर यदि कोई सत्य स्वरुप का प्रतिपादन करता हें तो उसको इनाम मिलता हे या दड? सम्राट कहने लगा कि इनाम मिलता हे। 'लेकिन हुजूर सत्य कटु होता ह आप कह तो कहू। सम्राट सोचने लगा कि यह छोकरी क्या कटु बात कहेगी। उसन कहा कहो क्या कहना चाहती हो। पुत्रवधू ने कहा घास का पूला तो मे दीवान साहब को समर्पित करने के लिए आई हू। सम्राट ने कहा दीवान मेरे राज्य की व्यवस्था करने वाला प्रधान हे। तुम उनको घास का पूला क्या भेट करना चाहती हो? सेठ की पुत्रवधू ने कहा 'हुजूर जो पशु होते हे उनको घास का पूला ही चाहिए। यह सुनते ही दीवान जी मे उत्तेजना आई। सम्राट भी कहने लगा क्या मेरे दीवान पशु हे? हुजूर पूछवाले पशु नही बिन पूछ के पशु हे। प्रजा का सचालन करने वाले दीवान को प्रजा क हित की बात करनी चाहिए। लेकिन जो दीवान प्रजा के हित मे नही सोच कर प्रजा को लूटने की बात सोचता ह तो मे उसको पशु के समान ही समझती हू। मेरे ससुर जी न आप का सम्मान किया था तो क्या अपनी सपत्ति लूटवाने के लिए किया था? दीवान ने सारा [illegible] अपमान सहन कर ला। वह मन मसोस कर चुप हो गया।

सम्राट ने पूछा कि दूध का कटोरा क्या लाइ हो? हुजूर आपको पिलाने के लिए। आप बच्चे के तुल्य हे जो बच्चा होता ह वह स्वय की बुद्धि से सोच नहीं पाता। आप भी दीवानजी के कहने के अनुसार कार्य करते हे इसलिए मे आपको बच्चा समझती हू, आप दूध पीकर बुद्धि का [illegible] [illegible]

अपनी बुद्धि से काम करिये दीवानजी की खोटी सलाह को मत मानिये।"

दीवानजी कहने लगे अच्छा तुम अपनी सीख रहने दो प्रश्नो का उत्तर दो।" उसने कहा 'हुजूर प्रश्नो का उत्तर देने के लिए ही आई हू। आपका पहला प्रश्न क्या है? प्रति पल प्रति क्षण क्षीण होने वाली वस्तु क्या हे। हुजूर ऐसी वस्तु आपकी आयुष्य है। प्रत्येक मनुष्य की आयुष्य प्रति पल ओर प्रति क्षण क्षीण होती ही चली जा रही है।"

"दूसरा प्रश्न हे प्रति पल ओर प्रति क्षण बढता रहे ऐसा कोन–सा तत्व है?"

"हुजूर, आपकी तृष्णा प्रति पल प्रति क्षण बढती जा रही है।' सम्राट कहने लगे कि आपने तो कमाल कर दिया दोनो प्रश्नो का उत्तर सही दे दिया।

दीवान जी सम्राट को कहने लगे कि ऐसी नारी जिसके घर मे उसका धन हाथ नही आ सकता। उसने आपको बच्चा और मुझे बिना पूछ का पशु बता दिया। अब इसको जाने दीजिये। आगे ओर सोचेगे। सेठ की छोटी पुत्रवधू विजय पा कर अपने घर चली गई।

भगवान् कहते है कि यह तो आपका शरीर रुपी घर है उसमे अमूल्य सम्पत्ति भरी है। इस शरीर रुपी घर को प्रदर्शन मे लगा दिया तो क्या होगा? इसको धर्म साधना मे सत्कार्यो मे लगाइये। निशल्य होकर ध्यान समाधि मे विचरण करिये। यही जीवन की सर्वोत्तम उपयोगिता है। समायिक साधना मे ध्यान के पूर्व विसल्लीकरणेण से यही सकेत दिया गया है कि वैभव मे ममत्व का शल्य भी निकाल दिया जाए।

बन्धुओ विधि से की जाने वाली सामायिक से जीवन मे समता रस उतर आता है और जिसका जीवन समता रस से ओत–प्रोत हो जाता है वह व्यक्ति जन–मन का प्रिय बन जाता है। मगलकारी बन जाता है। तात्पर्य यह है कि सामायिक साधना से जीवन मगलकारी बनता हैं आज आप सन्त सातियो के दर्शन को मगलकारी मानते है, सन्त सातियो को प्रिय क्यो समझते है? आपको मालूम है कि सत मोह, माया और तृष्णा का परित्याग करके अपनी साधना की स्थिति मे चल रहे है इसलिए उनको आप मगलकारी समझते हैं। इसीलिए भगवान ने चार शरणा बताये है। अरिहन्त का शरणा सिद्धो का शरणा साधु का शरणा दया धर्म का शरणा। इनके शरण मे पहुचने से जीवन की क्या स्थिति बनती है? ऐसे मगलकारी सत सती कहा मिलेगे, जिनको किसी बात का लालच नही, जो अपनी धर्मकारणी को नही बेचते और प्रदर्शन नही करते उनका जीवन सद्गुणो से भर जाता है। वही व्यक्ति जीवन मे मगल प्रसग उपस्थित कर सकता है।

दिनाक १६-७-८४
बोरीवली (बम्बई)

८. सामायिक भूमिका शुद्धि

अनत उपकारी प्रभु महावीर की देशना किवा अतिम तीर्थंकर सर्वज्ञ सर्वदर्शी वीतराग देव का उपदेश आप अभी वीतराग वाणी रुप मे मुनिश्रीजी से सुन गये हैं। उच्च कोटि की वीतराग वाणी का जो प्रसग आप सुन रहे हैं। वह हे उच्च कोटि के श्रावक सुवाहु कुमार का वर्णन। सुवाहु कुमार भी एक अद्वितीय विशिष्ट गृहस्थ था, जिसके रुप ओर लावण्य सवधी जिज्ञासा अनेक व्यक्तियो को हुई और उनके मन मे अनेक तरह के सकल्प विकल्प उठे कि सुवाहु कुमार ने ऐसा कोन-सा कार्य किया जिससे मनुष्य जीवन मे- मनुष्य तन मे आने के साथ ही साथ उन्हाने इतनी कमनीयता, इतनी कोमलता प्राप्त की। इस विषयक प्रश्न ओर उत्तर तो आप सुखविपाक के माध्यम से श्रवण करगे ही। सुखविपाक का स्वरुप वीतराग देव के मुखारबिद से प्रवाहित हुआ जिसमे सुवाहु कुमार जेसे उच्च पात्र का निर्वचन हे। उसी सदर्भ मे श्रावक के १२ व्रत का उल्लेख भी हुआ है और इसी उल्लेख के अतर्गत ९वे व्रत सामायिक का प्रतिपादन हुआ हे। इस सामायिक रुपी शिक्षा व्रत का वीतराग देव ने किस सूक्ष्मता के साथ प्रतिपादन किया यह विमर्शनीय हे। यदि इस सामायिक की विधि ठीक तरह से साथ ली जाती है तो यह मानवीय पर्याय का जीवन आनद से भर जाता है।

भव भ्रमण-सामायिक के अभाव में

विधिवत् सामायिक की आराधना नही करने के कारण ही यह आत्मा अनादिकाल से इस चतुर्गति ससार मे परिभ्रमण कर रही हे। ऊची-नीची परिस्थिति का सामना कर रही हैं। दिन-रात कितना सक्लेश हे? कितनी अशाति हे? मस्तिष्क मे कितना टेशन है? इसका उल्लेख सागोपाग रुप मे करना शक्य नही ह। मनुष्य स्वय अपने भीतर की सूक्ष्म स्थितिया को नही समझ पाता। वह बडी-बडी बात ही समझ पाता हे ओर बडी-बडी बात भी दुखित हो कर मन का हल्का करने के लिए दूसरो क सामने रख देता है।

प्रभु महावीर ने जो कुछ भी सामायिक का या सामायिक की विधि का स्वरुप बताया है उस विधि सबधी कुछ विवेचन आप सुन गये हे। उसी सदर्भ मे तस्सउत्तरी पाठ का कुछ विवेचन भी आपके समक्ष रखा गया। इस बात का सदर्भ

भी दे गया कि तीर्थकरो ने भी इस औदारिक शरीर से साधना की ओर इस शरीर का भरणपोषण अन्न, जल आदि से किया। यह शरीर विधिवत् उपयोग मे आया तो आत्म साधना सुदर तरीके से बन सकी। शरीर की अविधि से मन की अविधि बनती है और इस मन की अविधि मे आत्मा स्वत अपने निज स्वरुप को समझ नही पाती। इस शरीर का सदुपयोग क्या हे? सदुपयोग करने के उद्देश्य से जिनका सामायिक साधना मे प्रवेश करने का प्रयास अत करण पूर्वक है वे पुरुष सामायिक के पाठ का उच्चारण करने से पहले सामायिक–योग की भूमिका तेयार करते है।

भूमिका-शुद्धि

किसान खेत मे बीज डालता हे। लेकिन सहसा वह बीज नही डालता। गर्मी के समय उस खेत मे इकट्ठी हुई भीतर की गदगी को उडाता हे। सूर्य की किरणे उसमे मददगार बनती है। जब खेत जोतता है तो उसमे जितना कूडा करकट है उसको निकाल कर बाहर फेकता हे, उसके पश्चात् जैसे ही वर्षा होती है उस खेत मे बीज बो देता है। वह किसान खेती करने मे अधिक सफल होता है।

वैसे ही यह आध्यात्मिक जीवन की खेती है। किसान तो बाहर बीज बोता है, लेकिन भव्यजन इस जीवन रुपी क्षेत्र मे मन मे बीज बोते हैं। मन मे बीज तभी बो सकते हैं जब कि इस मन को पहले साफ सुधरा कर लिया जाता है। मन रुपी जमीन मे जो कूडा करकट है उसमे हलका हाकने के तुल्य ज्ञान और श्रद्धा के बल से उसकी दुर्गन्ध उडाते हैं, विकारो को निकाल फेकते है, पाप की आलोचना करके शुद्धिकरण करते है और उसके पश्चात् जिसको प्राप्ति करने के लिए वे सामायिक करते है। इसका उल्लेख इसकी विधि मे प्राप्त होता है।

लोगस्स बनाम लक्ष्य स्थिरता

जब तस्सउत्तरी के पाठ के अतिम वाक्य का उच्चारण करते है तब "अप्पाण वोसिरामि" कहते हैं। जिसका अर्थ है– इस शरीर का ध्यान छोड कर मैं अदर मे प्रवेश करता हू। अदर मे क्या दिखता है, किसका चितन करता है इसे आप तस्सउत्तरी पाठ मे सुन गये है। इसमे मन का मैल धोने की प्रक्रिया बताई गई है। यदि इस धुलाई मे मन स्वच्छ हो गया तो मन मे सामायिक का लक्ष्य निर्धारित होता है। उसे निर्धारित करने के लिए लोगस्स के पाठ का उच्चारण किया जाता है।

सामायिक साधना मे प्रवेश करते समय जिन आगमिक पाठो के उच्चारण एव कायोत्सर्ग का विधान है उन्हे भी कुछ समझ लेना आवश्यक है। इच्छाकारेण

एव तस्सउत्तरी के पाठ का प्रकट उच्चारण किया जाता हे जिसका स्पष्टीकरण म पूर्व मे कर चुका हू। इसके पश्चात कायोत्सर्ग किया जाता हे कायोत्सर्ग मे जिस पाठ का उच्चारण किया जाता ह उस विषय मे मुख्यतया दो परपराए चल रही है– एक परपरा मे कायोत्सर्ग म इच्छाकारेण का पाठ गिना जाता है जब कि दूसरी परपरा कायोत्सर्ग म लोगस के पाठ को स्वीकार करती हे। यद्यपि प्रथम परपरा भी औचित्य के बहुत निकट हे और यही बहु प्रचलित भी है तथापि दूसरी परपरा का अधिक उपयोगी इसलिए कहा जा सकता हे कि इच्छाकारेण का प्रकट म उच्चारण कर लिया जाता हे। अत ध्यान मे पुन उसका पाठन करके आगे के लक्ष्य निर्धारण की दृष्टि से लोगस्स का पाठ गिनना चाहिए। क्योकि इस मे साधना करने वाले साधक का लक्ष्य निर्धारित होता हे। म यह सामायिक की साधना कर रहा हू। इस ध्यान के पश्चात म सामायिक व्रत ग्रहण करने के पाठ का उच्चारण करूगा। इससे पहले मुझे सामायिक किस लिए करनी हे इसका निश्चय करना है तो वह निश्चय लोगस्स से हो जायेगा। लोगस्स मे सिद्ध भगवतो की स्तुति है। वसे तो चौवीसो तीर्थंकर सब मोक्ष मे पधार गये। चौवीसो के नाम इस लोगस्स म भूतपूर्व न्याय की दृष्टि से हे। जसे कभी कोई व्यक्ति किसी पद पर था ओर अब उससे विलग हो चुका है तो इसके पश्चात् उसे क्या कह कर पुकारेगे? यह भूतपूर्व राष्ट्रपति है या अमुक हे। वैसे ही २४ तीर्थंकरो का गुणगान लोगस्स मे हुआ है। स्तुति किसकी करना? जिन्होने आठो कर्मो का क्षय करके मोक्ष प्राप्त कर लिया है परम शाति प्राप्त कर ली हे सिद्ध स्वरुप प्राप्त कर लिया ह ऐसे सिद्ध भगवतो की स्तुति गान करने के लिए लोगस्स का उपयोग हुआ है। धर्म तीर्थ की स्थापना करने वाले वे तीर्थंकर कसे है? तो चोवीसो के नाम इसमे गिना दिये है। वसे लोगस्स स्तुति के रुप म अनादिकाल से चल रहा ह। किंतु पूर्व मे उसका नाम सस्तव के रुप म था। वर्तमान म चोवीस तीर्थंकरो से नामाकित लोगस्स का जो रुप है वह भद्रबाहु स्वामी की रचना मानी जाती है। उसका शब्दश अर्थ सहित स्वरुप समझने का प्रयास कर।

लोगस्स	–	लोक के
उज्जोयगरे	–	उद्योत करने वाले
धम्मतित्थयरे	–	धर्म तीर्थ के कर्ता
जिणे	–	राग व द्वेष के विजेता
अरिहंते	–	अरिहंत
कित्तइस्सं	–	कीर्तन स्तुति करूंगा
[illegible]	–	[illegible]

अर	–	अरनाथ को
च	–	और
वंदामि	–	वंदना करता हूँ
रिट्ठनेमि	–	अरिष्टनेमि को
पास	–	पार्श्वनाथ को
तह	–	तथा
वद्धमाण	–	वर्द्धमान को
च	–	और
एव	–	इस प्रकार
मए	–	मेरे द्वारा
अभित्थुआ	–	स्तुति किए गए
विहुरयमला	–	पाप मल से रहित
पहीणजरमरणा	–	बुढ़ापे व मृत्यु से दूर
चउवीसपि	–	चौबीसों ही
जिणवरा	–	जिनवर
तित्थयरा	–	तीर्थंकर
मे	–	मुझ पर
पसीयन्तु	–	प्रसन्न हों
कित्तिय	–	कीर्तित स्तुति पाए हुए
वंदिय	–	वंदित
महिया	–	पूजित
जे	–	जो
ए	–	ये
लोगस्स	–	लोक में

का प्रकाश अजर, अमर ओर स्थाई हे, सदा सदा के लिए हे।

ऐसा उज्ज्वल स्वरुप मुझे प्राप्त करना हे। सदा सदा के लिए उज्ज्वल स्वरुप के तुल्य बनना है। इस सब को पाने के लिए सवसे प्रथम सीढी हे– सामायिक। ऐसी सामायिक की विधि मे ऐसे उद्देश्य का चितन इस ध्यान मे किया जाता है।

अधकार का प्रतीक-जड का ध्यान

कभी व्यक्ति सोचता है कि मे ध्यान करने के लिए किसका प्रतीक सामने रखू। अमुक पदार्थ को देखकर ध्यान करु जिससे मन एकाग्र हो जाए। यह बात वही सोच सकता है जिसने सामायिक के उद्देश्य को नही समझा हे। जो आत्मकल्याण का वास्तविक मर्म नही समझता हे। इस ध्यान की साधना करते समय शरीर का ध्यान भी छुडा दिया गया है। क्यो छुडाया गया? क्योकि शरीर नाशवान है। यदि तुम्हे नाशवान बनना है तो शरीर का ध्यान करो। नाशवान का अर्थ आप समझ गये होगे। जैसे कपूर की टिकिया को हाथ मे पकड कर रखते है तब भी कपूर उड जाता है। वैसे ही शरीर भी उड जाता है। आपको यह शरीर इतना अच्छा लगता है, लेकिन शरीर जीर्ण शीर्ण हो कर नष्ट होता है। ससार के जितने पदार्थ हैं, आत्मा को छोड कर जितना स्खन्ध रुप मैटर है, वह सब बिखरने वाला है। यदि इन तत्वो का ध्यान किया तो हम बिखरते चले जायेगे। शरीर के अतिरिक्त पदार्थो का ध्यान करने का तात्पर्य यह हुआ, हम अन्धकार मे जा रहे है, शरीर प्रकाशवान है या अन्धकार युक्त है? प्रकाशवान पदार्थ है आत्मा। इसके अतिरिक्त किस मे प्रकाश है? सूर्य मे प्रकाश है, लेकिन सूर्य का प्रकाश नाशवान है। इसमे गर्मी है। शरीर को सुखाता है। लेकिन आत्मा रुपी पदार्थ अपने मौलिक रुप मे विशुद्ध एव शात है, सदा सदा के लिए रहने वाला है। इसलिए आपको यदि सदा सदा के लिए कायम रहना है, सदा सर्वदा शाति का अनुभव करना है, सदा सुखी रहना है तो सामायिक हेतु विधिवत् ध्यान करे। सिद्ध भगवन्तो के विशेषण का चितन करके यह सोचे कि जैसे सिद्ध भगवान का स्वरुप है वैसा ही मै भी बन रहा हू, इसीलिए सामायिक साधना है और साध्य है सिद्ध जैसा बनना वैसा ध्यान करके बैठेगे तो अशान्ति दूर हो जाएगी।

सामायिक साधना और देव

स्वर्ग मे रहने वाले देवो का शरीर मनुष्यो से अधिक चमकीला है। कितु उन देवो को साधना करने का प्रसग नही आता। वे ऐसा ध्यान नही कर सकते। सामायिक मे आप जो लोगस्स का ध्यान करते है वैसी साधना देव नही कर सकते। वैसी साधना का अवसर मनुष्य को मिला है। आप कितने भाग्यशाली हैं।

चौबीस घंटों में कम-से-कम ४८ मिनिट विधि से सामायिक साधना में बैठने का प्रसंग उपस्थित करते हैं और उस अविनाशी स्वरुप का चिंतन करते हैं तो आपके जीवन की गति अविनाशी स्वरुप की ओर होगी।

देवों की बात कहूं तो सर्वार्थसिद्ध विमान के देव ३३ सागरोपम तक उसमें रहेंगे। आखिर में उनको नीचे आना पड़ेगा और नीचे के देव और भी कम समय तक वहां रहेंगे उनका भी ध्यान चलता है लेकिन विधिपूर्वक वे सामायिक का ध्यान नहीं कर सकते। उनका ध्यान होता है रत्नों की तरफ प्रकाश वे पसंद करते हैं। किंतु आत्मा का नहीं रत्नों का। स्वर्ग में बड़े-बड़े हीरे मोती लटकते हैं उनसे बहुत प्रकाश आता है। देव उन हीरा मोतियों को बहुत पसन्द करते हैं और कामना करते हैं कि ये बहुत अच्छे हीरे-मोती हैं ये मुझसे छूटे नहीं विलग नहीं हों। इसका परिणाम यह होता है कि आयुष्य बंध होते समय हीरों में ध्यान रहने के कारण वे पृथ्वी काय के जीव बन जाते हैं कुछ एकेंद्रिय में वनस्पति या जल के जीव बन जाते हैं। आप भाग्यशाली हैं इसलिए आपको देवानुप्रिय कहते हैं अर्थात देवताओं के प्रिय।

क्या कहूं दिल में बहुत बात आती है लेकिन दृष्टांत दे कर कहूंगा तो आपका समय अधिक चला जायगा फिर आप कहेंगे कि चोपी नहीं चली क्योंकि कई भाई चोपी से ज्यादा समझते हैं भावात्मक बातों से कम समझते हैं। मैं चोपी भी लेना चाहता हूं। आपको कैसा बनना है? यह आप सोचें। इस आत्मा का ध्यान विधि से सामायिक करने की ओर चला जाए तो निहाल हो जाए। वह देवों से भी बढ़ कर हो जाय। क्योंकि देव सामायिक नहीं कर सकते। जिसके मन में सदा धर्म रहता है उसके चरणों में देवता भी नत मस्तक होते हैं। ऐसी स्थिति में श्रावक श्राविकाएं सामायिक साधना को ले कर चलें महान पुरुषों का चिंतन करें। सामायिक रस की एक-एक बूंद हृदय में आ गई तो आगे बढ़ते चले जायेंगे। जीवन समता रस से भरा जायगा। विषमता जन्य समस्त समस्याएं सहज ही समाहित हो जायगी।

दिनांक २०-७-८८
दाणीपली बदई

९. सामायिक साधना : सावद्ययोग का त्याग

वर्तमान मे अतिम तीर्थंकर प्रभु महावीर का शासन चल रहा हे। प्रभु ने अपने शासन की समुज्जवलता को अनवरत प्रज्ज्वलित रखने के लिए जो उपदेश दिया वह आज के भव्यजनो के लिए अतीव हितावह है। प्रभु ने साधना मार्ग का प्रतिपादन केवलज्ञान की उपलब्धि के पश्चात किया। केवल ज्ञानी के लिए सब कुछ प्रत्यक्ष हो जाता है। ज्ञान यह अरुपी स्वरुप वाली आत्मा का गुण हे। और जिसने अरुपी को देख लिया, वह समस्त विश्व को जान लेगा। अरुपी को जान लिया तो रुपी को अवश्य जानेगा। रुपी का जानने वाला अरुपी को जाने यह निश्चित नही।

रुप से अरुप की ओर

रुपी की शास्त्रीय परिभाषा है– जिसमे गध, रस, वर्ण और स्पर्श हो वह रुपी है, जिसमे गध, रस आदि इन्द्रियाग्राह्य गुण न हो वह अरुपी है। धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय आदि अरुपी है। आत्मा को भी इस रुपी अवस्था से अरुपी अवस्था मे जाना है। हमे रुपी अवस्था मे गति करते–करते बहुत समय बीत गया, अब भी बीतता चला जा रहा है।

रुपी से तात्पर्य, दृश्य पदार्थ वर्ण, गध, रस वालो से है। इस आत्मा ने जिन–जिन पर्यायो को अगीकार किया वे शरीर पर्याय रुपी ही है।

सबसे पहले मनुष्य का शरीर ले, वह वर्ण, गध रसवाला है, अत वह रुपी है। पशु का शरीर ले वह भी वर्ण गध रसवाला। अत रुपी है। आगे एकेद्रिय, बेइन्द्रिय, तेइद्रिय चौरिंद्रिय, पचेद्रिय के जीव, नारकी के जीव वर्ण, गध, रसवाले है वे भी रुपी है। भगवान से गौतम ने प्रश्न किया कि आत्मा रुपी है या अरुपी तो भगवान ने उत्तर दिया "हे गौतम आत्मा रुपी भी है, अरुपी भी है"।

भगवान ने ६ काया के जीव बताये– पृथ्वी पानी, अग्नि, हवा, वनस्पति और चलते फिरते जीव जिन्हे आप देख सकते है, वह सब रुपी है। स्वरुप मे रमण करना यह आत्मा का अरुपी स्वभाव है। जो साधक रुपी तक ही सीमित रह जाता है, सामान्य से ज्ञान से सतुष्टि अनुभव करता है कि मैने ज्ञान प्राप्त कर लिया, मै ज्ञानी हो गया वह व्यक्ति वही अटक जायेगा। उसका समस्त विकास अवरुद्ध

हो जायगा। रूपी का ज्ञान इसलिए करना है कि रूपी से अरूपी की ओर जाना है। इसलिए नहीं कि हम इतने तत्त्वों की जानकारी रखते हैं। विद्वान अनेक तत्त्वों की जानकारी रखने वाले हैं। लेकिन उस जानकारी से आगे का कदम क्या है इसे यदि वे जानते हैं तो इस जानकारी में सार है। यदि आगे का ध्यान नही है तो जैसी दूसरे विषयों की जानकारी है वैसी ही चार गतियों की जानकारी हो जायगी। इस दृष्टि से ३२ शास्त्रों में जो कुछ कहा गया है चार गति के संबंध में बताया गया है रूपी शब्द से संबंधित जितना ज्ञान है वह ज्ञान मनुष्य के लिए जानकारी देता है और यह कहता है कि आगे बढ़ो। लेकिन जिन साधको के मन में इस बात से तृप्ति आ गई कि मैंने ३२ शास्त्र जान लिये हैं अब मैं शास्त्र की भाषा में श्रुत केवली हो गया हूँ। अब आगे करने धरने का कुछ नही है तो वह व्यक्ति सम्यग् ज्ञान की उपलब्धि नहीं कर सकता। उसने रूपी पदार्थों का ज्ञान तो पाया है लेकिन रूपी से अरूपी की ओर जाने का ज्ञान उसमें नहीं है।

मैं यह सूक्ष्म बात आपके सामने रख रहा हूँ, आप कहेंगे कि महाराज यह क्या कह रहे हैं? हमारी समझ में नहीं आती। लेकिन ये बात ध्यान में नहीं ले पायेंगे तो आगे नहीं बढ़ पायेंगे। जिस विद्यार्थी को वर्णमाला का प्रारंभिक ज्ञान भी नहीं है तो वह एम.ए. का अध्ययन नहीं कर सकता।

भगवान ने रूपी–अरूपी के संबंध में सुंदर उपदेश दिया। लेकिन आज ये बात गौण हो गई। साधना करनेवालों के लिए जो संदेश दिया है वह भी महत्त्वपूर्ण है किंतु आज व्यक्ति उसके मूल तक नहीं पहुंच पा रहा है।

मूल को देखें

भी भौतिक शरीर तक सीमित है कुछ मनोवैज्ञानिक अभौतिकता की और आगे बढने का प्रयास कर रहे है, अर्थात् रुपी से अरुपी की ओर अन्वेषण के रुप मे चल रहे है। वे कितना अन्वेषण करेगे और कितने आगे बढेगे यह भविष्य की बात है। आपके समक्ष अन्वेषण का सुगम रास्ता है। नये सिरे से खोज करने की जरुरत नही। आपको इसके सहारे आगे बढना है। आगे बढने का मार्ग इतना सुगम बता दिया है कि उसी हाई वे पर चलते चले। सडक छोडने की आवश्यकता नही। लेकिन सडक पर चलने वालो को सावधानी रखने की आवश्यकता है कि कही एक्सीडेट न हो जाए। यदि सावधानी रखते है तो गतव्य स्थान पर पहुच जायेगे।

शरीर शुद्धि ही नहीं मन शुद्धि भी

प्रभु महावीर ने इस जीवन के लिए साधना का परिपूर्ण मार्ग रखा है। रुपी से ऊपर उठकर अरुपी की तरफ बढने का इशारा किया हे ओर वह इशारा सामायिक साधना के रुप मे दिया है। सामायिक साधना कैसे और किस रुप मे होनी चाहिए, इस विषय की जानकारी आवश्यक है। आप जो समझ रहे है वह रुपी तक की सीमित साधना है। हम सामायिक ले कर बैठ गये एक आध भजन बोल दिया, माला फेर ली, समय आने पर सामायिक पाल कर चले आये और मन को सन्तुष्ट कर लिया कि मैने सामायिक कर ली है। यह तो आवश्यक है ही, इसकी पोषाक मे बैठना भी नितात आवश्य है, लेकिन पोषाक मे बैठ कर ४८ मिनिट बिता दिये इतने मात्र से सन्तुष्टि नही करनी चाहिए। इसमे गहराई तक जाना चाहिए। भगवान ने निर्देशन मे कमी नही रखी है। आपको सामायिक की विधि बताने का प्रयास चल रहा है। नवकारमन्त्र, तिखुत्तो का पाठ, इरियावहिय का पाठ इनका कुछ स्वरुप आपके समक्ष रख दिया अब आगे लोगस्स का ध्यान क्यो करना चाहिए और कहा तक पहुचने का लक्ष्य है इसे समझे। जहा वैदिक सस्कृति और अन्य सस्कृति ने शरीर शुद्धि पर विशेष ध्यान दिया वहा तीर्थकर प्रभु ने कहा कि केवल शरीर शुद्धि से अतर की शुद्धि नही कर सकते। कृष्ण ने कहा कि शरीर शुद्धि के साथ-साथ अतर आत्मा को भुला नही सकते। जब कि वीतराग प्रभु ने कहा कि मन की शुद्धि के बिना इस रुपी शरीर की शुद्धि का सदुपयोग नही कर सकते। इस शरीर को कितना ही नहलावे-धुलावे यह ऊपर की धुलाई हे, लेकिन अतरात्मा की धुलाई करके शुद्धिकरण करे। चमडी के नीचे क्या भरा है आप इसे देखकर राग द्वेष की परिणति मे चले जाते है तो सामायिक मे रस कैसे आयेगा कुदरती पदार्थ के रुप मे घृणा करते है। जहा बाहर से खून देख लिया तो नाक भौ सिकोडेगे किंतु इस शरीर के भीतर मे खून बह रहा है ख्याल नही करेगे तो आप वीतराग देव के मर्म को नही समझ सकेगे। शरीर पर अशुचि

पत्ता भी लग गया तो वह भी चलपता नही है। उसे अलग कर लिया जाए किन्तु मन को धोने की चेष्टा करे। उसको धोने के लिए इरियावहिय और तस्स उत्तरी म पावधान है उसे स्पष्ट कर दिया गया है। तस्स उत्तरी के पाठ मे कहा तक धुलाई होती है इसका वर्तमान आधार क्या ह इस पर प्रकाश डाला गया था।

शल्य रहित ध्यान

वास्तव मे मन का शल्य नही निकलता तब तक मन की धुलाई नही हो सकती। इसे साफ करने की विधि यह है कि किस कारण से यह मन का शल्य चल रहा ह उस कारण को बाहर निकाला जाए। मन मे शल्य इसलिए चल रहा है कि गुप्त रूप से पाप हो गया उसको प्रगट करने मे सकोच हो रहा है लज्जा अनुभव करते है। वह कदाचित आम जनता म प्रगट करने म लज्जा अनुभव करता है तो कर सकता है लकिन जहा शल्य निकालना आवश्यक ह वहा लज्जा का अनुभव काम नही दता। यदि अभी नही निकाला तो जिन्दगी भर शल्य नही निकलेगा। गुप्त पाप तनाव पैदा करेगा।

कदाचित् वह ध्यान साधना करने बठे तो समझ नही पाएगा कि ध्यान किस चिडिया का नाम है। क्योकि अदर का शल्य रह-रह कर सतायेगा। चाहे उपर से कितनी ही सुन्दर मुद्रा बनावे जब तक अदर ठीक नही बनेगा तब तक शरीर की स्थिरता ठीक नही बनेगी। इसलिए शल्य निकालने का विधान किया गया है। उपयुक्त समय म इसे निकाल दना चाहिए।

भी भौतिक शरीर तक सीमित है कुछ मनोवैज्ञानिक अभौतिकता की और आगे बढने का प्रयास कर रहे है, अर्थात् रुपी से अरुपी की ओर अन्वेषण के रुप मे चल रहे है। वे कितना अन्वेषण करेगे और कितने आगे बढेगे यह भविष्य की बात है। आपके समक्ष अन्वेषण का सुगम रास्ता है। नये सिरे से खोज करने की जरुरत नही। आपको इसके सहारे आगे बढना है। आगे बढने का मार्ग इतना सुगम बता दिया है कि उसी हाई वे पर चलते चले। सडक छोडने की आवश्यकता नही। लेकिन सडक पर चलने वालो को सावधानी रखने की आवश्यकता हे कि कही एक्सीडेट न हो जाए। यदि सावधानी रखते हैं तो गतव्य स्थान पर पहुच जायेगे।

शरीर शुद्धि ही नहीं मन . शुद्धि भी

प्रभु महावीर ने इस जीवन के लिए साधना का परिपूर्ण मार्ग रखा है। रुपी से ऊपर उठकर अरुपी की तरफ बढने का इशारा किया है और वह इशारा सामायिक साधना के रुप मे दिया है। सामायिक साधना कैसे और किस रुप मे होनी चाहिए, इस विषय की जानकारी आवश्यक है। आप जो समझ रहे हैं वह रुपी तक की सीमित साधना है। हम सामायिक ले कर बैठ गये, एक आध भजन बोल दिया, माला फेर ली, समय आने पर सामायिक पाल कर चले आये और मन को सन्तुष्ट कर लिया कि मैने सामायिक कर ली है। यह तो आवश्यक है ही, इसकी पोषाक मे बैठना भी नितात आवश्य है, लेकिन पोषाक मे बैठ कर ४८ मिनिट बिता दिये इतने मात्र से सन्तुष्टि नही करनी चाहिए। इसमे गहराई तक जाना चाहिए। भगवान ने निर्देशन मे कमी नही रखी है। आपको सामायिक की विधि बताने का प्रयास चल रहा है। नवकारमन्त्र, तिखुत्तो का पाठ, इरियावहिय का पाठ इनका कुछ स्वरुप आपके समक्ष रख दिया अब आगे लोगस्स का ध्यान क्यो करना चाहिए और कहा तक पहुचने का लक्ष्य है इसे समझे। जहा वैदिक सस्कृति ओर अन्य सस्कृति ने शरीर शुद्धि पर विशेष ध्यान दिया वहा तीर्थकर प्रभु ने कहा कि केवल शरीर शुद्धि से अतर की शुद्धि नही कर सकते। कृष्ण ने कहा कि शरीर शुद्धि के साथ-साथ अतर आत्मा को भुला नही सकते। जब कि वीतराग प्रभु ने कहा कि मन की शुद्धि के बिना इस रुपी शरीर की शुद्धि का सदुपयोग नही कर सकते। इस शरीर को कितना ही नहलावे-धुलावे यह ऊपर की धुलाई हे, लेकिन अतरात्मा की धुलाई करके शुद्धिकरण करे। चमडी के नीचे क्या भरा हे आप इसे देखकर राग द्वेष की परिणति मे चले जाते है तो सामायिक मे रस केसे आयेगा कुदरती पदार्थ के रुप मे घृणा करते है। जहा बाहर से खून देख लिया तो नाक भा सिकोडेगे कितु इस शरीर के भीतर मे खून बह रहा है ख्याल नही करेगे तो आप वीतराग देव के मर्म को नही समझ सकेगे। शरीर पर अशुचि

पदार्थ लग गया तो वह भी क्लपता नही है। उसे अलग कर लिया जाए किन्तु मन को धोने की चेष्टा करे। उसको धोने के लिए इरियावहिय और तस्स उत्तरी मे पावधान है उसे स्पष्ट कर दिया गया है। तस्स उत्तरी के पाठ से कहा तक धुलाई होती है इसका वर्तमान आधार क्या है इस पर प्रकाश डाला गया था।

शल्य रहित ध्यान

वास्तव मे मन का शल्य नही निकलता तब तक मन की धुलाई नही हो सकती। इसे साफ करने की विधि यह है कि किस कारण से यह मन का शल्य चल रहा है उस कारण को बाहर निकाला जाए। मन मे शल्य इसलिए चल रहा है कि गुप्त रुप से पाप हो गया उसको प्रगट करने मे सकोच हो रहा है लज्जा अनुभव करते है। वह कदाचित् आम जनता मे प्रगट करने मे लज्जा अनुभव करता है तो कर सकता है लेकिन जहा शल्य निकालना आवश्यक है वहा लज्जा का अनुभव काम नही देता। यदि अभी नही निकाला तो जिदगी भर शल्य नही निकलेगा। गुप्त पाप तनाव पैदा करेगा।

कदाचित् वह ध्यान साधना करने बैठे तो समझ नही पाएगा कि ध्यान किस चिडिया का नाम है। क्योकि अदर का शल्य रह–रह कर सतायेगा। चाहे उपर से कितनी ही सुन्दर मुद्रा बनावे जब तक अदर ठीक नही बनेगा तब तक शरीर की स्थिरता ठीक नहीं बनेगी। इसलिए शल्य निकालने का विधान किया गया है। उपयुक्त समय मे इसे निकाल देना चाहिए।

जैसे कोई गुप्त रोग का मरीज डाक्टर के पास जाता है और उसे अपने रोग की हालत ठीक तरह से बयान नही करता तो डाक्टर उसका इलाज कैसे कर सकता है? यदि दर्द है पेट मे और बताता है माथे का, तो डॉ उसे माथे के रोग की दवा देगा और उससे और दूसरे रोग पैदा हो जायेगे। यदि वह रोगी स्पष्ट रुप से डाक्टर को बता देता है कि मुझे अमुक गुप्त रोग है, तो वह डाक्टर अन्य कोई प्रयोग नही करेगा और ठीक औषधि देगा। सही निदान हो जाने से उसका गुप्त रोग मिट जाएगा। इसी तरह से जब तक गुप्त पाप प्रगट नही किया जावेगा तब तक उसका शल्य निकालने का उपाय भी ठीक तरह से नही हो सकेगा।

'तस्सउत्तरीकरणेण पायच्छित्त करणेण। विसोहि करणेण
विसल्ली करणेण पावाण कम्माण निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्ग।

यह तस्सउत्तरी की पाटी है। जब तक विसल्ली करणेण अर्थात शल्य रहित नही बनेगे नही कहेगे तब तक आत्मा को अरुपी की ओर जाने का योग नही मिलेगा। आपने विसल्ली करणेण की पाटी का उच्चारण कर दिया कितु मन से प्रायश्चित करने का कार्यक्रम नही किया तो भी कोई अर्थ सिद्ध नहीं होगा।

इधर आप "ठाणेण मोणेण झाणेण वोसिरामि' का पाठ बोल रहे है और उधर आपकी दृष्टि कभी इधर और कभी उधर जा रही है, तो यह क्या सूचित कर रहा है? यह सूचित कर रहा है कि शरीर को तो एक स्थान पर रोक लिया है लेकिन मन का कुछ समय के लिए भी कन्ट्रोल नही कर पाये है। आपको ज्ञात नही होता है कि आपका मन इधर-उधर कहा घूम रहा है। वह यह भी ध्यान रख रहा है कि कौन क्या कर रहा है, क्या नही? यह ख्याल रखने वाला कौन है? क्या आखे ख्याल रख रही है? यदि आखे ख्याल रखती है तो आखे बन्द करके बैठे रहे। यदि आपका ध्यान काम की तरफ है तो कितना ही परिचित व्यक्ति आया है तो भी उसको पहचान नही पायेगे क्योकि मन दूसरी तरफ है। आप उसका आदर नही करेगे और वह सोचेगा कि मै इनके पास गया, लेकिन इसने मुझसे बात तक नही की। पर बोले कैसे, देखे तब न। आखे देख रही है। लेकिन मन नही देख रहा है। यह आख घूम रही है, देख रही है, रुपी पदार्थ देख रही है, लेकिन मन घूम रहा है या डोल रहा है। घडी मे चाबी भरी हुई है इसलिए पेन्डुलम हिल रहा है। वैसे ही मन मे पाप की चाबी भरी हुई है तो वह डोल रहा है। मन के डोलने की स्थिति बता रही है कि मन मे सशय है वह सोचता है कि गुप्त बात केसे प्रगट करु लेकिन इस शल्य को निकालना चाहिए।

आलोचना सुनने का अधिकारी

शल्य या आलोचना सुनने वाला व्यक्ति भी ऐसा होना चाहिए, जिसके सामने गुप्त बात रखी जा सके। चाहे बात रखने वाला दुश्मन बन जाए लेकिन सुनने वाला विषम नही बने। इस दीवाल के सामने कोई बात रखते है तो यह दीवाल कभी उस बात को किसी के सामने प्रगट नही करती। कोई भीत को तोडना चाहेगा तो टूट जायेगी, लेकिन बात प्रगट नही करेगी। ठीक इसी प्रकार से मन के शल्य को अर्थात् अतरग आलोचना को सुनने वाला भी वैसा ही गम्भीर होना चाहिए। आगमो मे आलोचना सुनने वाले की योग्यता का विस्तृत विवेचन आता है। वह गम्भीर हृदयी सहनशील एव प्रत्येक बात को पचाने वाला होना चाहिए। ऐसे व्यक्ति के समक्ष रखी गई आलोचना उसी तक सीमित रहती है।

मन मे छिपी हुई बात किसी के सामने प्रगट की जाती है तो मन हल्का हो जाता है मन की धुलाई हो जाती है, सफाई हो जाती है। सफाई हो जाने की स्थिति मे मन सोचेगा कि मैने यह कार्य रुपी पदार्थ को निमित मान कर किया है। अब मुझे इससे अलग हटना है। फिर मन रुपी का ध्यान नही करेगा। अत रुपी का ध्यान नही हो ऐसी साधना करे। रुपी के निमित जो-जो कार्य बनते है उनका परित्याग करे।

इस भावना से ध्यान करते हैं और ध्यान के पश्चात् सामायिक साधना करते हैं। करेमि भते के पाठ का उच्चारण करके कहते हैं कि हे भगवन् मैं आपकी बताई हुई विधि के अनुसार चल पडा हू। अब मैं सामायिक का व्रत लेना चाहता हू। 'सामाइय सावज्ज जोग पच्चक्खामि' इसका तात्पर्य क्या है? सामायिक मे बाधक तत्वो का त्याग किया है। सामायिक का जो स्वरुप वीतराग देव ने बताया है उसमे जो बाधक तत्व है उनका परित्याग किया। अर्थात नवीन पापो पर प्रतिबध लगा दिया। साद्यव योगो का त्याग किया गया हैं यह त्याग के विधान का आगमिक पाठ भी जरा अर्थ के साथ समझ ले –

भते	–	हे भगवन्!
समाइय	–	सामायिक
करेमि	–	करता हू
सावज्ज	–	सावद्य–पापकारी
जोग	–	व्यापार को
पच्चक्खामि	–	त्याग करता हू
जाव	–	जब तक
नियम	–	(सामायिक के) नियम का
पज्जुवासामि	–	पालन करु
दुविह तिविहेण	–	दो करण तीन योग से
न करेमि	–	स्वय करु नही
न कारवेमि	–	दूसरो से कराऊ नही
मणसा	–	मन से
वयसा	–	वचन से
कायसा	–	काया से
तस्स	–	उसका अतीत मे कृत पापो का
भते	–	हे भगवन्!
पडिक्कमामि	–	प्रतिक्रमण करता हू
निदामि	–	निदा करता हू
गरिहामि	–	गर्हा–आपकी साक्षी से निदा करता हू
अप्पाण	–	अपनी आत्मा को
वोसिरामि	–	वोसिराता हू, पाप से अलग करता हू

सामायिक-खेत की बाड

मान लीजिए आपने गन्ने का पौधा बोया है, उसको कोई नोचे नही, नाश नही कर दे इसके लिए थोर की बाढ लगाई जाती है वैसे ही पाप प्रवृति के लिए यह बाड लगाई जाती है। सामायिक मे सावद्य योग का त्याग किया है। सावद्य योग का मतलब है मन वचन और काया की पापकारी प्रवृत्ति। इन तीन योगो की प्रवृत्ति सावद्य भी होती है और निरवद्य भी। सावद्य का तात्पर्य है पाप कार्यो से युक्त, पाप मे भी ये तीन योग बनते है। पाप बढाने के लिए मन भी जाता है, वाणी भी चलती है और काया भी प्रवृत्ति करती है जिस काया से वाणी और मन से पाप होता है। पाप को रोकना भी इन तीनो से ही होता है।

इन पापो की गिनती भी १८ पापो मे समाहित है। जैसे पहला है प्राणातिपात यानि प्राणी की हिसा करना नही। हिसा किससे करते है? आप कहेगे कि शस्त्रो से करते हैं। वह शस्त्र तो बाद मे काम मे आता है, पहले आपके भीतर का शस्त्र तैयार होता है मन, वचन और बाद मे शरीर से प्रवृत्ति होती है। तो पहले मन मे तैयारी होती है। मन मे विषमता आती है। विषमता के कारण एक व्यक्ति अमुक पदार्थ को ग्रहण करना चाहता। वह रुपी पदार्थ है। और दूसरा व्यक्ति भी उसी पदार्थ को ग्रहण करना चाहता है। पदार्थ एक है लेकिन दृष्टि दो है। यदि दो है तो बटवारे का प्रसग आ सकता है। लेकिन कब? जब कि समभाव की मात्रा हो। सम की मात्रा न हो और विषम की मात्रा हो तो, वह चाहेगा कि दोनो ही मेरे पास रहे उसके पास न रहे। समत्व का प्रतिपक्षी यह ममत्व है। यह समता को तोडने वाला है। जहा पदार्थ के प्रति ममत्व है। एक उसे ग्रहण करना चाहता हे, दूसरा व्यक्ति भी चाहता है कि मै भी इसे ग्रहण करु तो आपस मे टकराव होता हे, सघर्ष होता हे, एक दूसरे के प्रति क्रूर भावना बनती है कोई–कोई यहा तक भी चाहते है कि एक दूसरे को खत्म कर दू। मानसिक हिसा का भाव क्रूरतम होता हे तो वह वाणी से कहता है मानजा, मै ऐसा कर दूगा, वैसा कर दूगा। नही मानता हे तो हाथ चलाता हे। उससे काम नही चलता है तो शस्त्र उठाकर मारना चालू करता हे। इस प्रकार शस्त्र से तो हिसा बाद मे होती है, पहले मन वाणी ओर शरीर से हो जाती हे।

इस प्रक्रिया मे दुनिया की दृष्टि से लगता हे कि वह दूसरे को मार रहा हे लेकिन भगवान् महावीर कहते हे कि वह अपने आपको भी मार रहा है। ऐसे व्यक्ति मे विपमता वनी रहती हे। मे रतलाम से विहार करके इधर आ रहा था तो रास्ते मे घूलिया से कुछ पहले राजपुर मे एक मकान मे ठहरने का प्रसग आया। मकान का स्वामी मेरे पास आकर कहने लगा कि महाराज साहब क्या किया जाए

मेरा लडका जेल मे है। कोर्ट ने उसको आजीवन कारावास की सजा सुना दी हे। मैने पूछा कि उसने ऐसा क्या अपराध किया था जिसमे आजीवन कारावास की सजा हुई? 'महाराज अपराध क्या किया टैक्स लेने वाला आफिसर आता और बार–बार कुछ न कुछ मागता यह वस्तु दो वह दो और सौ दो सौ रुपये ले कर चला जाता। एक बार उसने हजार रुपये की सामग्री ले ली। दुबारा फिर आया तो मेरे लडके ने कहा कि तुम मुझे तग मत करो लेकिन वह नही माना। मेरा लडका गुस्से मे आ गया, उसके पास पिस्तौल थी जिससे उस पर गोली चला दी और अफसर को समाप्त कर दिया। उस पर केस चला उसको आजीवन कारावास की सजा सुना दी गई।

"गाव के लोग उसके मरने से खुश थे क्योकि वह आफिसर सब को तग करता था। मैंने दस हजार रुपये उसे पीछे खर्च कर दिये फिर भी छुटकारा नही हुआ। उस भाई मे विवेक नही था इसलिए नाशवान पदार्थ चाहता था। कितु यहा चितनीय यह है कि पिस्तौल चलाने वाले ने आफिसर की हिसा की या स्वय की-हिसा भी कर दी। अब उसका परिवार कितना परेशान है ओर वह कारावास मे दु ख भोग रहा है।

सामायिक मे सावद्य योग का त्याग करते है। जीव हिसा का त्याग करते है मनसा वाचा कर्मणा। झूठ बोलने का त्याग करते हैं चोरी का त्याग करते हैं अब्रह्मचर्य का त्याग करते हैं और परिग्रह का त्याग करते हैं।

यदि आप सामायिक मे बैठे है ओर आपका पुत्र आ कर कहने लगे कि मैं अमुक–अमुक गाव मे गया था, बहिन की सगाई करने का सयोग नही बैठा। आप सामायिक मे बैठे है। क्या आप सामायिक मे बतायेगे कि अमुक लडका अच्छा है? या व्यापार सबधी बात बतायेगे कि इतना माल ले लो? यदि आप ऐसा कहते हैं तो आप सावद्य कार्य करते हे। गर्दन हिला देते हें तो भी सावद्य कार्य करते हैं। अत सामायिक मे द्विकरण त्रियोग से पाप प्रवृत्तियो का त्याग करने वाला साधक घर–गृहस्थी एव व्यापार व्यवसाय सबधी प्रवृत्तियो मे भाग नही ले सकता है। कदाचित् किसी ने मोहवस लिया हो तो उसे आलोचना करके शल्य रहित हो जाना चाहिए। यदि कोई गलती करके गलती मान लेता है ओर आगे से सुधार करने की कोशिश करता है तो सुधार हो सकता हे। यदि गलती को गलती नही मानता तो अपने अदर शल्य पेदा करता हे। सामायिक कर रहा हे ओर उसमे मन वचन और काया का अशुभ योग चल रहा हे तो फिर सामायिक की शुद्ध आराधना केसे होगी? सामायिक का स्वरुप क्या हे वह रुपी हे या अरुपी? साधु जीवन रुपी हे या अरुपी? ज्ञान रुपी ह या अरुपि? इस समझने एव

अरुपी अवस्था को प्राप्त करने के लिए भगवान ने कितना सुगम मार्ग बताया है। घटे भर के लिए मन को रोकना पडेगा, छोटे–मोटे कार्यों को रोकना पडेगा। सावद्य को रोकना पडेगा। हिसाकारी कार्य नही करेगे। घर मे सामायिक लेकर बैठते है तो भी ये कार्य नही करेगे? किंतु धर्म स्थान मे बैठ कर सामायिक करना अधिक उचित है, क्योकि हर घर मे सामायिक या पौषध के लिए अलग स्थान या कमरा नही होता। अत घर मे पूरी साधना नही सधती। यहा इतना और समझते कि घर मे सामायिक ले कर बैठे हैं और कोई महात्मा आ गये, आपकी सतो को दान देने की भावना हो गई, रसोई घर मे फुलके रखे है, जो निर्जीव हैं, ऐसे फुलके महाराज को बहरा सकते है। किंतु सामायिक मे बैठे है तो बहराने के लिए आज्ञा लेनी पडेगी, क्योकि उस समय आप मालिक नही रहे, आपने सब चीजो पर से ममत्व छोड दिया। घर मे यदि छोटा बच्चा भी है, तो महाराज को बहाराने के लिए उस बच्चे से आज्ञा लेनी पडेगी।

यह चर्चा कुछ सूक्ष्म हो गई है। मूल बात चल रही थी सावद्य योग से अलग हटने की चेष्टा करेगे तो आपको सामायिक का रस आयेगा और जीवन आनद प्रद बनेगा।

२१-७-८४

बोरीवली–बबई

आधुनिक विज्ञान आज के आम व्यक्ति के समक्ष एक होआ–सा बना हुआ है। उसकी उपलब्धियो ने अनेक चमत्कृति पूर्ण आयाम प्रस्तुत किये है, किन्तु इस बात को पुन–पुन भुला दिया जाता हैं कि इस विज्ञान का मूलत उपस्कर्त्ता कौन है।

अध्यात्म शास्त्र उसी विज्ञानवान चैतन्य की शक्ति का परिचय प्रदान करता है। कम्प्यूटर–रोबोट एव अन्य यन्त्रो का आविष्कार कर्त्ता पूर्ण स्वतत्र चेतन्य देव ही हैं– उसकी शक्ति अमाप है किन्तु उसके उन शक्ति स्त्रोतो का विपरीत दिशा मे उपयोग करना ही विषमता का जनक है। उसी के कारण तनाव अन्य समस्याए उत्पन्न हो गई हैं। व्यक्ति–व्यक्ति के बीच पारदर्शी दीवाले खडी हो गई है। आचार व विचार मे दिवारात्रि जितना अन्तर खडा हो गया हे।

किन्तु इस समस्या का मूल कारण क्या हे तथा इसके समाधान किस सीमा तक सफल हुए हैं तथा इसके स्थाई समाधान के क्या प्रावधान हो सकते हैं आदि विषयो पर एक मर्मस्पर्शी विहगम विवेचन पढिये प्रस्तुत प्रवचन मे –

—सम्पादक—

१०. आत्मविज्ञान

सच्चा वैज्ञानिक

आज का युग यत्रो का युग है– वैज्ञानिक युग है। इस युग की चेतना ने विकासोन्मुख दृष्टिकोण अपनाया और वह विकास की एक दिशा की ओर अग्रसर हुआ। जिन दृश्य पदार्थों की ओर वैज्ञानिको ने दृष्टिपात किया उन पदार्थों का अनुसधान किया। परिणामस्वरुप अनेक उपलब्धिया हुई। आम जनमानस को चमत्कृत करने वाले तत्व भी अविष्कृत हुए। आज के आविष्कार जितने–जितने आगे बढे उतनी–उतनी आविष्कृतिया भी सामने आई है। किंतु यह आविष्कार करने वाली चेतना प्राय बाहरी तत्वो की ही खोज करती रही है। यद्यपि इन बाहरी–भौतिक आविष्कृतियो ने दैहिक सुख सुविधाओ का अबार लगाया है, किंतु निष्कर्ष मे विषमताए उत्पन्न कर मानसिक असतुलन ही बढाया है।

ऐसी स्थिति मे अब उच्च कोटि के वैज्ञानिको का ध्यान आविष्कर्ता चैतन्य पर भी जा रहा है। लेकिन आम जनता की दृष्टि बीसवी सदी के भौतिक आविष्कारो पर ही लगी हुई है और वे उन्हे ही सब कुछ मानकर चल रहे है। आज का आम मानस परमुखापेक्षी हो चुका है। वह स्वतत्रता का अनुयायी होते हुए भी परतत्रता का अनुभव कर रहा है। शासकीय अथवा राजकीय तत्र सबधी स्वतत्रता प्राप्त कर ली। लेकिन जीवन की परतत्रता दिन–प्रति दिन बढती चली जा रही है। उसे प्रत्येक वस्तु के लिए दूसरो की ओर दृष्टिपात करना पडता है। चलना है तो साइकिल की आवश्यकता हे। कार, स्कूटर या अन्य साधन की आवश्यकता हे। इसके बिना चला नही जा सकता। यह गति सबधी परतत्रता है। अध्ययन करना हे तो उसे उसके लिए कुछ यत्र आवश्यक हे। गणित के लिए गणना पटल कल्क्यूलेटर की आवश्यकता हे, उसके बिना गणित नही कर सकते। दुनिया के सामाचारो को सुनना हें तो उसे श्रवण कराने वाले यत्रो की आवश्यकता है, टेलिविजन हो अथवा अन्य इसी प्रकार का साधन हो। बोलना है तो भी पर की अपेक्षा करनी पडेगी। जब तक माइक नही आयेगा तब तक नही बोल सकेगे। रोशनी के लिए बिजली ओर पानी के लिए नल या पाइप की तरफ देखना पडेगा। ये सारे क सारे चतन्य की परतत्रता वढाते जा रहे हें। इस यत्र युग मे आप ध्यान

रखिये इस प्रकार परतत्रता बढती गई तो आविष्कार करने वाला चैतन्य देव पगु होगा या विकास सपन्न?

नारे तो बहुत लुभावने लगाये जा रहे है कि मानव सर्वगुण सपन्न विकासोन्मुख हे। वह विकसित है। ये नारे मनुष्य को तत्काल कुछ प्रलोभन दे सकते हैं। कितु वस्तुत स्थिति इसके विपरीत चल रही है। इन नारो का उपयोग पर के लिए हो रहा है स्व के लिए नहीं।

वैज्ञानिक क्षेत्र मे हाई स्थिति के वेज्ञानिक फिर भी कुछ उच्च दृष्टिकोण ले कर चल रहे है। एक बहुत बडा वैज्ञानिक पायदो जिसने शस्त्रो को एक तरफ रख कर भीतर की साधना का ख्याल किया। मनोवेज्ञानिक दृष्टि से वह अदर मे प्रवेश पाने लगा तो उसने बहुत कुछ उपलब्धि हासिल की। इतनी उपलब्धि हासिल की कि १५०० किलो मीटर की दूरी पर रहने वाले इसान को बिना किसी यत्र के निर्देश दिया उसे सुलाया और जगाया। ऐसे एक नही अनेक वैज्ञानिक इस शरीर के भीतरी तत्वो के सबध मे आविष्कार कर रहे हैं लेकिन उनका दृष्टिकोण जितना पर की ओर लगा हुआ हे उतना स्व की ओर नही मुड रहा है।

यदि व्यक्ति को सर्वतत्र स्वतत्र बनना हे तो उसे स्व की ओर दृष्टिपात करना होगा। यह शरीर पिड देखने मे तो छोटा हे लेकिन इसमे जो ताकत हे जो शक्ति है वह शक्ति अन्य तत्वो मे नही है।

कम्प्यूटर का निर्माता

कम्प्यूटर भी दुनिया के सामने आ रहा हे। उससे उचित प्रश्नो के उत्तर ले सकते हे। लेकिन इस कम्प्यूटर से पूछा जाए कि तुम स्वय कोन हो? तो क्या वह उत्तर दे सकता है कि मै अमुक हू? कम्प्यूटर भी तो यत्र ही है। इसका आविष्कार करने वाला व्यक्ति उससे भिन्न है। वह इसमे उचित रुप मे परिवर्तन कर सकता हे। यह ताकत इस चेतन्य देव की हे ओर वह चैतन्य देव इस मनुष्य शरीर मे विराजमान हे। इस चेतन्य का ध्यान यदि स्वय की ओर मुड जाता हे तो वह ऐसे बहुत वड आश्चर्यकारी नवीन आविष्कार कर सकता हे। जो सपूर्ण विश्व के सर्वतोभावी विकास के साधन बन सकते हे। आवश्यकता इतनी हे कि आविष्कारक स्वय को पूर्ण रुपेण समझने मे समर्थ हो जाए।

इस शरीर म रहने वाला चेतन्य देव स्वय मे परिपूर्ण ह उसके उपर पर्दा पडा हुआ ह। वह अपन आपको आवृत करक बेठा ह। यही मूल मे भूल हो रही ह। जिसका परिणाम आज इस मानव समाज को भुगतना पड रहा ह। आत्मा विकास क लक्ष्य के अभाव मे ही आज मुनष्य–मनुष्य का प्रतिपक्षी बन रहा ह वह पर पदार्थो के अधिक स अधिक सग्रह म लग रहा हे। मानवी भावनाआ को

तिलाजलि दे कर दानवी भावनाओ मे बहता जा रहा है। एक मानव दूसरे मानव के साथ कैसा व्यवहार करे? वह एक दूसरे को क्या समझे? एक दूसरे का परस्पर क्या कर्तव्य है? इन बातो का ख्याल नही करने के कारण आज समता सहिष्णुता एव स्नेह सद्भाव की बहुत कमी होती जा रही हे। यदि वह आविष्कर्ता आवरण से परे अपने आप को देखने की चेष्टा करे तो समझ लेगा कि जो चैतन्यशक्ति अपने आप मे है। वही दूसरे मे है। मैं जैसे आवरण के भीतर आवृत हू, मैं अबाध सुख की कामना करता हू। अपने लिए प्रतिकूल परिस्थिति नही चाहता हू– अनुकूल अवस्था मे रहना चाहता हू। वैसी ही भावना पडोसी के अदर है। पडोस मे रहने वाला इसान भी यही चाहता है कि मुझे पर्याप्त रुप से सुख सुविधा के साधन उपलब्ध हो। मुझे कभी कोई गर्म हवा नही लगे मै दुख या झझट मे नही पडू। मेरे साथ कोई धोखा नही करे। जैसी बात व्यक्ति स्वय चाहता हैं, वेसी ही दूसरा चाहता है और जैसी दूसरा चाहता है, वैसे ही समस्त मानव अपने आप मे चितन करते है। क्योकि सभी का चैतन्य तत्व मूल रुप मे एक है। जैसे मनुष्य के शरीर की बनावट एक सी है– किसी–किसी मे किचित् अतर आ सकता है। कितु सामान्य रुप से मानव जाति एक है, उससे समग्र मनुष्य जाति की पहचान हो जाती है। केवल वस्त्र या पोषाक से मानव भिन्न–भिन्न रुप मे दिखाई देते है। रहन–सहन का परिवेश अलग–अलग होते हुए भी मानव–मानव एक है।

मानवीय शरीर भी एक तरह से पोषाक है उसके भीतर रहने वाला विज्ञानवान तत्व है वह भी एकसा है। प्रभु महावीर ने कहा

'जे आया से विण्णाया, जे विण्णाया से आया।'

जो आत्मा है वह विज्ञानवान है और जो विज्ञानवान है वह आत्मा है। विज्ञान गुण है और विज्ञानवान गुणी है। गुण गुणी से अलग नही रहता। अत विज्ञान आत्मा का मौलिक गुण है– चेतना का मूल स्वरुप है। वह सभी चेतनाओ मे मूलत समान है। जब मूल तत्व एक हो जाता है तो अध्यात्मवाद और भौतिकवाद का आपेक्षिक समन्वय सहज साध्य हो जाता है।

विज्ञान का जनक

आजकल दृष्टिकोण विषम हो रहा है। मानव चितन करता है कि भौतिक विज्ञान बिल्कुल अलग है और आध्यात्मिक विज्ञान बिलकुल अलग है। इन दोनो के बीच मे बहुत बडी दीवार है। इसी नासझी के कारण सग्रह विग्रह और विषमता का वायुमडल बन रहा है। जिसके पास भौतिक विज्ञान, आदि सामग्री है वह दूसरे की सामग्री को भी अपने अधीन करना चाहता है, दबाना चाहता है जिसे वह सामग्री उपलब्ध नही है वह भी उन्ही भावो मे चल रहा है जो इन भावो वाला

व्यक्ति होगा वह व्यक्ति कुछ अलग तरीके से चलेगा। ओर जो विस्तारवादी नीति का होगा वह अलग तरीके से चलेगा। यह सारा मतभेद विभिन्नताए भौतिक विज्ञान ओर आध्यात्मिक विज्ञान के रहस्य को नही समझने का परिणाम है। भोतिक विज्ञान का जनक कोन हे ओर आध्यात्मिक विज्ञान का जनक कोन है? भोतिक विज्ञान का जनक भी विज्ञानवान आत्मा है ओर आध्यात्मिक विज्ञान का जनक भी वही विज्ञानवान आत्मा है। दोनो का जनक एक है एक ही पिता के दो पुत्र हें। एक बाह्य दृष्टि धारण कर रहा हे अर्थात् दृष्टि सपन्न हो रहा है और दूसरा आतरिक व्यवस्था को सुव्यवस्थित बना रहा है। एक ही पिता के दोनो पुत्र– इस जीवन रुपी परिवार की सुव्यवस्था के लिए कार्य कर रहे हैं। यदि मानव मे यह दृष्टिकोण आ जाता है तो विषमता से सहजतया समता मे आया जा सकता है। श्रमण भगवान महावीर कहते है कि यदि विज्ञानवान मूल चेतना को लक्ष्य करके चलना है तो जो चैतन्यदेव इस शरीर रुपी पोषाक के भीतर रह रहा है उसे हम शरीर की पोषाक के आवरण के कारण अलग न समझे। आवरण के कारण चैतन्य–चैतन्य मे भेद न करे। सब की चेतना एक सरखी हे। सब सुख चाहते हैं। सब एक निष्ठ है लेकिन में मेरे अस्तित्व को तो कायम रखना चाहता हू, कितु दूसरे के अस्तित्व को समाप्त कर देना चाहता हू तो यह उचित नही हे। पडोसी के अस्तित्व के बिना आपका अस्तित्व कैसे रहेगा? आप जीना चाहते हैं तो पडोसी भी जीना चाहता है। इसीलिए तो प्रभु महावीर का सदेश है कि जीओ और जीने दो। तुम जीना चाहते हो तो पडोसी को भी जीने दो। क्योकि सब आत्माए चैतन्य की दृष्टि से समान हे। इस शरीर की व्यवस्था का निर्माता भी यह चेतन्य आत्मा है। इसने अपने विज्ञान का कोई उपयोग नही किया उसके परिणामस्वरुप भिन्न–भिन्न शरीर की उपलब्धि हुई।

विषमता का मूल

यही विज्ञानवान आत्मा मनुष्य के अतिरिक्त पशु पक्षी आदि समस्त प्राणियो मे पायी जाती हे। यह मूल भूत सिद्धात समझ मे आ जाये तो स्पष्ट हो जायेगा कि सब मे चेतन्यदेव हे ओर सब अपना अस्तित्व रखना चाहते हें। अत पत्येक व्यवित्त का कर्तव्य हो जाता ह कि व्यक्ति जसा आचरण अपने लिए पसद करता है वेसा ही दूसरा के लिए भी करे। जब व्यक्ति इस व्यवहार की भूमिका पर आ जाता है तो फिर इन साधना का तथा समस्त नाशवान पदार्थो के सग्रह की वृत्ति नही रह पायेगी। फिर समवितरण की भावना होगी आर सम व्यवहार का परसग आयगा। ऐसी स्थिति मे ही सामायिक आर समता भाव का रस आपकी तृप्ति करेगा आर दसरा को भी तृप्ति दगा।

जिस सामायिक का विवेचन मै कर रहा हू वह सामाजिक समता का सृजन करनेवाली ह और उसका उद्देश्य विभिन्नता को समाप्त करके सब के भीतर एकत्व भावना का प्रादुर्भाव करना है।

जब हम मूल चेतना के रूप मे एक है— मूल विज्ञानवान की दृष्टि से एक हे तो इस विज्ञानवान के बाह्य परिवेश को ले कर जो विभिन्न उपाधिया आयी ह उन्हे समाप्त कर दी जाए। क्योंकि वह उपाधि किसी के पास स्थाई रहने वाली नही हे। स्थाई रहने वाला तत्त्व स्वय का विज्ञान है स्वय का आचरण है, व्यवहार है प्रत्येक मानव को विशुद्ध भाव ले कर चलना है। ऐसा होने पर आज की जो विषमताए हे उनका बेहतर समाधान हो सकता है।

इतिहास के पृष्ठ उलट कर देखे तो आपको ज्ञात होगा कि समस्याओ के समाधान करने मे ओर तत्त्व की खोज करने मे इसान ने कमी नही रखी है। आप परिवार की समस्या का हल करना चाहते हैं। सामाजिक ओर राष्ट्रीय समस्याओ का हल भी खोजना चाहते हें ओर विश्व के अशाति को भी दूर करने की भावना रखते हैं इसके लिए अनेकानेक प्रयत्न भी चलते रहे हें। फिर भी इन उद्देश्यो का समाधान क्यो नही हुआ, इसका सिहावलोकन करने की आवश्यकता हे।

सिहावलोकन

सिहावलोकन का तात्पर्य दार्शनिक दृष्टिकोण से दर्शनकारो ने रुपक के साथ बतलाया हे।

असली सिह आनद के साथ शयन करता ह। वह किसी भी प्राणी को सताना नही चाहता। जब तक कि उसमे वास्तविक क्षुधा की जागृति नही होती, उसे भूख नही लगती। तब तक वह मस्ती से सोया रहता हें उस वक्त उसके पास मे होकर बकरी निकल जाए, पशु चला जाए, मानव चला जाए वह किसी को भी नही सतायेगा। लेकिन जब उसमे तीव्र क्षुधा जागृत होती हे तब वह अपने स्थान से उठ कर खुराक के लिए चलता है। लेकिन चलता हे बडी मस्ती के साथ। जब वह अपनी मस्ती मे झूमता हुआ चलता है तो उसे पास मे हो कर शिकार योग्य प्राणी चला गया तो उसको ख्याल नही रहता। लेकिन आगे चलने के बाद जब स्मृति आती है कि वह अपनी खुराक के लिए निकला था पर इतनी दूर आने पर भी मुझे खुराक क्यो नही मिली, क्या कारण है? क्या मै अपनी मस्ती मे चलता रहा और शिकार पास से निकल गया, कही खुराक पीछे तो नही रह गई है? थोडी देर तक वही खडा रह कर वह पीछे की ओर दृष्टिपात करता है वह एक विशेष लहजे मे अपना मुह घुमा कर देखता है। उसकी इस देखने की विशेष प्रक्रिया को सिहावलोकन कहते है अवलोकन कर वह पीछे शिकार को देखकर लौटता है।

ओर दौड कर शिकार को पकडता हे। यही सिहावलोकन न्याय कहलाता हे।

समस्याओं का सही समाधान

मैं भी आज इस बबई महानगरी के नागरिको को महानगरी के माध्यम से देश के नागरिको को राष्ट्रीय भक्तो को उनके माध्यम से विश्व के मानवो को थोडा सकेत की भाषा से कहना चाहता हू कि आपने बहुत कुछ किया विभिन्न समस्याओ को हल करने के लिए ओर कर रहे हैं। विभिन्न पार्टियो का निर्माण हुआ, व्यक्तियो के अधिकार मे सत्ता और सपत्ति रही अलग–अलग सस्थाओ का निर्माण हुआ तत्र व्यवस्था जनता की थाती बनी। जनता द्वारा चुने हुए शासक सामने आये। सब कुछ हुआ। शस्त्रो का प्रयोग किया विज्ञान का विस्तार हुआ। इतना सब कुछ होते हुए भी आप उस सिह की तरह मस्ती मे धुन मे तो नही चल रहे है? आज सिह की तरह पुनरावलोकन की आवश्यकता हे। समस्याओ का हल ढूढने के लिए इतना प्रयत्न किया फिर भी वे प्रयत्न विफल क्यो जा रहे हैं? कही हमारे मूल मे भूल तो नही रह गई है। कितु इसका अवलोकन कोन करे? जिनको वास्तव मे अपनी समस्या हल करनी हे। उसका तो इस ओर ध्यान जा सकता हे। कितु जिनका विश्व की समस्याओ से कोई वास्ता नही, सिर्फ अपने तुच्छ स्वार्थो से वास्ता हे। जो अपने हित के लिए पडोसी को नष्ट करने को तत्पर हो जाते है अपने जीवन को सुरक्षित रखने के लिए हजारो का अहित करने को उत्सुक हो जाते हे। उन्हे समस्याओ के सिहावलोकन से क्या प्रयोजन हे?

जहा मूल चेतन्य के लक्ष्य को छोड कर दृश्य पदार्थो की ओर आसक्ति पूर्ण दृष्टि बनी हुई है वहा व्यक्ति आसक्ति के नशे मे झुमता हुआ चला जाता हे– उसे अपने आसपास का अहसास नही होता हे। उसका जीवन द्विरुप बना रहता है वह दुनिया को कहता ह कि मे तुम्हारे हित के लिये कार्य कर रहा हू। निर्माण योजनाए बना रहा हू। कितु उसकी कथनी करनी मे गहरा अतर रहता है। वह पीछे मुड कर नही देखता। यही कारण ह कि इतने नारे लगाये जा रहे हे समस्या को हल करने के पयत्न किये जा रहे हे फिर भी हल नही हो सका? लगता हे अधिकाश पयास अपने अह के प्रदर्शन हेतु हा रहे ह। पर इतने मात्र को पुनरावलोकन नही कहते ह। सिहावलोकन का तात्पर्य ह पीछे मुड कर पुन देखे।

कई बार व्यक्ति सोचता ह कि म क्या दखू। मरे साथ सारा शहर चल रहा ह। किन्तु गतानुगतिकता का यह चितन नितात भ्रातिपूण ह। प्रत्येक मानव का यह कर्तव्य है कि उसका सब के साथ सम भाव का व्यवहार हो उसके जीवन म समता की रचना हो। यदि सही अर्थो म यह सिहावलोकन हा जाता ह अपने आपका दर्शन और [illegible] की स्थिति बन जाती ह तो आप के समस्त

विरोधाभास समाप्त हो जाते हैं केवल भौतिक तत्व ओर आध्यात्मिक जीवन मे ही विरोधाभास नही है। आज व्यक्ति-व्यक्ति मे विरोधाभास चल रहा हे। साथियो के प्रति चितन क्या है? अपने प्रति क्या चितन कर रहे हे? चितन के अनुरुप वोल रहे है या विपरीत बोल रहे है? विचारो के अनुरुप व्यवहार रख रहे हे या विचार एक तरफ जा रहे है और व्यवहार दूसरी तरफ जा रहा है? दुनिया को कुछ ओर ही दिखा रहे हैं और अदर से कुछ और ही कर रहे हे। आज अधिकाशतया ऐसा ही कुछ हो रहा है। व्यक्तियो के विचार-उच्चार एव आचार मे समरुपता-समस्वतरता नही है। किया कुछ और जा रहा है और दिखाया कुछ ओर जा रहा है। यह बात केवल व्यावहारिक जीवन मे ही सीमित नही रही हे। अपने तुच्छ स्वार्थो के पीछे व्यक्ति अध्यात्म मे भी ब्लेक करने मे नही चूकते हे। एक रुपक लीजिए।

पोथी के बेंगण-बनाम कथनी करणी

एक विद्वान महाशय आम जनता के बीच मे व्याख्यान दे रहे थे- उनकी स्पीच चल रही थी। उनकी भाषा बडी लालित्य युक्त थी। शब्दो का चयन सुन्दर तरीके से हो रहा था। वाणी का प्रवाह प्रभावोत्पादक ढग से चल रहा था। वक्ता के वक्तव्य का विषय बेगण को तो आप लोग जानते होगे वह एक तरह की सब्जी होती है।

वक्ता महोदय बेगण के विपरित पक्ष का प्रतिपादन करने लगे और कहने लगे कि बेगण किसी को नही खाना चाहिए। इसमे यह दोष है, वह दोष है आदि। श्रोता सब एक भाव से सुन रहे थे। उन्ही श्रोताओ मे वक्ता महोदय की सुपुत्री भी बैठी हुई थी। वह कोमल ह्रदय वाली थी। जीवन की द्विरुपता को वह नही समझती थी, वह एक ही स्वरुप जानती थी। उसने ख्याल मे अब तक यह था कि व्यक्ति जैसा स्वय करता है वैसा ही कहता है। कथनी और करनी मे अतर नही होता है। इसी दृष्टिकोण से उसने सुना और सोचा कि लगता है आज पिताश्री को बेगण के सबध मे कोई अनोखा ज्ञान उत्पन्न हुआ है। इन्हे बेगण के दोषो का ख्याल आ गया है। इतने समय तक पिताश्री को बेगण की प्रतिकूलता का ज्ञान नही था, इसलिए पिताश्री बेगण की सब्जी के बिना कभी भोजन करते ही नही थे। लेकिन आज इनके व्याख्यान से यह स्पष्ट है कि अब पिताश्री बेगण का साग कभी नही खायेगे। मेरी माता जी प्रतिदिन की तरह पिताश्री के स्वभाव के अनुरुप आज भी बेगण का साग तैयार करेगी। यदि मैंने सावधानी नही बरती तो आज घर मे महाभारत छिड जायेगा। घरेलू सघर्ष तीव्र हो जायेगा। मेरा कर्तव्य हे कि मे इस विषय की जानकारी माता को दे दू। इन भावना को सजाये हुए वह बडी शीघ्रता से अपने घर पहुची और मातुश्री से कहने लगी- "मातु श्री, आज

आपने साग किसका तेयार किया हे? माता ने कहा पुत्री तुझे ज्ञात है कि तुम्हारे पिताश्री वेगण के साग के बिना भोजन नही करते। बेगण उनको अत्यधिक प्रिय हे, इसीलिए वही साग तैयार कर रही हू। पुत्री ने कहा– माता जी आज भूलकर भी यह साग तेयार मत करना। माता ने पूछा– क्यो क्या हो गया? आज पिताश्री को अपूर्ण ज्ञान हुआ हे। आज उन्होने बेगण के प्रतिकूल गुणो को इतना उभारा है कि मैं उसका वर्णन नही कर सकती। इसीलिए निश्चित रुप से कहती हू कि पिताश्री अब कभी बेगण नही खायेगे। आज अगर बेगण का साग तैयार कर दिया तो पिताश्री को अवश्य क्रोध आ सकता हे ओर घर मे सघर्ष छिड सकता है। आपके और पिताश्री के बीच मे बहुत कहासुनी हो जाएगी। उस मा ने पुत्री की वात सच्ची मानी ओर जो बेगण का साग तेयार कर रही थी उसे एक तरफ रख दिया।

माता ने बेगण का साग नही बनाया। अन्य साग तैयार करने लगी। जेसे ही वक्ता महाशय वक्तव्य दे कर अपने घर पहुचे उन्हे क्षुधा लग रही थी प्रति दिन की तरह भोजन करने के स्थान पर बैठ गये, भोजन सामने आ गया लेकिन उनका प्रिय साग बेगण नही आया तो उनके मस्तिप्क मे विकृति आई और वे गर्म हो गये। क्योकि जिसकी जिस पदार्थ के साथ अत्यधिक आसक्ति होती हे, वह व्यक्ति उस पदार्थ को ही देखता है अन्य को नही। वे खुली लगाम–वाणी का प्रयोग करने लगे। खुली लगाम का अर्थ आप समझ गये हागे। किन शब्दो का प्रयोग नहीं करना चाहिए। किन का करना चाहिए– इसका उन्हे भान नही था। इन शब्दो से पत्नी को कितना सक्लेश होगा इस की आत्मा कितनी कष्ट पायेगी कितनी दुखित होगी वे इसका बिल्कुल ख्याल नही रख पाये। क्योकि बेगण के प्रति आसक्ति थी। वे बेगण को सब कुछ मान रहे थे। वे अपने साथ–साथ पत्नी ओर परिवार को भी भूल गये। ऐसे शब्दो की श्रृखला बाध दी जिससे पत्नी को मरण–सी पीडा होने लगी। पीपल के पत्ते की तरह कापते हुए उसने कपित स्वर मे कहा– 'नाथ यह मेरा अपराध नही हे म तो बगण का साग बना रही थी लेकिन आपकी पुत्री ने कहा कि पिताश्री बेगण का साग अब नही खायेगे। मेने समझा कि पुत्री सच बोल रही ह इस दृष्टिकोण स मने साग परिवतित किया। उसन पुत्री को आवाज लगाई वह आ गई। उसने कहा– छाकरी तूने क्यो गलत बात कर दी। पुत्री नम्र भाव से कहने लगी आपन हजारो लागा के समक्ष बगण पर दाष लगाया। मने समझ लिया कि आज बगण का साग पिताश्री नही खायग। आपक कथन के अनुरुप ही मने बात कही।

विद्वान कहने लगा कि छोकरी तुझ मालूम नही ज्ञान का बगण आर

होता है और कथन बेगण ओर होता है।" जो प्रतिदिन खाता हू। वह बेगण दूसरा है। पुत्री कहने लगी 'यह ज्ञान तो मुझे आज ही मिला है।"

विचार-आचार में अतर

यही स्थिति आज अधिकाश मानवो की हो रही है। विचार कुछ ओर होते है। और कथन और व्यवहार कुछ और होता है। वे अपने जीवन के टुकडे करके चल रहे है। पर यह सब किस के पीछे? पर पदार्थ के पीछे।

सभी चैतन्य देव एक है। एक चैतन्य की दृष्टि से इसान अपने इस मूल स्वरुपी चैतन्य को भूलता जा रहा है। वह ऐशो आराम और फेसेलिटी के साधन सजोग कर चल रहा है– उसकी अधाधुध उपलब्धि के लिए कहता कुछ और है करता कुछ और। क्या यही दशा आज के अधिकाश व्यक्तियो की तो नही हो रही है।

आज व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र या विश्व–शाति की श्वास नही ले पा रहा है। आज घातक अस्त्रो के नये–नये अविष्कार हो रहे है। न मालूम किस समय विस्फोट हो जाए, जनता के प्राण लूट ले, कोई नही कह सकता। इसके पीछे यदि अन्वेषण किया जाए, खोज की जाए तो एक ही बात कहॉ जायेगी कि "मरे जो दूजा हम करावे पूजा"। मरने वाले दूसरे है हम तो अपनी पूजा कराते रहे अर्थात् मान, प्रतिष्ठा बनाये रखे। चाहे उनके पीछे जनता का कुछ भी हाल हो रहा हो। कितु बधुओ, यह समस्या का सही हल नही है। इसलिए मेरा सुझाव है, एक परामर्श है– यदि इस महानगरी के प्रबुद्ध व्यक्ति इस सुझााव को ठीक समझते हो तो ऐसा वायुमडल तैयार करे, सबसे पहले व्यक्ति अपने आपको देखे कि मेरे अदर समता की स्थिति कितनी है और विषमता कितनी है? मैं क्या कर रहा हू, क्या करना चाहता हू और मुझे क्या करना चाहिए? प्रत्येक नागरिक यह चितन करे। लेकिन वह चितन दिखावटी न हो, स्वय के अतर को स्पर्श करने वाला हो, आतरिक स्फूरणा के साथ हो तो वह पायेगा कि मै जो कुछ भी कर रहा हू वह गलत कर रहा हू। जो कुछ मेरा व्यवहार हो रहा है वह ठीक नही हो रहा है। मे दूसरो का अस्तित्व भी स्वीकार करके चलू। सबके शरीर मे चैतन्य विराजमान है जो शास्वतता को लिए हुए है। यदि सब के अस्त्तिव को स्वीकार करते हुए सबसे सहयोग लेने की भावना रहेगी। यथा स्थान–यथायोग्य समान व्यवहार होगा तो चैतन्य नई अगडाई लेगा और अपने अदर नूतन विकास का सूत्र प्राप्त होगा।

मानवीय तन का उपयोग

सौभाग्य से हमे यह मानवीय तन मिला है, आज इस मानवीय तन का

कैसा उपयोग हो रहा हे? क्या स्वतत्रता के स्वरुप को समझने के लिए या स्वतत्रता प्राप्ति के लिए इसका उपयोग हो रहा है या दिन प्रतिदिन परतत्रता का स्वरुप खोजा जा रहा हे? आप कहेगे कि हम तो स्वतत्र हैं कितु मुझे सन्तुष्ट करने की आवश्यकता नही है। में पहले ही कह चुका हू कि आपने राजकीय स्तर की स्वतत्रता प्राप्त कर ली है अन्य देश के शासक हैड स्वदेश के अर्थात् अपने देश के लोग शासक बने। इतने मात्र से माना जाने लगा हे कि हम स्वतन्त्र बन गये– हम स्वतन्त्र देश के नागरिक हो गये। अब हमे कुछ नही करना हे। यह जो भ्रात धारणा बन गई हे उसे हटाने के लिए ही मेरा सकेत हे जब तक आपका चेतन्य देव सर्वगुण स्वतन्त्र नही बनेगा अपनी त्रुटियो पर नियन्त्रण नही करेगा तब तक आप स्वतत्र नही माने जा सकते। आप कहेगे कि अपनी त्रुटि क्या है? स्वय की त्रुटि यह हे कि इस शरीर पिड मे क्या–क्या रचना है यह शरीर किस रुप मे हे इसमे कौनसा तत्व काम कर रहा है और किसको कितनी दूर ले जा रहा हे यह अनुसधान निरीक्षण और परीक्षण का समय आ गया हे। उच्चस्थिति के वेज्ञानिक इस निरीक्षण ओर परीक्षण मे लग चुके हे लगने जा रहे है। लेकिन आम जनता प्रगाढ निद्रा मे सो रही हे। आप कहेगे कि हम जग रहे है आपकी बात सुन रहे हैं। कितु मैं सशोधन दूगा कि आप देख अवश्य रहे हे सुन अवश्य रहे हे कितु जरा सिहावलोकन न्याय की दृष्टि से अतरावलोकन करिये कि हम किसके लिए जग रहे हे किसके लिए देख रहे हैं? क्या जिसके लिए जगना चाहिए उसके लिए जग रहे हे? नही आप बाहरी पदार्थो की आसक्ति के लिए जग रहे हे। आप अधिक से अधिक ममत्व भाव के लिए जग रहे हैं समत्व भाव के लिए नहीं।

इस वेज्ञानिक यात्रिक युग मे आप मेरी बात सुनना शायद कम पसद करेगे। पसद करे या न करे इसका मुझे कोई विचार नही आग्रह नही। मुझे जो हितकर लगा कल्याणप्रद लगा। विश्व शाति क लिए जो अमोघ सूत्र ह। जिसे मेरी अतर आत्मा ने स्वीकार किया वही बात कह रहा हू। कदाचित् आप प्रश्न नही करेगे लेकिन कोई बात नही मुझे नाराजगी नही। आप सोचेगे कि महाराज का ऐसा उपदेश हमे पसद नही ह। आपको पसद नही हे तो न सुन। मुझे तो अपनी खोज करनी हे। आप यह चितन नही करे कि आपकी मन भाती बात ही सुनाता रहू। मुझे आपसे चन्दा चिट्ठा नही लेना ह सपत्ति नही बटोरनी ह। म प्रभु महावीर के सिद्धात के अनुसार पाच महाव्रतो को जनता साक्षी से स्वीकार कर चुका हू। यह इसलिए इस शरीर मे रहने वाला चेतन्य स्वतन्त्र बनेगा। यह उद्देश्य नहीं कि रुपया पैसे वैभव यश कीर्ति के लिए भागू। यदि यह वृत्ति अपना ली तो मेरा उद्देश्य किधर रह जाएगा और मै किधर रह जाऊगा। मेरा उद्देश्य यह है कि इस

शरीर पिड मे रहते हुए मुझे मे भौतिक दृष्टि से और आध्यात्मिक दृष्टि से जो दोष रह गए है उनको दूर किया जाए।

मै समता का दृष्टिकोण आपके सामने प्रस्तुत कर रहा हू। आप तटस्थ भाव से इस विषय पर चितन मनन करे और कदाचित् आपको लगे कि इस सम्बन्ध मे सुझाव देने है, तो दे सकते है। छोटा बच्चा भी परामर्श देता है, तो मैं प्रतिपल ग्रहण करने को तैयार हू। बडे देते है तो उनको भी सुनने को तैयार हू। जो सुझाव दे, वे मेरे सुझाव भी सुन ले और सुन कर आत्म--शाति, विश्व--शाति का मार्ग खोज कर निकाल ले तो आज के लिए यह बहुत बडी उपलब्धि होगी। कितु स्मरण रहे यह अविष्कार करने वाला चैतन्य देव ही है। यदि इस चैतन्य देव का आध्यात्मिक नियन्त्रण भौतिकता पर आ जाता है तो सारी समस्या हल हो सकती है।

इस भावना के साथ चितन मनन करेगे तो कल्याण होगा।

दिनाक २२-७-८४

बोरीवली (पूर्व), बबई

११. अयाचित संदेश

चरम तीर्थंकर प्रभु महावीर की समस्त देशना जीवन साधना का अमृत पाथेय हे किंतु उन्होने जीवन की अतिम एव निर्वाण प्राप्ति की पूर्व घडियो मे अपुट्ठ वागरणा अर्थात् बिना पूछे बिना किसी के प्रश्न के अपनी आतरिक अनुभूति का जो उपदेश दिया वह कितना महत्वपूर्ण एव उपादेय हे इसे प्रत्येक तटस्थ व्यक्ति समझ सकता हे। परिवार का मुखिया जिसने अपने जीवन मे अनेक उतार चढाव देखे हो। उन उतार चढाव के बीच मे उसने अपने आपको केसा ढाल कर जीवन को सुरक्षित रखा है, विशिष्ट पुरुष आपनी अतिम अवस्था मे परिवार को कहे मने जिदगी के अदर जिन--जिन बातो का आचरण दिया ठोकरे खाई सम्मान भी पाया। लेकिन उस आचरण के परिणाम स्वरुप एक स्थायी रुप का तत्व मैने अर्जित किया वह तत्व मे आप लोगो को बताना चाहता हू। इस शरीर को छोड कर चले जाने के पश्चात वह तत्व मेरे साथ ही रह जायेगा आप उसका लाभ नही उठा पायेगे। इसलिए आप ध्यानपूर्वक सुने। म अपना निजी अनुभव बता रहा हू। जिससे आप इस जीवन मे भी सुख सुविधा पूर्वक रह सके ओर अगले लोक क लिए भी तैयारी कर सके।

मुखिया की अतिम सीख

एसी शिक्षा यदि कोई मुखिया देता हे ता उसके परिवार के सदस्य कितना ध्यानपूर्व सुनते हे? उसका कितना महत्त्व समझत ह? जब परिवार का मुखिया भी बिना पूछे शिक्षा देता है तो उसे कितन गारव आर चाह क साथ सुना जाता है। तो प्रभु महावीर तो सारे जगत के पितामह थ। त्रस आर स्थावर जीवा के लिए व कल्याणपद थे ऐसे तीर्थेश महाप्रभु द्वारा प्रदत अयाचित शिक्षाओ का कितना महत्व होगा। क्याकि तीथकर महाप्रभु वसुधैव कुटुम्बकम की भावनाओ को लेकर चलने वाले होते है।

यह साधना वसुधैव कुटुम्बकम की परिधि म ही होती है। सम्पूर्ण ससार को अपना परिवार जानकर चलने वाला पुरुष ही साधना मे अग्रसर हो सकता है। एक छोटे से परिवार के दायरे म रहने वाला व्यक्ति कितना ही [illegible] परिवार म रहता हुआ राग द्वेष से दूर रह कर परिपूर्ण [illegible]

रहूगा किंतु यदि वह परिपूर्ण जीवन की साधना मे लगा रहना चाहता है। तो फिर उसको चद सदस्यो के लगाव मे रहने की क्या आवश्यकता है? उसको तो ससार के समस्त प्राणियो के साथ समभाव का व्यवहार करना है' समभाव के व्यवहार का तात्पर्य यह नही कि एक व्यक्ति दुर्गुणो को ले कर चलता है' और एक सद्गुणो को ले कर चलता हे तो दुर्गुणी ओर सद्गुणी दोनो का उसी भाव से सत्कार करे यह समभाव नही विषम भाव है। सम भाव का अर्थ यह है' कि जिसमे जो गुण है उसे वैसा ही सत्कार दिया जाए गुण के अनुरुप व्यवहार करेगे। दुर्गुण है तो उस पर द्वेष नही करेगे, लेकिन उसका सत्कार सदगुणी की तरह नहीं करेगे। सद्गुणी की तरह दुर्गुणी का सत्कार करने लगे तो वह समझेगा कि मेरा सत्कार सद्गुणी की तरह हो रहा हे तो सद्गुण लाने की क्या आवश्यकता ह। वह व्यक्ति दुर्गुणो का पोषण करता रहेगा। जिसका सत्कार सम्मान करते ह यदि उसके दुर्गुण हो तो उसको बढावा नही दिया जाए। सम भावी-समता को लेकर चलने वाली आत्मा सद्गुणो को प्रोत्साहित करेगी, सत्कार सम्मान करेगी जिससे दुर्गुणी को शिक्षा मिले कि मै भी ऐसा सद्गुणी बनू ओर मेरा अधिक से अधिक सत्कार सम्मान हो। लोग मुझसे द्वेष नही करे। मुझे अपने आपको सद्गुणी बना कर आगे बढना है इसलिए मै सद्गुणी को नमस्कार करु।

आप तीर्थकरो के जीवन को देखे उनकी दिनचर्या का अध्ययन करे केवल ज्ञान के पश्चात उनके उपदेश का ख्याल करे। भगवान महावीर परम समत्व की साधना करके सदा-सदा के लिए केवल ज्ञानी हो गये। उस समय यदि किसी ने प्रश्न किया कि अमुक व्यक्ति अमुक प्रकार की प्ररुपणा करता हे वह केसा हे? प्रभु महावीर ने स्पष्ट कहा कि वह मिथ्या है। मिथ्या को मिथ्या कहना दोष नही सत्यवादिता है। आगम मे स्पष्ट वाक्य है, उसने मिथ्या कहा, ऐसा मै कहता हू। परम सम भाव मे रहते हुए ही उन्होने वह प्रतिपादन किया। इस प्रतिपादन के पीछे उनका जो व्यवहार था वह समभाव की परिधि मे ही आता है। यदि वे घर मे रहते तब भी ऐसा ही कहते। वे चरम शरीर थे, उसी भव मे मोक्ष जाने वाले थे। 'जो समताधारी है उसको एक रुप होना चाहिए। मिथ्या को मिथ्या और सम्यग् को सम्यक् ही कहना चाहिए।

परिवेश का महत्व

जगत के सब प्राणी अपनी आत्मा के तुल्य है तो सब के साथ सम भाव रखना है। जो परिवार के साथ रहते हुए छोटे से छोटे सदस्य के प्रति अच्छा व्यवहार रखते है। और अन्यो के प्रति अच्छा व्यवहार रखने मे सकोच कर रहे है। यह अनुचित है। चद सदस्यो के लिए सब कुछ करने को तैयार है तो दूसरे प्राणियो

के लिए पडासियो के लिए भी सब कुछ करने को तयार होना चाहिए।

तीर्थंकर पहले राजा रह चुके हैं, परिवार मे रह चुके है। उन्होने सब कुछ देख लिया था भोग लिया था किन्तु वे उससे चिपके नही रहे उन्होंने राज्य मे लगाव नही रखा। राज्य मे रहते हुए साधना का प्रतिपादन नही किया। साधना का प्रतिपादन साधना को जीवन मे अमली रुप देकर किया। साधना के चरमोत्कर्ष पहुचने पर केवलज्ञान पा लिया। भरत महाराज ने भावात्मक चारित्र से गृहस्थाश्रम मे रहते हुए अन्तर्मुहूर्त मे केवलज्ञान पा लिया फिर भी वे गृहस्थ वेश से युक्त नही रहे वास्तविक ज्ञानी ज्ञान का अवमूल्यन करना नही चाहते है। केवलज्ञान के बाद यदि भरत महाराज गृहस्थाश्रम मे रहते तो यह केवलज्ञान का अवमूल्यन होता। गृहस्थाश्रम मे थे उस वक्त उन्हे केवलज्ञान की प्राप्ति हुई लेकिन परिवार के जो सदस्य है– पुत्र हे पुत्र वधू, पोत्र हैं वे सारे छद्मस्थ होते है। यदि पुत्र वधू आकर कहे कि मै कार्य मे व्यस्त हू आप कुछ समय अपने पोत्र को रमाइये। उस समय यदि वे इकार करते हैं तो वह कहती हैं कि घर का मुखिया मना करता हे तो अन्य क्या करेंगे अत उनका ना कहना भी ठीक नही और यदि रमाते हैं तो केवल ज्ञान का अवमूल्यन है। वीतराग देव यदि अपने बच्चो को रमाये तो पडोसी के बच्चो को भी रमाना पडेगा कोई अन्य बच्चा आ गया तो उसको भी रमाना पडेगा अगर वे दूसरो के लिए ना कहते है तो विषमता होगी। इस प्रकार परिवार से सबद्ध रहने मे केवलज्ञानी का व्यवहार विषम दृष्टिगत होती है अत वे केवलज्ञान का अवमूल्यन नही करके साधु का भेष धारण करके चल देते हैं। मरुदेवी माता भी ऐसा ही करती लेकिन उनका आयुष्य आ गया था इसलिए वे मोक्ष मे पधार गई। अन्यथा वे भी शुद्ध भावनाओ के अनुसार सयम वेश धारण कर लेती।

इस प्रकार आप देखेगे कि जितने भी तीर्थंकर हुए उन्होने साधु बन कर साधना की। क्योकि साधना समता का स्रोत है वह लक्ष्य पूर्ति मे सहायक बनती है। तो प्रभु महावीर ने अपनी छद्मस्थ अवस्था मे साधना के द्वारा केवलज्ञान प्राप्त किया और जीवन की अतिम अवस्था मे भव्यजन जिज्ञासुओ को परिवार के सदस्य के रुप मे बिना पूछे उन्हे अतिम ज्ञान सुनाया और इस रुप मे उत्तराध्ययन सूत्र बना। इस अपुट्ठ वागरणा के 36 अध्याय बताये। उनमे से 32 वे अध्याय की दूसरी गाथा है

णाणस्स सव्वस्स पगासणाए अन्नाणमोहस्स विवज्जणाए।
रागस्स दोसस्स य संखएणं एगंतसोक्खं समुवेइ मोक्खं।।

समता की साधना मे प्रवेश करता है तो [illegible] प्रयास करना। [illegible] [illegible] साधना से दूर रहा। [illegible]

उसका शुद्धिकरण क्या हे? इसे कुछ समझने का प्रयास करे। ज्ञान आर ज्ञानी की अवज्ञा करना ज्ञान के साधनो का दुरुपयोग करना आदि प्रवृत्तियो से ज्ञानावरणीय कर्मो का बध होता है। इससे विपरीत ज्ञान के प्रति सतत् जागृत रहने से आवरण का विलय हो जाता है। आत्मा मे ज्ञान का प्रकाश जगमगा उठता हे। कितु यह स्मरण रहे कि आत्मज्ञान के साथ किया जाने वाला ज्ञान सम्यग्ज्ञान होता हे ओर वह समता की अवस्था मे ही पनप सकता ह। इस समता साधना का ही सामायिक के विवेचन के रुप मे आपके समक्ष कुछ प्रतिवादन कर रहा हू।

छोटी से छोटी साधना सामायिक साधना हे। गृहस्थाश्रम मे 48 मिनिट तक सामायिक साधना की जाती हे तो उसका लक्ष्य क्या रहता हे। म परसो बता चुका हू।

कर्तृत्व भाव-स्वय का

"करेमि भते समाइय सावज्ज जोग पच्चक्खामि'

हे भगवन् मे सामायिक करता हू। कई लोग सोचते है कि करता हू यह कर्तृत्व भाव कैसे कहा गया। क्योकि सामायिक तो कर्तव्य भाव मे नही हे। कितु यह जो मै करता हू की बात है वह किसी को नीचे गिराने की एव अपने अह के पोषण की बात नही हे, लेकिन वस्तु सत्य को प्रगट करने के लिए हे। सामायिक मै करता हू, मै ही करता हू दूसरा नही। यदि यह सोचते हेकि मै कुछ नही करता दूसरा व्यक्ति करता है या अमुक व्यक्ति करता है ओर मै उसके सहारे चल रहा हू तो सामायिक कर ही नही सकते। फिर तो परतत्र हे, दूसरे की कठपुतली है। कोई भी व्यक्ति जैसा चाहता है वैसा ही वाणी से बोलता है, वैसा ही व्यवहार करता है तभी वह आगे बढ सकता है। तीर्थकर देवो ने कहा कि तुम ही अपने आपको स्वर्ग मे ले जा सकते हो और तुम ही नरक मे ले जा सकते हो। यह है साधना की अनुभूति। इससे प्रत्येक आत्मा को बहुत बडा सबल मिलता है। इस सिद्धात से प्रत्येक आत्मा सोचेगी कि मैं चाहू जैसा बन सकता हू। मेरा कर्तृत्व मेरे अधिकार मे है। आगमिक उल्लेख है कि –

अप्पा कत्ता विकत्ता य, दुहाण य सुहाण य।
अप्प मित्तममित्त च दुप्पट्ठिओ सुपट्ठिओ।।

इसी बात को गीता दर्शन मे इस रुप मे कहा गया है –

'उद्धरेदात्मनाऽऽत्मान नात्मानमवसादयेत्।
आत्मैवात्मनो रिपुरात्मैव बन्धुरात्मन ।।

ऐसा सोच कर हर आदमी आगे बढता है। अगर वह यह सोचे कि मै कुछ नही कर सकता तो उसकी आगे बढने की प्रगति अवरुद्ध हो जाती है। बधुओ,

में कुछ विषय की सूक्ष्मता मे चला गया हू। क्या करु आदत से लाचार हू। सूक्ष्म विषय को कहने के लिए गहराई म चला जाता हू। सूक्ष्म विषय जल्दी आपके पल्ले नहीं पडता हे लेकिन आज पल्ले नहीं पडेगा तो कोई वात नही निरतर सुनते रहगे ता एक रोज अच्छी तरह से समझ सकगे ओर ज्ञान को प्रकाशित करने मे समर्थ हो सकेगे। यदि में आपके पसदगी की ही वात कहता रहू तो में आपके प्रति हित नहीं करता हू। क्योकि यदि आप खुश हो वसी ही वात कहता रहू तो यह वीतराग देव के सिद्धात के प्रतिकूल हे।

वीतराग देव ने कहा कि तुम अपने अस्तित्व मे रहते हुए साधना जीवन को जो वास्तविक स्वरुप ह उसे प्रगट करते रहो। इस दृष्टि से वात कहता हू। यदि नही कहता हू तो आप अनभिज्ञ रह जायेगे। आप कह सकत ह कि हम अनभिज्ञ नही रहेगे हमारा धार्मिक शिक्षण चलता रहेगा। आप पाठशाला भी चलायगे लेकिन पढायेगे क्या? म आपसे पूछु कि आप पढ चुक ह सामायिक जानते हॅं। पाठ भी जानते हे। जानकारी के लिये आपसे पूछु कि ज्ञान का स्वरुप क्या है तो आप वतायेगे क्या? व्यापार का स्वरुप वता सकते हे। राजसत्ता का स्वरुप वता सकते है लेकिन ज्ञान स्वरुप किस चिडिया का नाम हे आप नही वता सकेगे।

ज्ञान का स्वरुप समझना हे ता समता का स्वरुप पहले समझना होगा। फिर आगे वढते हुए ज्ञान का स्वरुप भी समझ लगे।

सामायिक म आप करेमि भते का पाट वोलत ह।

करेमि भते समाइये हे भगवान म सामायिक करता हू। आग कहग सावज्ज जोग पच्चक्खामि में सामान्य रुप से सावद्य योगा का त्याग करता हू। लेकिन सामायिक का स्वरुप पहल समझ म आता ह तव आग सावद्य यागा का त्याग करगे। सामायिक क सवध म शास्त्रकारा न कहा है– 'जा समा सव्व भूएसु तससु थावरेसु य तस्स सामाइय हाइ इइ केवली भसिय' जा ससार क त्रसस्थावर समस्त पाणिया पर समभाव रखता ह उसी की शुद्ध सामायिक हाती ह। अव आप वताइय आप कान–सी सामायिक करना चाहते ह।

पहल त्रस आर थावर का ज्ञान ह या नही? यदि नही ह ता पहल इसका [illegible] करना चाहिए। त्रस आर थावर म [illegible] ससार, जीवा का [illegible] हा जाता ह। आप ख्याल रखिय ध्यान पूवक तत्व की वाता का सुनिय। एक–एक वात का [illegible] पकडन की कोशिश करिय कि अभ्यास हा जाए।

त्रस म [illegible]–द्वि[illegible] वइन्द्रिय [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] ह। स्थावर म पृथ्वी काय अप्[illegible] [illegible] वायु आर [illegible]

समावेश हो जाता है।

सामायिक पचकने बैठे हें तो करेभि भते के पाठ का उच्चारण किया है। भगवान मैं सामायिक करता हू। उस समय आपके भव कैसे रहे, आप त्रस और थावर जीवो के प्रति समभाव रखते है या नही, यह आपके चितन का विषय है। आज आप 24 घटे इस विषय पर चितन करे। यदि आपकी समस्त प्राणियो पर समभाव की स्थिति बनी रहती है तो आप सामायिक साधना की सम्यगाराधना कर पाएगे एव उसका सही आनन्द प्राप्त कर पाएगे।

— आज इतना ही

ता २४-७-८४

बोरीवली, (पूर्व) बबई

१२. सामायिक अर्थात् आत्मवत्-दृष्टि

विगत कुछ दिनो से सामायिक की चर्चा चल रही है। जिन सर्वज्ञ–सर्व द्रष्टा वीतराग भगवतो ने इस गहनतम साधना पद्धति का निर्देश किया उन वीतराग देवो के गुण गरिमा मय स्वरुप का उल्लेख हमारी बुद्धि एव जिह्वा के सामर्थ्य से बाहर है। उन्होने अनत–असीम गुण प्राप्त किये या यो कहे स्वय मे प्रगट किये। गुण तो उनमे थे ही किंतु दबे हुए थे उनको अनावृत कर दिया। जिस साधना पद्धति से उन्होने गुणो को प्रगट किया वह साधना पद्धति समता की थी– सामायिक की थी। सामायिक का बहुत व्यापक अर्थ है। एक सामायिक टेंप्ररी होती है और एक जीवन पर्यंत की। जीवन पर्यन्त की सामायिक के भेद प्रभेद का कथन तो समय पर ही किया जा सकेगा।

प्रस्तुत प्रकरण श्रावक की सामायिक का चल रहा है, जो दो घडी अर्थात 48 मिनिट की होती है। इस 48 मिनिट की सीमा मे साधक की क्या स्थिति बनती है और वह इस 48 मिनिट के काल मे सामायिक साधना कैसे करे–इसका स्वरुप जानना आवश्यक है।

जो समो सव्व भुएसु

समावेश हो जाता है।

सामायिक पचकने बैठे है तो करेभि भते के पाठ का उच्चारण किया है। भगवान मै सामायिक करता हू। उस समय आपके भव कैसे रहे, आप त्रस और थावर जीवो के प्रति समभाव रखते है या नही, यह आपके चितन का विषय है। आज आप 24 घटे इस विषय पर चितन करे। यदि आपकी समस्त प्राणियो पर समभाव की स्थिति बनी रहती है तो आप सामायिक साधना की सम्यगाराधना कर पाएगे एव उसका सही आनन्द प्राप्त कर पाएगे।

—— आज इतना ही

ता २४-७-८४

बोरीवली, (पूर्व) बबई

१२. सामायिक अर्थात् आत्मवत्-दृष्टि

विगत कुछ दिनो से सामायिक की चर्चा चल रही है। जिन सर्वज्ञ–सर्व द्रष्टा वीतराग भगवतो ने इस गहनतम साधना पद्धति का निर्देश किया उन वीतराग देवो के गुण गरिमा मय स्वरुप का उल्लेख हमारी बुद्धि एव जिह्वा के सामर्थ्य के बाहर है। उन्होने अनत–असीम गुण प्राप्त किये या यो कहे स्वय मे प्रगट किये। गुण तो उनमे थे ही, किंतु दबे हुए थे उनको अनावृत कर दिया। जिस साधना पद्धति से उन्होने गुणो को प्रगट किया वह साधना पद्धति समता की थी– सामायिक की थी। सामायिक का बहुत व्यापक अर्थ है। एक सामायिक टेम्प्ररी होती है और एक जीवन पर्यंत की। जीवन पर्यन्त की सामायिक के भेद प्रभेद का कथन तो समय पर ही किया जा सकेगा।

प्रस्तुत प्रकरण श्रावक की सामायिक का चल रहा है जो दो घडी अर्थात 48 मिनिट की होती है। इस 48 मिनिट की सीमा मे साधक की क्या स्थिति बनती है और वह इस 48 मिनिट के काल मे सामायिक साधना कैसे करे–इसका स्वरुप जानना आवश्यक है।

जो समो सव्व भुएसु

आप प्रतिज्ञा पाठ का उच्चारण करते हैं करेमि भते। सामाइय इसमे प्रभु से आज्ञा ली गई है। आगे के पाठ मे सावद्य योगो का त्याग है। 'हे भगवन् मैं सामायिक कर रहा हू' आपने इस सामायिक के स्वरुप को समझ कर एक निश्चित समय निर्धारित किया। उस समय मे आपकी साधना–चित्त वृत्तियो का क्या रुप हो इसका वर्णन निम्न गाथा मे दिया गया है। 'जो समो सव्वभूएसु तसेसु थावरेसु य। तस्स्सा माइय होई इइ केवली भासिय।।

इसका कुछ सामान्य विवेचन मैं पूर्व मे कर गया हू। अब जरा शब्दश विवेचन समझने का प्रयास करे। यहा भूत का अर्थ आत्मा से लिया गया हे प्राणियो से लिया गया है। विश्व मे जितने भी प्राणी हे उनको भूत शब्द से पुकारा जाता हे ओर उनका वर्गीकरण दो शब्दो से किया जा सकता है 'त्रसेसु थावरेसु त्रस ओर थावर। इन दो प्रकार के जीवो के साथ सम भाव हो 48 मिनिट के लिए समता प्राप्त करे। सामायिक मे निश्चित करे कि त्रस और थावर जीवो को कष्ट नही पहुचायेगे।

एकद्रिय से ले कर पचेद्रिय तक के जीव है।

वे सब स्थावर एव त्रस इन दो वर्गो मे आ जाते है। इन सब प्राणियो पर सम कैसे रहा जाए? इसका अर्थ इतना ही है कि मै अपने लिए अन्य प्राणियो से जिस व्यवहार की अपेक्षा करता हू, वही व्यवहार मै समस्त प्राणियो के साथ करु। यही सम व्यवहार का काटा-मापदड होगा। मुझे कोई उत्तेजित करना चाहता है, डडा लेकर मारने का प्रयत्न करता है, ताडन तर्जन करता है मुझे डराने या दबाने की कोशिश करता है, मुझे नष्ट करने का प्रयत्न करता है तो ये समस्त व्यवहार मुझे उचित नही लगते, ठीक ऐसा ही व्यवहार मैं दूसरो के साथ करुगा तो उन्हे उचित कैसे लगेगे? अत सामायिक करने वाले व्यक्ति को चितन करना चहिए कि क्या उपर्युक्त व्यवहार मै अपने लिए पसद करता हू? यदि मै पसद नही करता, अहितकर मानता हू तो मेरा समभावी चितन कहा है कि दूसरो लिए भी मै यही चितन यही व्यवहार करु किसके लिये भी यह अहितकर है।

यदि आपका कोई तिरस्कार करता है, कोई आपको चूटिया भरता है तो आपको अच्छा लगेगा। जिसके द्रव्य मन है वह इकार करेगा और कहेगा कि चूटिया मत भरो। लेकिन आप सोचेगे कि जो पृथ्वी, अग्नि और वनस्पति काय के जीव है जिनके मुह नही है वे कैसे समझते है? भगवान कहते हैं कि वे भी समझते है। मनुष्य की छाया ही उसका उन पर प्रभाव पडता है। एक क्रूर प्राणी वनस्पति के पास जाता है तो वह वनस्पति थर-थर कापती है। यह विषय भगवान की वाणी मे अभिव्यक्त हुआ है। अनेक तीर्थकरो ने इसे स्पष्ट किया। स्थावर जीवो मे भी हमारे जैसी आत्मा है। वह आत्मा भी कष्ट देने वाले को पसद नही करती है। यह तीर्थकर महाप्रभु ने तो आज से हजारो वर्षो पूर्व ही बता दिया था। कितु आज के वैज्ञानिको ने भी इसका प्रयोग किया है- वनस्पति- पौधे के गमले को समक्ष रख कर उसकी निदा स्तुति से यह बताया कि वनस्पति मे आत्मा है। उन्होने दुनिया को बताया कि यदि उसकी प्रशसा होती है तो वह वस्पति प्रफुल्लित होती है और निदा की चर्चा होती है तो जेसे मुनष्य का चेहरा मुरझाता है वैसे ही वनस्पति भी मुरझा जाती है। अत उसमे भी मनुष्य की तरह आत्मा है उसकी तारीफ की जायेगी तो फूलेगी और निदा की जायेगी तो कुम्हलायेगी। गमले के पास सूक्ष्म दर्शी यत्र रखा और उससे देखा गया कि जब वनस्पति की तारीफ की तो वह फेलने लगी। और निदा करने से मुरझा गई। वैज्ञानिको ने ऐसे कई प्रयोग किये। वह बहुत पुरानी बात हे। लेकिन कुछ समय पूर्व अमेरिका वैज्ञानिको ने खोज की हे- एक कमरे के अदर वनस्पति का पौधा रखा गया और बाहर के छ व्यक्तियो से कहा गया कि तुम एक-एक करके कमरे के अदर जाओ। एक व्यक्ति

को सकेत दिया कि तुम वनस्पति का अमुक भाग काट कर लाओ। वह अदर गया और वनस्पति का अमुक भाग काट कर बाहर आ गया लेकिन ज्यो ही वह अदर गया त्यो ही वह पौधा थर–थर कापने लगा था। उसके बाद दूसरे व्यक्ति को भेजा गया तो वनस्पति मे कोई परिवर्तन नही आया। तीसरे से कहा कि तुम्हे वनस्पति का सिचन करना है। इस भावना से वह व्यक्ति अदर गया तो वनस्पति खिलने लगी। इसी प्रकार अन्य व्यक्तियो के विचारो के प्रभाव अकित होते रहे। इन प्रयोगो से पता चलता है कि मनुष्य के भावो का वनस्पति पर कितना प्रभाव पडता है। उसके पास से निकलनेवाली आत्मा यदि निर्मल है भद्रिक है और मन मे छल कपट नही है तो उस पर सीधा प्रभाव पडेगा।

जैसा दृष्टिकोण वनस्पति के लिए ले रहे है वैसा ही पानी के जीवो के लिए पृथ्वी काय के जीवो के लिए और वैसा ही अग्निकाय के जीवो के लिए है। वायु काय के जीवो की भी वही स्थिति है। मैं एक एक का वर्णन नही रख रहा हू।

आत्म सम व्यवहार

सामायिक मे बैठते है उस समय आपको सोचना है ससार के सभी जीवो के प्रति समभाव रखू, छोटे–से–छोटे जीव की हिसा नही करु। ससार मे रहते हुए आपको चौबीसो घटे इन जीवो की आरभ ज्या हिसा लगती रहती है। आपको इसका त्याग नही है तो हिसा आपके लिए खुली है इसलिए आपका शरीर इन जीवो के पास जाता है तो वह कपायमान होते हैं उनको आप से डर लगता है भय लगता है। 48 मिनिट के लिए आप सामायिक ले कर बैठते हैं तो इतने समय के लिए उन जीवो को भी अभयदान मिलता है।

जब तक आप सामायिक की साधना करते है तब तक आप सबके प्रति सम भाव रखते हैं। उतने समय तक आप किसी को सतायेगे नही। जब तक आप खुले बैठे है। सामायिक नही कर पा रहे हैं तो सवर ही कर ले। इससे भी सभी प्राणियो को अभयदान मिल जाता है। सवर का पाठ याद न हो तो पाच नवकारमत्र गिन कर सवर मे बैठ सकते हैं और जब सवर पालना हो तो पाच नवकार मत्र गिन कर पाल सकते हैं। यह भी पाप वृत्तियो से बचने की एक प्रक्रिया हे। जितने समय तक सामायिक या सवर मे बेठते हैं उतने समय तक उन जीवो को शाति देते हें। सम भाव से उन पर कृपा रखते हैं। वह कृपा आप उन पर ही नही अपने पर भी रखते हैं। आपके मन वचन और काया भी उन जतुओ के लिए शस्त्र है। जब तक इनका त्याग नही करते हें तक तक उन जीवो को भय पेदा होता हे।

त्याग से अभय

सभव हे मेरी बात पूरी समझ मे नही आती हो। थोडी देर के लिए कल्पना कर कि 10 हजार व्यक्ति एक सभा मे बैठे है, वहा एक व्यक्ति हाथ मे नगी तलवार ले कर आता हे ओर कहता है कि मै एक की हिसा करुगा या 10 हजार मे से एक को मारुगा। बात एक व्यक्ति को मारने की करता है, तो भय सबको लगेगा? प्रत्येक व्यक्ति सोचेगा कि कही मेरा नबर नही आ जाए। सब उसके प्रति दुश्मनी की भावना रखेगे सबके मन मे उसके प्रति क्रूरता आयेगी। लेकिन यदि वह नाम लेकर कहता हे कि मे अमुक व्यक्ति को मारुगा तो भय उसी एक व्यक्ति को लगेगा ओर बाकी सभी व्यक्ति निर्भय हो जायेगे।

यदि आप आवश्यकता से अधिक चीजे खुली नही रखते हैं सब का त्याग कर देते हे तो छोडी गई वस्तुओ की आरभ ज्या हिसा से बच जाते है।

त्रस ओर थावर के जीवो के प्रति सम भाव लाने के लिए सामायिक आवश्यक अग हे। सामायिक की आगे की प्रक्रिया है।

सावज्ज जोग पच्चक्खामि'' मे सावद्य योग का दो करण तीन योग से त्याग से त्याग करता हू। आप सावद्ययोग त्याग की इस प्रतिज्ञा द्वारा यह सम भाव की मात्रा सामायिक से प्राप्त कर सकते हे।

(कुछ व्यक्ति झपकी ले रहे है। इसीलिए युवा लोगो का कहना हे कि बुजुर्गों ने बहुत व्याख्यान सुने इसलिए अब वे धाप गये है। युवक लोग सावधानी से सुन रहे हे इसलिए कहते हे कि युवको आगे बेठने दीजिए। युवको को उत्साहित करना चाहिए। यह आपकी व्यवस्था की बात हे, मे इस झझट मे नही पडू।)

आप सामायिक मे दो करण तीन योग से त्याग करते हे उसमे आपका कितना सम भाव रहना ह यह आपक चितन का विषय हे। आपने सामायिक मे यह प्रतिज्ञा ग्रहण की है कि मे 48 मिनिट की इस अवधि तक किसी प्रकार का पाप नही करुगा समता भाव की साधना करुगा। यदि आपके जीवन मे समता [illegible] गया तो जीवन आनन्द मे ओत-प्रोत हो जाएगा- चेतना का [illegible] अभिव्यक्त हो जाएगा।

दिनाक २६-७-८८
बोरीवली, (पूर्व) बबई

१३. सामायिक में हिंसा वर्जन

सामायिक अर्थात् समभाव

तीर्थंकर देव प्रभु महावीर का समस्त उपदेश साधना का उपदेश है। साधना मे भी, सामायिक की साधना को ही उन्होने सर्वोत्तम स्थान दिया है। साधना के भेद प्रभेद बहुत है। विवेचन भी बहुत लबा चौडा है। यदि हम इन सब का निष्कर्ष ले तो यह सब विस्तार इस सामायिक साधना का ही है। जब तक सामायिक का महत्व समझ मे नही आता है तब तक ही दूसरी प्रक्रियाए रुचिकर लग सकती है। जिस रोज सामायिक का स्वरुप समझेगे तब ज्ञात होगा कि वस्तुत इसके जो आचार–विचार हैं। साधु और श्रावक की जो आचार सहिता है। वह एक ही बात का द्योतन करती है कि जीवन मे समभाव का प्रादुर्भाव हो जीवन मे समता रस भय जाए इस समता रस का स्वरुप भी मनोयोग से ही समझा जा सकता है। इसलिए शास्त्रकारो ने इसकी सुविस्तृत व्याख्या की है। इन्ही व्याख्याओ के अतर्गत कुछ विवेचन आपके समक्ष आ रही है।

बताया गया है कि सब भूतो पर– त्रस और थावर पर जो व्यक्ति सम होता है उस व्यक्ति की सामायिक ही शास्त्रीय दृष्टि से सामायिक है लेकिन जिसकी दिनचर्या जिनके जीवन का आचार–विचार सामायिक साधना के अनुरुप नही है उस व्यक्ति के लिए समता से विपरीत ममता भाव विषमता दुख और द्वद ये सब के सब इर्द–गिर्द फिरेगे उसे घेर करके रखेगे। ताकि इस परिधि से कोई व्यक्ति बाहर नही निकले। ये विषम दुर्गुण ऐसा मोर्चा बन कर खडे रहते है कि कही सद्‌गुणी का प्रवेश मनुष्य जीवन मे हो न जाए।

ससर्ग का प्रभाव-दुर्व्यसन फैलाव

दुर्गुण बहुत समय से आत्मा को साथ दे रहे हें। आत्मा भी इनके साथ इतनी तन्मय हो गई है कि दुर्गुणो को ही अपना निजी गुण समझने लगी है। जब कोई व्यक्ति बहुत दिनो तक अफीम खाने का अभ्यास करता है तो अभ्यास की जानेवाली वस्तु कितनी ही अहितकर हो दुनिया के लिए घातक हो मनुष्य के प्राण हरण करने वाली हो स्वय जो व्यक्ति इसको आचरण मे ले रहा है। उसके

जीवन के लिए भी खतरनाक हो, उसमे जिसका सपर्क सध जाता है तो व्यक्ति उसे घातक रुप मे नही मानकर जीवन के साथी के रुप मे मानने लगता है।

आप सरलता से समझे कि बच्चा जब जन्मता है तब उसे उस वक्त माता के स्तन–पान के अतिरिक्त और कोई व्यसन नही होता। बच्चा व्यसन को समझता ही नही है। आगे चल कर जैसा–जैसा उसको सम्पर्क मिलता है, उसे जिन–जिन के बीच रहने का प्रसग आता है उन–उन बच्चो की हरकते सीखता है, माता–पिता के व्यवहार से परिचित होता है, उसमे स्कूल और कॉलेज के सस्कार भर जाते है इन सब स्थितियो के साथ यदि उसका सहयोगी कोई आवारा व्यक्ति मिल गया जो कि नशा करने वाला है, बीडी या सिगरेट पीने वाला है और वह इससे कहे कि देख सिगरेट की एक फूक तो ले, पहले तो इसके लिए उसकी तैयारी नही होगी, क्योकि वह इसका जन्मजात सस्कार नही है। लेकिन कभी–कभी व्यक्ति अपनी कमजोरी को नही समझ पाता और उन व्यक्तियो के कहने मे आ कर सिगरेट की फूक का स्वाद लेता है तो उस समय अटपटा लगता है, चक्कर आ जाता है, शरीर की कोशिकाए स्वीकार नही करती। क्योकि वे शरीर के प्रतिद्धदी तत्वो को अन्दर प्रवेश नही होने देती। वे रोग के कीटाणुओ को भी शरीर मे प्रवेश नही करने देती। शक्ति भर उनसे लडती है, लेकिन जब वे कमजोर हो जाती है तो कीटाणु प्रवेश कर जाते है। इसीलिए शरीर के सरक्षक तत्त्व विरोध करते है लेकिन वह व्यक्ति जो सिगरेट की फूक लेने वाला हे, उनकी विरोधक शक्तिया दबाकर, साथियो के कहने पर फूक लेता हे और उसके वे साथी देखते है कि अकेले क्यो रहे, और साथी बना ले। वह एक वक्त, दो वक्त, तीन वक्त जेसे–जैसे धुआ फूकना सीख जाता है। उसके पश्चात उसके साथियो का चक्कर चलता है धार्मिकता भले ही छूट जाए परिवार के सदस्य, अलग पड जाये, लेकिन सिगरेट नही छूट सकती। यह वृत्ति उन पुरुषो की वन गई जिनमे सस्कार नही थे लेकिन कुसगति मे चलता हुआ वह व्यक्ति न तो परिवार को गिनता हे जब कि शरीर भी उसकी उपेक्षा कर देता हे। चाहे कुछ भी हो, उधार भी लेगा पर बीडी या सिगरेट पीयेगा। डाक्टरो का कथन ह कि सिगरेट मे इतना पॉइजन है कि धीरे–धीरे वह तुम्हारे जीवन को समाप्त कर देता हे। अमरीकी लोगो ने भी इस पर पाबन्दी लगाने की बहुत कोशिश की सिगरेट के डिब्वो पर भी लिखा रहता हे कि "धुम्रपान स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हे।

इस प्रकार एक छोटी वुरी आदत जीवन को वरबाद कर देती हे। यह एक आदत ही नही ऐसे अन्य कुव्यसन वुरी लत खराव आदत जन्म जात नही

होने पर भी बहुत दिनो से इसका प्रयोग करने से अभ्यस्त हो जाती है।

वैंसे ही इस आत्मा ने आज से नही सैकडो वर्षो से नहीं जिनका कोई छोर नही अनादि काल से इस मोह, ममता के साथ जीवन चलाने का प्रयास किया है इन पर आसक्त हो गया है। दुर्गुणो को साथी मान लिया है। कुछ व्यक्ति यह समझ जाते है कि ये दुर्गुण मरे जीवन को समाप्त कर देगे। कितु अधिक अभ्यस्त हो जाने के कारण एकाएक छूटते नही। इसीलिए यदि उनको साधना का मक्खन साधना का सत्व सामायिक की प्रेरणा दी जाती है तो उनकी रुचि उधर नहीं होती। वह यह समझता ही नही है कि सामायिक क्या है? यह समझता है मोह, वह समझता है राग–द्वेष वह समझता है विषमता, वह चाहता है कि अधिक से अधिक धन इक्टठा करु। वह यह नही समझता कि ये सब जिदगी को खत्म करने वाली खतरे की घटी है। यह बात उसकी समझ मे नही आती। लेकिन जो भाग्यशाली है वे समता की साधना करते हैं। जिनके माता–पित्ता के दिये हुए सस्कार है वे घूम फिर कर इसी पर आयेगे। पाश्चात्य सस्कृति छोडेगे। वैज्ञानिक हो, राजनीतिज्ञ हो या अन्य व्यक्ति हो उन्हे समता के इस मार्ग पर आना ही पडेगा। आज नही तो कल आयेगे ही– यदि उन्हे आत्म शाति की चाह है।

सामायिक साधना का ऐसा सहज स्वरुप प्रभु महावीर ने बताया फिर क्या कारण है कि आप एक घटा भर भी साधना नही कर सकते? इस साधना मे जो बाधक तत्व हैं उनकी रुकावट उन्हे अवरुद्ध करने के लिए इस पाठ मे सकेत दिया है। "करेमि भते।' हे भगवन् मैं सामायिक करता हू, अर्थात त्रस और थावर जीवो के लि सम होता हू, विषमता की भावना को निकाल कर समता की भावना मे प्रवेश करके इसका अभ्यास करता हू।

बाधक तत्व नही आवे इसीलिए सावद्य योगो का त्याग किया जाता है। मन वचन और काया का योग है। इस योग की वृत्तिया चलती हे। असत्य एव अभद्र भाषा का प्रयोग भी इसी से होता है। 18 पापो का व्यवहार भी इस मन वचन और काया के योग से ही होता है।

सामायिक में विद्युत प्रयोग

आप 48 मिनिट तक सामायिक साधना मे बैठ कर त्रस और स्थावर जीवो पर सम भाव लाने के लिए अभ्यास करते है। इसमे सावद्य योग का त्याग होता है यह त्याग भी 48 मिनिट के लिए होता है। 48 मिनिट तक 18 पापो का त्याग कर के सामायिक मे बैठते हैं। यह त्याग दो करण ओर तीन योग से होगा मनसा वाचा कर्मणा त्रस ओर थावर जीवो के प्रति सम भाव रखना इसका विवेचन पहले किया जा चुका हे।

48 मिनिट तक 2 करण 3 योग से हिसा का त्याग करके बैठे है आरभ ज्या हिसा 24 घटे तक चलती है लेकिन आत्मा को विश्राम देने के लिए सामायिक साधना मे बैठ गये तो आरभ ज्या हिसा भी उतनी देर के लिए नही कर सकते। इसका तात्पर्य यह है श्रावक या श्राविका जीवन निर्वाह के लिए भोजन बनाते है उसमे 6 काय के जीवो की हिसा होती है या आरभ होता है तो क्या सामायिक मे बैठा हुआ व्यक्ति ऐसा कर सकता है? वह ऐसा नही कर सकता सामायिक मे बैठा हुआ व्यक्ति 6 काया के जीवो का मित्र बन कर बैठा है। कल्पना करिये कि एक व्यक्ति अधेरे मे सामायिक ले कर बैठा है। उसकी इच्छा हो गई कि कोई धार्मिक पुस्तक पढ लू। कमरे मे बिजली का बल्ब लगा हुआ है तो क्या वह बिजली के प्रकाश मे पुस्तक पढ सकता है? जो प्रतिज्ञा की है उसका ख्याल रखिये। इसमे 6 काया के जीवो की हिसा सुनिश्चित है। बिजली बादर तेउकाय है। खुला व्यक्ति, जो गृहस्थाश्रम मे है वह इसका उपयोग करता है। लेकिन जब साधना मे बैठा है तब इसका उपयोग नही कर सकता। आप प्रत्यक्ष देख सकते हैं कि रात्रि मे जब बिजली का बल्ब जलता है तब उससे 6 काया के जीवो की कितनी हिसा होती है? मच्छर, पतगे आदि कीटाणु इससे मरते है। आप देरी से उठते है तब तक तो आपका नौकर बुहारी लगा कर साफ करके बाहर फेक देता है। आप यदि जल्दी उठकर देखे तो पता चलेगा कि इससे मरे हुए जतुओ का कितना ढेर हो जाता है? इतनी हिसा हो जाती है, ऐसी स्थिति मे बिजली के प्रकाश मे सामायिक मे बैठे हुए क्या आप पुस्तक पढ सकते है? आप कहेगे कि हमने क्या आरभ किया? माल लीजिए आप पुस्तक बिजली के प्रकाश मे पढ रहे है, आपको पढने मे रस आ रहा हे और अचानक पावर हाउस से बिजली चली गई, उस समय आपकी इच्छा क्या होगी? यही कि जल्दी पावर हाउस चले प्रकाश आवे और मै पुस्तक पढू। जैसे आप पुस्तक पढने के लिए पावर चाहते है वैसे ही कत्लखाना चलाने वाला कसाई भी चाहता है कि जल्दी पावर आए और उसका कत्लखाना चालू हो व इसी तरह से वैश्या भी चाहेगी कि जल्दी पावर आवे और अपना कार्य प्रारभ करु। तो इन सबके साथ आपकी भागीदारी हो गई क्योकि सभी समान इच्छा रखते हे कि पावर जल्दी आवे। आप चाहे बडी सख्या के भागीदार है या छोटी सख्या के लेकिन इस भागीदारी मे पाप के भागीदार आप भी होगे। क्योकि आप मन से कहते है कि जल्दी पावर हाउस चले। और पावर आने पर आप प्रफुल्लित हो गये। ऐसी स्थिति मे आपकी समभाव एव सावद्य योग त्याग की प्रतिज्ञा रही या गई?

हम यहा प्रभु द्वारा उपदर्शित साधना के विषय मे विचार कर रहे है। आप

साधना मे बैठे हैं, एक महाशय 6 काया के जीवो की हिसा से पैदा होने वाली बिजली का माइक लगाकर उसके माध्यम से व्याख्यान दे रहे हे। उस समय वह स्वय बिजली को काम मे ले रहे है तो उनका छ काया के जीवो पर सम भाव रहेगा या जायेगा सावद्य योग त्याग की प्रतिज्ञा रहेगी या नही? उसकी सामायिक का क्या हाल होगा? जो श्रावक है और इस प्रकार सामायिक मे बेठा हुआ बिजली का उपयोग करता है तो उसकी सामायिक भी नही रहती है तो क्या मुनि की सामायिक रहेगी? आप कुछ गहराई से चितन करिये।

कल्पना करे जिस समय श्रोतागण तन्मयता से सुन रहे हैं, वक्ता अहिसा की बात कर रहा है सुनने वालो को रस आ रहा है उस समय अचानक बिजली चली गई तो वक्ता क्या सोचगा और श्रोता क्या सोचेगा कि जल्दी बिजली चालू हो और मैं अपना कथन पूरा करु और श्रोता सोचेगे कि जल्दी बिजली चालू हो हम आगे सुने। यह विद्युत सचित पदार्थ की स्थिति मे है। अत जो व्यक्ति सामायिक साधना मे बैठा है वह बोल नही सकता। जो लोग सुन रहे हैं वे भी बिजली के जीवो का सहार करवा रहे हैं। छोटे–मोटे परिवार के सदस्यो को घात करे और कुछ बडे व्यक्तियो का मनोरजन करे इससे क्या पायेगे? यह चितन का विषय है। यह ऐसी वैसी साधना नही है यह आत्म साधना है अत इस प्रकार की हिसा का प्रसग साधना मे नही आना चाहिए।

साधना के समय त्रस और थावर जीवो के प्रति समभाव रखना चाहिए। सामान्य सी जानकारी वाले भी जानते है कि छोटे–मोटे जीवो को जिनको हम परिवार के सदस्य के समान समझते है नही मारना चाहिए। लेकिन प्रचारक बन कर जो इनको मार रहे हैं इधर अहिसा का उपदेश दिया जा रहा है ओर उधर छोटे–मोटे प्राणियो की हिसा की जा रही है। यह तो ऐसी स्थिति है कि रक्त से भर हुआ कपडा रक्त से ही धोया जा रहा हे तो क्या वह साफ होगा?

यह विषय आपके सूक्ष्म लग रहा होगा कितु आपको चितन करना होगा। तभी साधना के निस्यद सामायिक रुपी इस समता रस का पान कर पायेगे। कल्पना करिये आप किसी को क्लेश पहुचा कर आये ओर यहा पर साधना मे वेठ गये तो आप समभाव की साधना कर सकेगे। चाहे आप परिवार के सदस्यो से ही झगड कर आये हो अथवा धर्म पत्नी को उल्टी सीधी बात कह कर आये हो और फिर सामायिक मे बेठे हो तो आपका मन क्या कहेगा? आपके मन मे कई तरह के विचार आयेगे कि उसने यह कहा ओर मेने यह उत्तर दिया– इस प्रकार अनेक प्रकार के विचार आपके मन मे आयेगे। उस समय सामायिक की जायगी तो साधना नही बन पायेगी।

सत्य ही नही मधुर सत्य बोलें

भगवान ने बताया कि पहले मन को साफ करो। मन को आज्ञाकारी बनाओ। मैने सामायिक साधना का स्वरुप बतलाते हुए तस्स उत्तरी का पाठ, लोगस्स का पाठ, करेमि भते के पाठ का उच्चारण उनका अर्थ व महत्व बतलाया। अब सामायिक का स्वरुप बताया जा रहा है। हिसाकारी वृत्तियो से बच कर सम भाव की साधना सामायिक साधना है। सम भाव तभी प्राप्त होगा जबकि मानसिक दृष्टि से हिसाकारी प्रवृत्ति छूटेगी, झूठ बोलना छूटेगा। आप कहेगे कि हम कहा झूठ बोल रहे है। लेकिन झूठ क्या है, इसको भी समझना होगा। किसी के दिल को तोडने के लिए कठोर शब्दो का प्रयोग करते हो, तो क्या वह झूठ नही है? ज्ञानी जन ऐसे सत्य का भी निषेध करते हैं। जो किसी को पीडित करता हो। किसी काणे व्यक्ति को काणा नही कहना। यद्यपि वह काणा है। लेकिन कटु सत्य नही कहा जाता। मै सत्य बोल रहा हू, लेकिन कौनसा सत्य? सत्य होना चाहिए मधुर, लेकिन आप बडल फेक देते है। काणे को काणा नही कह कर आप कह सकते है कि आपके नेत्र मे तकलीफ महसूस होती है। इस तरह से आप सम भाव रख कर साधना करोगे तो सफल हो सकोगे।

आपके समक्ष करेमि भते की बात कही गई। आगे सामायिक के प्रत्याख्यान मे कहते है कि एक मुहूर्त तक या जब तक नहीं पालू तब तक के लिए पचका दे। आप परपरा से यह उपशान्तवाली सामायिक करते आये है लेकिन मूल पाठ का चितन होना चाहिए। इसे अभी नही कहूगा, क्योकि समय आ रहा है।

जो वास्तविक सामायिक लेते है वे पहले शुद्धि करके सामायिक के क्षेत्र मे प्रवेश करते हैं। वह एक मजदूर भी हो सकता है, रसोई घर मे काम करने वाला भी हो सकता है। यह मत समझिये कि यह साधना हमारे लिए ही है, या अमुक जाति के लिए ही है। यह तो सारी मानवता के लिए है। लेकिन शर्त यह है कि जो व्यक्ति इसे सही रुप से अपना सके उसके लिए है। आप इस साधना को कुछ समझने का प्रयास करे एव अधिक से अधिक व्यक्तियो मे प्रेरणा भरे। बस आज इतना ही।

दिनाक २७-७-८४
बोरीवली (पूर्व) बबई

१४. सामायिक अमृत बूंटी

अतिम तीर्थकर प्रभु महावीर ने भव्य जनो के उपकारार्थ ऐसी जडी–बूटी दी है जो आत्म कल्याण का अमृत पाथेय है। जडी–बूटी का तात्पर्य वनस्पति की जडी–बूटी से नही है, कितु ऐसी बूटी से है जिससे मानव अमरता प्राप्त कर सके। प्रत्येक मनुष्य की आतरिक भावना यही रहती है कि यह सदा–सदा के लिए आनन्द की सम स्थिति मे बना रहे और यह भावना उसकी मूल भावना है। कितु यदि इस भावना के अनुरुप ही वह पुरुषार्थ करने लग जाए उसी अनुरुप अपना सकल्प बनाले तो तदनुरुप ही फल प्राप्त कर सकता है।

दृष्टि अविनाश की ओर

जब तक व्यक्ति का लगाव ससार के पदार्थो की तरफ है तब तक वह अपनी समरुप बने रहने की भावना को साकार रुप नही दे सकता। ससार के पदार्थ नाशवान है क्षण भगुर हे प्रतिक्षण विनिष्ट होने वाले हैं ऐसे प्रति समय विनिष्ट होने वाले पदार्थो की तरफ आसक्त बनने पर उसकी अवस्था भी नाशवान के रुप मे परिणत होगी। यद्यपि उसके मौलिक रुप का नाश नही हेगा तथापि जो विकसित आत्म प्रदेश हैं वे सकुचित हो जायेगे। उनमे जितने गुणो का विकास किया वे दब जायेगे। आत्मा उर्ध्वमुखी नहीं बन सकेगी। अत प्रत्येक व्यक्ति का अविनाशी तत्व स्थाई भाव की तरफ लगाव होना चाहिए। लगाव का तात्पर्य आकर्षण से है। वह यह चितन करे कि इस आकर्षण मे भी वस्तु स्वरुप की दृष्टि से मेरा निजी स्वरुप ही है। मुझे अमर बनाने वाली जडी बूटी के तुल्य यह स्वरुप है और यह स्वरुप है सामायिक।

आज आम व्यक्ति की सामायिक कुछ व्यवस्थित नही बन पा रही हे। आज अधिकाश व्यक्तियो ने सामायिक का ऊपरी रुप ही अपना लिया ओर यही कारण है कि उसमे रस नही आता जिससे अधिकाश लोग इस सामायिक की तरफ जाना ही पसद नही करते। जो इसमे नजदीक जाना पसद नही करते उनका अपराध नही हे। उन्होने विषय को समझा ही नही हे। उनके अदर की भावना यह है कि मैं अमर बनू। लेकिन अमरता की इस जडी–बूटी सामायिक पर उनका धन कद्रित नही हुआ है। सामायिक साधना की भी अपनी एक विधि हे कला ह उसक

अनुसार अनुष्ठान करने से वह सामायिक भी हमे अमर बना सकती है।

सामायिक का सामान्य अर्थ है समभाव और वह आत्मा का गुण है। आत्मा का गुण आत्मा से कभी अलग नही होता। वह सदा आत्मा के साथ ही रहता है।

इस आत्मिक गुण को विकसित किया जाए तो एक न एक दिन समता की परिपूर्ण साधना बन जाएगी और जिस रोज साधना परिपूर्ण बन जाएगी उस रोज आत्मा आत्मपरिणति मे एक रुप हो जाएगी।

साधना का लघुतम बीज- सामायिक

वट वृक्ष का प्रारभ एक छोटी अवस्था से होता है। वट वृक्ष एक नन्हे से बीज से प्रारभ होता है। मक्का या धान का बीज उससे बडा होता है। लेकिन वट वृक्ष का बीज आपने देखा हो तो आश्चर्य होगा कि अफीम का बीज कितना छोटा होता है उससे भी छोटे बीज मे बड का वृक्ष समाया हुआ है। लेकिन उस छोटे से बीज को अकुरित करके उसके बाद उसका सरक्षण परिपूर्ण रुप से हो तो वह छोटा बीज विशाल वट वृक्ष बन जाता है।

वैसे ही यह सामायिक साधना बहुत स्वल्प गिनी जाती है। लेकिन यदि कुछ गहराई से चितन किया जाए तो यह वटवृक्ष के बीज के तुल्य अमर जडी है– बीज है और इसको अकुरित, पल्लवित और पुष्पित किया जाए तो फलित होने पर आत्मा को अक्षय आनद से सपन्न बना सकती है।

जहा परिपूर्णता आयेगी, वहा जो आत्मा का स्वरुप होगा, उसकी कोई उपमा नही दे सकता। बड वृक्ष की उपमा एकदेशीय है। कोई उपमा दी जाती है तो एकदेशीयताको ले कर दी जाती है, न कि सर्वदेशीयता को लेकर।

ऐसी सामायिक साधना किस विधि से करनी चाहिए, इसका सकेत मै कुछ दिनो से देता चला आ रहा हू। जिन भाइयो ने लगातार सुना है– कदाचित् स्वल्प ने नही सुना हो उनके ध्यान मे होगा कि यह साधना कैसी है।

तीर्थंकरो ने जिस विधि का उल्लेख किया है, उसमे

"करेमि भते सामाइय सावज्ज जोग पच्चक्खामि
जास नियम पज्जुवासामि दुविह, तिविहेण

''जावनियम का मौलिक अर्थ''

यहा जाव नियम का अर्थ है सामायिक की एक निश्चित अवधि काल मर्यादा। सामायिक का नियम 48 मिनिट का है, यदि एक सामायिक करना है तो 48 मिनिट का समय वना ओर दो करता है तो 96 मिनिट का होगा, लेकिन इससे कम नहीं होगा तो जहा नियम शब्द आया वहा दो सामायिक लेना है तो दो ओर

तीन लेना है तो तीन सामायिक कहना चाहिए। इससे यह तो फलित होता हे कि जितनी सामायिक करने की भावना है उतनी एक साथ या अलग–अलगं भी पचखी जा सकती है। कितु एक परपरा यह भी हे कि एकबार मे एक ही सामायिक पचखी जा सकती हे। कभी–कभी यह भी कहा जाता है कि जब तक नही पालू तब तक मेरी सामायिक है। एक सामायिक 48 मिनिट मे पूरी होगी ओर आपका 60 मिनिट तक बैठने का प्रसग आ गया तो 12 मिनिट अधिक बेठे तो उसकी भी गिनती सामायिक मे होगी क्या? 5 मिनिट अधिक बैठे तो 5 मिनिट की भी गिनती होगी क्या? जिस सामायिक का उल्लेख चल रहा हे उसमे 5–10 या 15 मिनिट की सामायिक का विधान हो तब तो आप प्रत्याख्यान पाठ के साथ कह सकते हैं कि जब तक नही पालू तब तक एक सामायिक के उपर का त्याग। कितु जितनी सामायिक पचकी है उस से जो अधिक समय निकला हे वह गिनती मे नही आयेगा। अतिरिक्त समय मे आपे चाहे नवकार मत्र पढे। यदि आप यह नियम कर लेते हे कि एक सामायिक से ऊपर नही पालू तब तक दो करण तीन योग से सवर रखूगा तो भी लाभ मिल सकता है।

तथापि जब तक नही पालू तब तक की छूट सतो ने इसलिए दी हे कि नही मामा से काणा मामा भी अच्छा हे। आप जब तक बैठे रहे तब तक सामायिक। लेकिन इसमे सामायिक का पूरा सकल्प नही रहता। यदि आपकी भावना सामायिक लेने की है तो पहले ही दो पचक ले कितु भावना यह रहती हे कि पचकू या नही पचकू? इसलिए 5–10 या 15 मिनिट अधिक हो गये तो सोचेगे कि चलो इतने मिनिट ओर निकल जायेगे। फिर महराज से जा कर कहेगे कि महाराज पहले का काल मिला कर दो सामायिक पचका दो– तो यह सामायिक पूर्ण नही हे। इससे लाभ तो होगा लेकिन उतना लाभ नही होगा। आप कहेगे कि लाभ क्यो नही होगा– हमने तो पचकखान तो किया हं लेकिन आपके दिल मे कचावट रही कि दुसरी सामायिक करु या नही करु। परिपक्वता या पक्का इरादा नही होने से पूरा लाभ कैसे मिलेगा।

एक व्यक्ति को कल उपवास करना हे। वह उपवास के पूर्व दिवस ही सध्या के समय चोविहार के पश्चात् उपवास पचकेगा तो उसको पूरा फल मिलगा कितु यदि कोई सोचता हे कि कल उपवास करना तो हे। पचकना भी ह लेकिन कल पचकूगा। दूसरे दिन सोचता है कि दिन भर भूखा रह सकुगा या नही अत बाद मे पचकूगा। मन मे कचावट कमजोरी रखता हें ओर सध्या क समय आ कर कहता है कि महाराज अब आज का उपवास पचका दो। उपवास पचका दिया लकिन उसको लाभ उतना नही मिलेगा जितना मिलना चाहिए। जरा कचावट

उपवास नही पचकने वाले के मन मे है वैसी ही दशा सामायिक करने वाले की है। जिसने सामायिक का पच्चक्खान पूर्व काल मिला कर किया तो वह सामायिक उस उपवास की तरह है जिसने सध्या होते होते उपवास पचका है।

इसलिए सामायिक करने वाले को यह सावधानी अवश्य बरतनी चाहिए कि यदि दो सामायिक करनी है तो दृढ सकल्प करके कर लीजिए। सामायिक नही हो सके तो सवर कर लीजिए, ताकि समय व्यर्थ नही जाये।

सामायिक का शुद्ध स्वरुप जो शास्त्रकारो ने बताया है उसके अनुसार सावद्य योगो का त्याग करने के बाद 48 मिनिटो मे सामायिक की साधना होती है।

आप यह सोच ले कि हमने सावद्य योगो का त्याग कर लिया और हमारी सामायिक हो गई। तो एक अपेक्षा से कुछ लाभ होगा, लेकिन पूरी सामायिक नही होगी। सावद्य योग मे पापकारी कार्य नही करेगे, क्योकि उसका त्याग किया है। 48 मिनिट तक एक स्थान पर बैठते है, धर्मस्थान मे रहते है फिजूल की बाते नही करके ज्ञान–ध्यान की चर्चा करते है तो यह शुद्ध सामायिक होगी। सामायिक भी प्रकार का तप है। सामायिक का स्वरुप यदि आपने पूरा नही समझा है और वर्तमान की प्रचलित आधी अधूरी द्रव्य सामायिक ले कर ही बैठे है तो आप अपेक्षा से खुले रहते है तो और इस प्रकार पाप कालिक आप की आत्मा के साथ आता रहता है।

खिडकिया बनाम आश्रव

कल्पना कीजिए कि एक बगला है उसमे पाच खिडकिया हैं और पाचो खुली है, उनसे हवा आ रही है ओर साथ ही धूल भी आ रही हे तो आप अपने कमरे को धूल से साफ कर सकेगे क्या? आप कचरा निकालना चाहते हैं, बुवारी फेर रहे है कितु इधर आप कमरा साफ करते है और उधर–उधर से खिडकियो मे से धूल वापिस आ रही है तो कमरा साफ नही कर पायेगे।

इसी तरह अब आप खुले रहते हैं सवर की वृत्ति मे नही रहते है तो पाच आश्रवो से पाप का कचरा आता रहता है, यदि आप सामायिक का स्वरुप पूरा नही समझे है ओर न उसका विधिवत् सम्यगाचरण ही करते है ओर इसी स्थिति मे मन को साफ करना चाहते है सम भाव की मात्रा लाना चाहते है तो नही ला पायेगे इसके लिए सवसे पहले खिडकियो को बद करने के समान ही आश्रव के पाच द्वार होते हे– उनको रोक देवे। जेसे कमरे मे कचरे आने की खिडकियो को वद किये बिना कचरा पुन पुन कमरे मे भर जाएगा– साफ नही होगा। आश्रवो को राकने के बाद सामायिक मे बेठेगे तो परिपूर्ण साधना बनेगी। आपने आश्रव

रोक दिये सावद्य योगो का त्याग किया तो पाप के आश्रव रुक गये। सामायिक पचकने वाला व्याख्यान होता है तब तक बैठा हे बीच मे उठने का प्रसग नही आता। लेकिन फिर भी मन मे दृढ सकल्प नही हे इसलिए एक साथ अधिक सामायिक नही पचकेगा। तो उसके आश्रव पूरे नही रुकेगे।

सामायिक एक तप

जिन्होने सामायिक पचकली है उन्होने मन की इच्छाओ का निरोध किया। तप की परिभाषा मे 'इच्छा निरोधस्तप ' इच्छा का निरोध करना ही तप हे। आपकी खुला रहने की इच्छा थी उसका निरोध किया इस दृष्टि से आप सामायिक ले कर बेठे है तो वह तप होगा।

दूसरा तप है प्रतिसल्लीनता। कषाय प्रतिसल्लीनता ओर इद्रिय प्रतिसल्लीनता। इद्रियो को थोडा काबू मे किया। खुला रहने वाला सिनेमा मे जा सकता हे लेकिन सामायिक पचक कर 48 मिनिट तक वैठा हे तो क्या उसकी इच्छा होगी कि सामायिक से उठकर सिनेमा मे चला जाउ– मन कितना भी लालायित हे लेकिन सामायिक मे बैठा हैं इसलिए नही जा सकता खुले रुप से जा सकता था। सिनेमा मे इन्द्रिय विषय को देखता लेकिन अब वहा गये बिना देख नही सकता इसलिए यहा भी इद्रिय विषय का निरोध हुआ अत सामायिक मे कही नही जाना तप कर श्रेणी मे आ गया।

सामायिक मे बेठा है वहा बैठने का स्थान कम मिला। कभी–कभी सामायिक करने वाले लोग अधिक सख्या मे आ जाते हे तो सख्या बढ जाने से सिकुड कर बैठना पडता है। स्थान की कमी क कारण मन मे सकल्प–विकल्प नही आते बल्कि प्रसन्नता अनुभव करते है कि इतने साधर्मी भाई आये हें में सिकुड कर बैठूगा तो उनको भी लाभ होगा यह भावना होती है तो यह भी तप की भावना होगी। किंतु यदि वह सोचता है कि इतना स्थान तो मेरे लिए रिजर्वड हे। उस स्थान पर कोई दूसरा बेठ जायेगा तो उस पर लाल पीला होगा मेरे तुम्हारी कोहनी लग गई अब सामायिक नही करुगा। क्या ऐसे विचारो से कषाय प्रति सल्लीनता तप होगा? कषाय का शमन करने के लिए तो न मालूम कितनी कोहनिया सहन करनी पडती है। यो तो घर मे बेठ कर भी कई छोटी–छोटी बातो का सामना करना पडता हे। इसलिए सामायिक करने वाले को उदारता का बर्ताव करना चाहिये। उसको यह सोचना चाहिए कि सामायिक पौषध आदि करने के लिए यह धर्म स्थान हैं। इसमे उदारता के साथ बेठना चाहिए। अन्य व्यक्ति आवे तो सत्कार की दृष्टि से बैठाना चाहिए। ऐसी उदारता होती हे तो आना सार्थक होता है। मकान वाला महान उपकार करके मकान का उपयोग करने की आज्ञा देता है।

सतो के लिए मकान की आज्ञा दी उसको क्या लाभ होगा? एक व्यक्ति आहार देता है पानी देता है, कपडा आदि आवश्यक वस्तुए देता है और दूसरा मकान की आज्ञा देता है उसने केवल मकान ही नही दिया बल्कि उसने ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप की साधना मे योगदान दिया। आहार–पानी देने से तो कुछ को लाभ मिलता है। लेकिन मकान मे बैठकर शातिपूर्वक धर्म ध्यान की आराधना करने का अवसर प्रदान किया है। कुछ माताओ को ज्ञान नही होता है, इसीलिए भी वे मकान की आज्ञा नही देती। उन माताओ ने अपना कर्तव्य क्या समझा? जो सर्वस्व का त्याग करके त्यागी जीवन मे विचरण करते हैं, वे आवे तो उनका सत्कार सम्मान करना चाहिए। यह उन व्यक्तियो का नही, त्याग का सत्कार सम्मान है, भगवान महावीर के तीर्थ का सम्मान है। देनेवाले ने मकान दिया तो हम पाप के भागी क्यो बने।

जैसे कमरे की खिडकिया बद करके कचरा साफ करते है उसी तरह से आश्रव के द्वार बद करके सामायिक मे बैठकर अगला क्या कार्यक्रम रखे, यह भी सीखना आवश्यक है। आप यह सोचते है कि सामायिक के 32 दोष टाल कर सामायिक कर रहे है तो सामायिक इतने मात्र से नही होगी। जिस उद्देश्य से बैठे है, उसकी पूर्ति नही होगी। बत्तीस दोषो की जानकारी के साथ सामायिक के उद्देश्य एव विधेय की भी जानकारी करके उसे जीवन मे पूर्ण स्थान देगे तो आपका जीवन आनदप्रद होगा।

दिनाक २८-७-८४
बोरीवली (पूर्व) बबई

माननीय जीवन एक बहुमूल्य ऊर्जा है अनत-अनत शक्ति स्त्रोत इसमे भरे पडे हे। इसीलिए ससार के अधिकाश तत्व द्रष्टाओ ने इसे सर्वाधिक महत्व प्रदान किया है। जैन आगमो मे माणुस्स खु सुदुल्लह कहकर इसे दुर्लभ बताया तो व्यास जी ने न हि मानुषात श्रेष्ठतर हि किचित् कह कर इसे सर्वश्रेष्ठ घोषित किया है।

कितु आज इस बहुमूल्य ऊर्जा का उपयोग किस दिशा मे हो रहा है। आज के तथाकथित शिक्षित अपनी प्रतिभा का चद कागज के टुकडो के लिए किस दिशा मे लगा रहे है यह एक विचारणीय ज्वलत प्रश्न है।

हमारे भीतर मानवीय वृत्ति का प्रादुर्भाव हो हम सही अर्थों मे मानव बने एव अपनी ऊर्जा का समाज कल्याण एव आत्मोत्थान की दिशा मे प्रयोग करे

इन्ही सब बिदुओ पर सार गर्भित हृदयस्पर्शी विवेचन पढिये प्रस्तुत प्रवचन मे।

सपादक

१५. आज का मानव और मानवता

बहुमूल्य है यह जीवन

वीतराग देव की पवित्र वीतरागता को स्मृति पटल पर उभारते हुए वर्तमान के परिप्रेक्ष्य मे मानवीय जीवन--मूल्यो का चितन करना है। आगमकारो ने मानव जीवन को ससार की समस्त जीव--योनियो मे सर्वाधिक मूल्य प्रदान किया है। आत्म विकास एव विज्ञान विकास की पूर्ण क्षमता केवल मानव जीवन मे ही है, अतएव वीतराग देव प्रभु महावीर ने जिन चार अगो को अति दुर्लभ बताया है। उनमे प्रथम अग मानुसत्त-- मनुष्यत्व का उल्लेख किया। यहा मनुष्यत्व से मानवीय आकृति नही मानवता को ग्रहण करना चाहिये। मानवीय शरीर की आकृति तो बहुत उपलब्ध होगी, लेकिन मानवता विरले व्यक्तियो मे ही पायेगी। इसीलिए इसको दुर्लभ कहा।

वैसे अन्य प्राणियो की अपेक्षा मानवीय शरीर उपलब्ध होना भी दुर्लभ है, लेकिन मानवीय आकृति की अपेक्षा भी प्रत्येक मानव मे साहसिक रुप से दबी हुई मानवता का विकास ही दुर्लभ है।

अध्यात्मिक जीवन की समग्र शक्तिया मानवीय भूमिका पर ही पल्लवित और पुष्पित होती हैं। आत्मिक शक्ति ही नही, भौतिक ससार मे जो विज्ञान की शक्तिया सामने उभरी हैं। वे भी इसी मानवीय जीवन का परिणाम है।

इसीलिए इस श्रेष्ठ मानवीय तन को प्रजापति की उपमा दी गई है। सतपद उपनिषद मे मानवीय तन को परमात्मा की आकृति बताई है। वहा कहा गया है कि मानव परमात्मा की प्रतिकृति है।

दूसरे शब्दो मे कहू तो यह पुतला परमात्मा का प्रतिनिधित्व ले कर चलने वाला है।

महाभारत के शाति पर्व मै उल्लेख आया है

नहि मानवात् श्रेष्ठतर हि किचित्

मानव से बढकर श्रेष्ठतम अन्य कोई तत्त्व नही है। आज का मानव इन व्याख्याओ की रट भी लगा लेता है। शब्दो का अर्थ भी लगा लेता है कितु वह

मानवीय जीवन का मूल्य नहीं समझ पा रहा हे। कुछ ही व्यक्ति मानवता की भूमिका पर आरुढ होने वाले मिलेगे। अधिकाश मानवीय तनधारी व्यक्ति दानवीय जीवन की प्रतिकृति ले कर चलते रहे हे।

रामायण मे रावण का भी उल्लेख हुआ हे और राम का भी। दोनो का तन मानवीय था। रावण राक्षसी सत्ता से अमिसज्ञित हुआ ओर राम देवी सज्ञा से विभूषित हुए। तन वही आकृति वैसी ही। यह सुस्पष्ट हे कि एक समान आकृति मे रावण भी रह सकता है ओर राम भी।

जहा ईश्वर का सबध है। इस मानवीय तन मे ही ईश्वर पर परमात्मा की शक्ति दवी हुई है। इसी आकृति मे भगवान महावीर जैसी चैतन्य शक्ति भी रही हुई हैं। आज के डाक्टर इस शरीर के भीतरी अवयवो को पहचान रहे हें लेकिन इस शरीर की मौलिक स्थिति क्या है यह किससे सचालित है? इसका सचालन कर्त्ता जो परिपूर्ण स्वतत्रता का धारक हे और इसी पिड मे समाया हुआ हे कोन सा तत्व है? इस और बहुत कम डाक्टरो का ध्यान जाता है।

देह के भीतर

शरीर का ऊपरी रुप एक दीख रहा हे कितु इसके भीतर सूक्ष्म एव सूक्ष्मतम शरीर विद्यमान हें। वैसे आगमिक दृष्टि से शरीर पाच प्रकार के वताये गये हैं। ओदारिक, वेक्रिय आहारक तेजस ओर कार्मण। हमे केवल ओदारिक शरीर टी दृष्टिगत होता है। अन्य तैजस कर्मण जो इसी शरीर मे सयुक्त रहे हुए हे हमे दिखाई नही देते हैं।

जब हमे सूक्ष्म शरीर भी नही दिखाई दे रहे है तो इन शरीरो का निर्माता–नियता एव धारक जो कि सूक्ष्माति सूक्ष्म हे केसे दिखाई दे सकता हे। जो चर्म चक्षुओ दृष्टिगत नही हो रहा है वहा विज्ञानवान् आत्मा हे। यद्यपि वह विशिष्टतम वैज्ञानिक अपनी शक्ति का उपयोग करना चाहता हे कितु इस शरीर के आवरण मे इतना दव गया हे कि उसकी समस्त शक्ति मुरझा गई ह। वह स्वय विकास हेतु आगे वढना चाहता हे बाहर आना चाहता हे लेकिन अमानवीय तत्व राक्षसी तत्व आसुरी शक्तिया इस वैज्ञानिक को बाहर उभरने नही देती। वे अपना सामाज्य जमा कर चल रही हे।

यद्यपि इन शवित्तयो का स्पतन्त्र कोई अस्तित्व नही हे। इन शक्त्यिो का निर्माण भी इसी वेज्ञानिक ने किया हे। शवित्तया का निर्माण करन क पश्चात यह पज्ञानिक गफलत म रहा आर उन्होने इस पर आधिपत्य प्राप्त कर लिया। यदि यह शरीर पिड मे रहने वाला ज्ञानवान वज्ञानिक अपने स्वय के स्वरप का पहचान ल तो इन सभी आवरणो का हटाकर क चार विश्व म एक अपूर्व ज्योति जगा

सकता है। यह ज्योति जगाने का माध्यम शरीर है। वह तभी सभव है जब कि मानव मानवता को सुव्यवस्थित करे।

मनुष्य कहने से सामान्य रुप से सभी मानवो का ग्रहण हो जाता है। कोई मनुष्य नही बचता है। वैसे ही मानवता कहने से एक भावात्मक स्थिति उभरती है।

इस शरीर का मुख्य अग मस्तिष्क है, जो सपूर्ण शरीर का केद्र बिदु है। इस मस्तिष्क मे कौन–कौनसी शक्ति किस रुप मे कार्य कर रही है। इसका अनुसधान अन्य नही, यह स्वय ही कर सकता है। कितु आज का मानव इस गरिमामय महान उपलब्धि का सदुपयोग कर रहा है यह विचारणीय है। आज भी अधिकाशतया इस मानवीय शक्ति का दुरुपयोग ही होता दिखाई दे रहा है।

जीवन का उपयोग

एक बहुत बडा जौहरी था, जिसने अपनी जिदगी मे बहुत जवाहरात का सचय किया, परीक्षण किया, व्यापार किया, बडी पूजी एकत्रित की। उसकी दृष्टि से सार तत्व के रुप मे तीन चद्रकात मणिया आ गई। उसने सोचा कि ये चद्रकात मणिया मेरे पुत्रो के लिए ही नही, अनेक पीढियो के लिए पर्याप्त है। मै परलोक यात्रा की तैयारी कर रहा हू। मुझे इन मणियो की पहचान है, मेरे पुत्रो को इतनी पहचान नही है। फिर भी मेरे उपर आस्थावान पुत्र यदि इनका सदुपयोग करेगे तो वह एक पीढी नही, अनेक पीढियो तक शाति और सुख मे अमन चैन का जीवन बितायेगे।

पुत्रो को आह्वान किया, तीनो पिता के सामने उपस्थित हुए पिता ने स्नेह और सौहार्द्र की भावना से पुत्रो के सिर पर हाथ रखा और कहा "पुत्रो, मैं शरीर पिड की दृष्टि से तुम्हारा जनक हू। जनक का कर्तव्य होता है कि उसकी सतान सभी तरह से सुखी और समृद्ध बने– ऐसे प्रयत्न करे।

सतानो का कर्तव्य है कि अपने जनक को व्यवस्थित रुप मे अतिम समय तक सुख और शाति का सबल दे और उनके ऋण से अऋण हो। जनक ने सारी जिदगी सतान के हेतु पाप मे व्यतीत की तो सतान का कर्तव्य है कि अपने माता–पिता का अतिम समय सुखद भव्य तरीके से व्यतीत हो। ऐसा सहयोग दे।

आप लोग अपना कर्तव्य पालन करे या न करे मुझे विश्वास है कि तुम अपना कर्तव्य का पालन करोगे। कितु मुझे सुख शाति दोगे। इस दृष्टि से मुझे कुछ नही कहना हे और न इस भावना से कुछ देना हे, मै अपना कर्तव्य समझ कर मेरी जिदगी का जो सार तत्व मेने आर्थिक दृष्टि से प्राप्त किया हे वह तुम तीनो मे विभक्त कर देता हू। ये तीन वहुमूल्य चद्रकात मणिया है इनका यदि सदुपयाग किया गया तो तुम जिदे हो तब तक ही नही बल्कि तुम्हारी सतानो की अनेक जिदगीयो तक सुख ओर शाति देने वाली होगी।

चद्रकात मणि-प्रदर्शन की दिशा में

एक भाई ने विचार किया कि अधकार परिपूर्ण कमरे मे दीपक जलाने स तेल खर्च होगा। क्या ही अच्छा हो कि इस चन्द्रकान्त मणि को रात्रि के समय ऊचे स्थान पर रख दिया जाए सारी रात्रि तक प्रकाश रहेगा। उसने उस अमूल्य मणि का वेसा ही उपयोग किया। उसके मन मे बात समाई नही उसने अपनी मणि का प्रचार प्रसार करना प्रारम्भ कर दिया कि मेरे पिताजी मुझे ऐसी मणि दे गये हे जो अधेरे मे प्रकाश करती है। उसक कारण मुझे तेल खर्च नही करना पडता। रात्रि भी प्रकाश होता हे। मैने उसे ऊचे स्थान पर रख दिया हे।

यह एक मनोवैज्ञानिक तथ्य हे कि बहुमूल्य वस्तु को अधिक प्रचारित नही करना चाहिए उसे जितना गुप्त रखा जाता हे उतना ही सुखप्रद होता हे। लेकिन इतनी गभीरता इतना धैर्य हर व्यक्ति के मन मे नही रह पाता हे। इस भाई को मणि का अधिक प्रचार करते पाया तो किसी का मन चचल बन गया। सब मे मानवता कहा रहती है। जिसमे मानवता होती है वह देखता है कि मेरा हे सो मेरा हे दूसरे का हे वह दूसरे का हे वह मेरा नही हे। लेकिन जिसमे मानवता नही होती वह सोचता है कि मेरा हे वह तो मेरा है ही लेकिन जो दूसरे का हे वह भी मेरा हे। एक असभ्य चोर ने रात्रि के समय उसके घर मे चोरी कर ली। जिन्होंने मानवता का सूत्र नही समझा वे दानवता का सूत्र ले कर चलते है। ऐसे व्यक्ति दूसरो की वस्तु का सग्रह करके आनन्द मनाते ह। इस प्रचार–प्रसार के कारण पहले भाई की मणि चोरी चली गई।

दूसरे भाई ने विचार किया कि मैं इस चन्द्रकात मणि का क्या करु? मुझे तो पाच इन्द्रियो के विषय ही प्रिय हे। इसलिए अधिक से अधिक उनका उपयोग किया जाए। वह स्वय अपने घर से सतुष्ट नही था। सतुष्ट नही था इसका तात्पर्य यह नहीं हे कि उसकी धर्मपत्नी कुरुप थी। सब कुछ सम्पन्नता होते हुए भी अपनी पाशविक भावनाओ पर वह कन्ट्रोल नही कर पा रहा था। वह रावण का साथी बन गया। उसे वेश्या वृत्ति की लत लग गई आर उसने नगर वधु क चरणा म चन्द्रकात मणि भट कर दी।

सपत्ति का सही उपयोग-परमार्थ

तीसरे भाई ने सोचा कि मुझे इस मणि का किसी महान कार्य क लिए उपयोग करना ह। किसी विशिष्ट ज्ञानी पुरुष क सरक्षण मे इस की ज्योत्स्ना [illegible] किये रासायनिक वस्तु का निमाण करके अधिक स्वर्ण का निमाण करके मनुष्य तन मे रहने वाले जितने मेरे भाई ह वसुधैव कुटुम्बकम की भावना की दृष्टि [illegible] [illegible] को सुख सुविधाओ का मुझे प्रयत्न करना ह। इस चन्द्रकात [illegible] [illegible]

भी उपलब्धि हो उसे दुखित मानवो को सुख–सुविधा पहुचाने के लिए विसर्जन कर दू, उनके लिए त्याग कर दू, इस भावना से उसने विशिष्ट पुरुष से सपर्क साधा और रसायन प्रक्रिया से पर्याप्त मात्रा मे स्वर्ण उत्पन्न किया। उस स्वर्ण से सारे देश के व्यक्तियो को सन्तुष्टि दी। उनकी आवश्यकता की पूर्ति करके मानव कर्तव्य को निभाया। लोग जब उसकी तारीफ करने लगे तो उसने कहा कि मेरी तारीफ क्यो करते हैं, भौतिक पदार्थों को जितनी आवश्यकता मुझे है उतनी सबको हे। मेरे पास आवश्यकता से अधिक जो सामग्री है उसका मै दूसरो मे सम वितरण करता रहू। वह इसी भावना से चलने लगा। उसने मानव जाति मे विशिष्ट स्थान प्राप्त कर लिया। उसने सोचा कि यह विशेषता इतने मात्र से समाप्त न हो। मुझे तो आगे दिव्य ज्योति प्रगट करनी है जो मानवीय योनि मे ही प्राप्त हो सकती है। उसका विकास तभी होगा जब कि मै परिपूर्ण सत्यवादी बन जाऊ।

तीसरे भाई ने चद्रकात मणि को जनकल्याण के लिए समर्पित कर दिया। वह परिपूर्ण सत्य ओर परिपूर्ण अहिसा के आधार पर आध्यात्मिक ज्योति प्राप्त करके एक दिन परम सुख और परम शाति को प्राप्त कर लेता है।

बधुओ, यह एक रुपक है। इस विषय मे आप चितन करिये। यदि ऐसी चद्रकात मणि आज के मनुष्यो को मिल जाये तो वे उसका उपयोग किस भाई की तरह करेगे? मे किससे पूछू। पूछ कर उत्तर लेने का प्रसग नही है, लेकिन मैं सवको सवोधित कर रहा हू, यदि आपके सामने चद्रकात मणि रख दी जाए तो उसे लेने वाले कितने आयेगे? कितु उसको ले कर करेगे क्या? पहले भाई या दूसरे भाई की तरह वर्वाद करेगे या तीसरे भाई की तरह उसका सदुपयोग करेगे? आप कहेगे कि आप तो स्वय अपरिग्रही है आपके पास कहा है ऐसी मणि? ठीक हे आपका चितन सुदर हे। कितु इसे भावात्मक दृष्टि से समझे। चद्रकात मणि और सृर्यकात मणि यह मनुष्य का तन ही हे। इसका आज क्या उपयोग हो रहा हे? इस मानवीय तन मे रहने वाली आत्मा रावण की साथी बन रही है या राम की। कर्मयागी श्री कृष्ण ने मानव को क्या कर्तव्य वताया हे? मे किसको क्या हू, चाहे किसी नाम से पुकारा जाए जिन विशिष्ट पुरुपो का उल्लेख हो रहा हे, वेसी परिपूण सत्ता इसी तन मे समाई हुई हे। चद्रकात मणि हे। तो सीमित प्रकाश कर सकती ह लकिन यह मानवीय तन की मणि सारे विश्व को आलोकित कर सकती ह प्रकाशित कर सकती ह वशर्ते कि आप इसका सदुपयोग करना सीख जाये।

आज अधिकाश भाई कुछ आर्थिक सिद्धि प्राप्त करके उसका प्रदर्शन करन लग जात ह। पहल क जमाने म धन ओर रुप का प्रदर्शन कम होता था। इस प्रदर्शन का काय कवल नगर वधुआ तक सीमित था। कितु आज इस मानवीय

का पुरुषार्थ भी मैं जानती हू। लेकिन इसकी पूर्ति के लिए अर्थ चाहिए और अर्थ के लिए समय की आवश्यकता है। जो मानवीय भूमिका से अर्थ उपार्जित करता है वह श्रम करके अर्थ पैदा करता है, लेकिन जो मानवता की भूमिका से खिसक चुका वह सोचता हे कि सिनेमा घरो मे और जासूसी उपन्यासो मे अर्थ प्राप्ति कैसे–कैसे उपाय बताये है, उसी तरह का उपाय काम मे लेना चाहिए।

उस तरुणी ने एक सुदर पोषाक पहनी और टैक्सी मे बैठ कर एक बडे प्राइवेट अस्पताल मे पहुची। बबई के बडे अस्पतालो मे कितनी भीड लगती है यह आप जानते ही है। सभी मरीज क्रम से जाते है क्रमाक से जाना ईमानदारी है, मानवता का रुप है। लेकिन यदि कोई मानवता के विपरित कार्य करे तो डाक्टर के पास जल्दी पहुचा जा सकता है। वह तरुण महिला, कालेज से निकली हुई छात्रा बडी चतुराई से गई। उसने सोचा कि सबसे पहले डाक्टर से कैसे मिलना उसने पाच रुपये का नोट बैग से निकाला और चपरासी के हाथ मे थमाते हुए कहा कि मुझे सबसे पहले डाक्टर साहब से मिलना है। रुपये पाकर चपरासी भीड मे से उस महिला को साथ ले कर डाक्टर के दरवाजे पर पहुचा और डाक्टर के पास जा कर कहा कि एक सपन्न घराने की महिला आई है, पैसे वाली मालूम पडती है। पैसे का नाम आया तो डाक्टर का मन भी ललचा गया और उसने दूसरे सीरियस मरीज को जिसे वह देख रहा था कहा कि तुम फिर आना अभी एक सीरियस मरीज को देखना हे। वह महिला अदर पहुची और ५० रु डाक्टर को भेट कर दिये। डाक्टर ने देखा कि वास्तव मे यह कोई बडी धनवान महिला मालूम होती हें उसने महिला से पूछा कि कहो क्या बात है। महिला ने कहा कि बात क्या हे मे बडी दु खी हू। डाक्टर ने कहा बोलो तुम्हे क्या दु ख है? वह बोली कि मेरे माता–पिता ने जिसके साथ मेरी शादी की है वह शादी के बाद विकृत दिमाग का हो गया हे ओर मुझे तग करता हे। डाक्टर– 'क्या वह पिटाई करता है या पागल हो गया हें? हा वह पागल हो गया है लेकिन अनाडी पागल नही समय का पागल हे। डाक्टर ने पूछा 'क्या पागलपन करता है?'' ''वह जब भी बाहर से आता तव मुझसे कहता हे कि बिल पेमेट करो। किसी बिल के चक्कर मे उसका दिमाग विकृत हो गया अत वह जहा जाता हे, थोडी–थोडी देर मे बोलता है 'बिल पमट करो।' म थोडे–थोडे पेसे दे कर शात करती हू लेकिन आखिर तग आ गई हू। मॅ नारी हू इतना रुपया कहा से लाऊ, आप कृपा करके मेरे पति का इलाज कर द। उसके मस्तिष्क की जाच कर दे। पचास रुपये मेंने आपको फीस के दिये ह। ये पचास रुपये ओर देती हू। वह आपके पास जाच कराने आयेगा तो आपसे भी रुपय मागगा तव आप य रुपये उसे दे देना। उसने पचास रुपये और डाक्टर

के हाथ मे दे दिये। डाक्टर ने कहा कि जल्दी ले आओ। चपरासी से कह दिया कि वह बाई जी आवे तो पहले आने देना।

अस्पताल से चल कर वह महिला एक बडे जौहरी की दुकान पर पहुची। मनुष्य की नजर सबसे पहले आगतुक की पोषाक और आकृति की तरफ जाती है। सेठ की नजर भी उस तरफ गई। महिला को कार से उतरते देखा तो सेठ ने मुनीम जी से कहा कि जल्दी जाओ उसे स्वागत के साथ ले आओ, किसी बडे आफिसर या मिनिस्टर की पत्नी मालूम पडती है। जब वह दुकान पर आई तो सेठ और मुनीमजी ने उसका स्वागत किया और पूछा कि बहिनजी क्या चाहिए। उसने कहा कि मेरे पति देव यहा के बहुत बडे डाक्टर हैं पैसे की उनके पास कमी नही है। घर मे शादी का प्रसग आ रहा है इसलिए अच्छे जेवर चाहिए और अच्छा जवाहरात चाहिए। सेठ ने कहा हा हा लीजिए। उसने जवाहरात और जेवर दिखाये। उस महिला ने अच्छे अच्छे जेवर और जवाहरात छाट लिए। उसने सारे जवाहरात की लिस्ट बनाई और कहा कि आप मुनीमजी को मेरे साथ भेज दीजिए मैं घर पर रुपये दिलवा देती हू। सेठ जी ने सोचा कि आज अच्छे सुगन ले कर आया हू जो इतनी अच्छी बिक्री हो गई। सेठजी ने मुनीम से कहा कि बाईजी के साथ जा कर पचास हजार रुपये ले आओ।

बाइजी के साथ बडे मुनीमजी टेक्सी मे बैठ कर हॉस्पिटल पहुचे हॉस्पिटल का चपरासी बाईजी की राह देख ही रहा था। बाइजी ने उसके हाथ मे पाच रुपये का नोट और थमा दिया। चपरासी ने उसको डाक्टर साहब के सुपुर्द कर दिया और कहने लगी कि हुजूर ये आ गये हे इन्हे देखे उसने दरवाजे के पास खडी रह कर इशारा कर दिया।

डाक्टर ने मुनीमजी से पूछा कि आपका स्वास्थ्य कैसा है? उसने कहा 'मेरा स्वास्थ्य सब ठीक है 'लाइये बिल पमेंट करिये। डाक्टर ने सोचा कि महिला का कहना सही है। उसने कहा कि हा आपको रुपये दूगा लेकिन पहले आपके मस्तिष्क की जाच कर लू। मुनीम ने कहा कि मै पागल थोडे ही हू। लाइए बिल पमेंट करिये। डाक्टर विचार मे पड गया क्या बात है। मुनीमजी ने दरवाजे के पास उस महिला की तरफ देखा जो डाक्टर को हाथ से इशारा कर रही थी कि पचासा दे दीजिए। मुनीमजी सोचने लगे कि यह पचास हजार देने का कह रही है। बहिन का इशारा पा कर डाक्टर ने पचास रुपये मुनीमजी के हाथ मे दे दिये। मुनीमजी ने कहा पचास रुपये से क्या होगा पचास हजार रुपये लाइए। डाक्टर ने सोचा कि वास्तव मे यह पागल है। अब पचास हजार रुपये [illegible] है। डाक्टर ने दरवाजे की तरफ देखा तो बाईजी वहा [illegible]

तो मुनीम जी ने कहा कि मै तो अमुक सेठ का मुनीम हू, यह महिला दुकान से ५० हजार रुपये के कीमती जवाहरात और जेवर ले कर आई थी और कह रही थी कि मेरे पति के पास चलो वहा रुपये दिला देती हू। वह अपने आपको आपकी पत्नी बता रही थी। डाक्टर ने कहा कि मेरी पत्नी कहा है यह तो मुझे अपने को आपकी पत्नी बता रही थी, आपका इलाज कराने के लिए साथ ले कर आई थी। कह रह थी कि मेरे पति को दिमागी बीमारी है, वे बार-बार बिल पेमेट करने की रट लगाते है। डाक्टर और मुनीम एक दूसरे का मुह देखने लगे। मुनीमजी भागे हुए दुकान पर गए और सेठ जी को वस्तुस्थिति से अवगत कराया किंतु अब उस चालाक महिला का कहा पता लगने वाला था।

बधुओ, जो कुछ घटना घटी हो। आप इस पर चितन करिये। इतनी डिग्रिया प्राप्त करने के बाद भी मानवीय जीवन मे इस प्रकार का व्यवहार हो तो यह मानवीय जीवन है या और कुछ? आज क्या कुछ बन रहा है। आज व्यक्ति को शाति नही, परिवार मे शाति नही, समाज, राष्ट्र और विश्व मे शाति नही। यह सारी अवस्था क्यो हो रही है? आज के मानव ने मानवता को तिलाजली दे दी है। आज मानव कैसा-कैसा रुप ले कर चल रहा है। आज के मानव को समझना है कि पाच शरीर क्या है मानवता का धरातल क्या है। यह सारा विषय समय पर ज्ञात होगा। जो बाते आपके समक्ष रखी गई है उन पर आप चितन मनन करेगे तो मानवीय तन मे रहते हुए जीवन का सदुपयोग कर सकेगे। सेठ के तीनो पुत्रो मे से आप किस नबर पर आना चाहेगे, यह आप स्वय सोचे। तीसरे नबर के पुत्र की तरह बनना पसद हो, तो सबसे पहले मानवता की पवित्र भूमिका अदा करिए, मानव-मानव के साथ समता का व्यवहार करना सीखिए। जब तक मानवता नही आयेगी तब तक वास्तविक आनद का अनुभव नही कर पायेगे। आज मानवता मरी नही, दब गई है। उसे पुन अनावृत करना हैं तो समता के धरातल पर आना ही होगा। यदि यह नही तो मानव जीवन का ठीक तरह से सदुपयोग नही बन पायेगा। इसी पर चितन-मनन करेगे तो शाति मिलेगी।

दिनाक २६-७-८४
बोरीवली (पूर्व) बबई

त्याग' वह स्थापना सामायिक की सज्ञा मे आ जाती है।

द्रव्य सावद्य योग त्याग सामायिक ६ काया के जीवो की रक्षा है। अर्थात ६ काया के जीवो का उपमर्दन नही करना एव उनका सरक्षण जहा हो वह सावद्य योग त्याग रुप द्रव्य सामायिक है।

जिस क्षेत्र, जिस स्थान पर बैठ कर ६ काया के जीवो का उपमर्दन नही करते है– दो करण, तीन योग से। इस क्षेत्र के निमित्त से वह ग्रहीत त्याग क्षेत्र सामायिक है।

काल सामायिक को ४८ मिनिट के अतर्गत रहते हुए सावद्य योग की प्रवृति पर अकुश रखता है– सावद्य कार्यो मे मन, वचन और काया के योगो की प्रवृत्ति नही करता, ४८ मिनिट तक इस अवस्था मे स्थिर रहता है वह काल सामायिक है।

मन की समस्या और समाधान

कभी–कभी मनुष्य सोचते है कि ४८ मिनिट तक मन स्थिर नही रह पाता। मन दौड लगाता रहता है। दो मिनिट के लिए भी मन स्थिर नही रहता। वह कहा से कहा चला जाता है। जब मन ४८ मिनिट तक अस्थिर रहता है तो वह काल सामायिक कैसे बन सकती है।

इस जिज्ञासा का समाधान इतना ही है कि जो व्यक्ति ४८ मिनिट के लिए सावद्य प्रवृत्तियो का त्याग करता है वह त्याग तीन योग से करता है मन से, वचन से और काया से तो जो सामायिक पचकने वाला पुरुष है वह क्या ४८ मिनिट की अवधि मे सामायिक के क्षेत्र से उठ करके कही पाप करने के लिए जा सकता है? नही जा सकता। वह शरीर तो वही रहता है, जितनी उसके क्षेत्र की मर्यादा रखी है। इसलिए शरीर की दृष्टि से उसी क्षेत्र और त्याग मे स्थिर है। वचन की दृष्टि से वह पापकारी शब्द नहीं बोल सकता तो उतनी देर तक के लिए सामायिक काल मे वचन भी स्थिर हे।

रहा प्रश्न मन का। मन इस अवधि मे सामायिक की साधना करने मे तन्मय नही होता और दुनिया भर मे चक्कर काटता रहता है उस अवधि मे वह यह कल्पना भी कर लेता है कि सामायिक पूरी होती ही मै व्यापार मे लगू या सामायिक का काल समाप्त होने पर मै रसोई के कार्य मे जुट जाऊ। अमुक लेने देन कर लू, सगे सबधियो से बातचीत कर लू। यह कल्पना या इस प्रकार की अन्य कल्पना मानस मे आ सकती हे कितु यह सारी कल्पना भविष्य से सबधित है। पर कोई भी पुरुष जिसने सावद्ययोगो का त्याग किया है वह ४८ मिनिट के समय के अतर्गत समय मे व्यापार कर लू, रसोई कर लू या अन्य कार्य कर लू ऐसी

कल्पना नही करता। ऐसी कल्पना करता है कि सामायिक पूरी होने बाद करु वह करु। सामायिक पूरी होने से पहले ऐसी कल्पना किस के मन मे आती है? मैं जहा तक समझता हू। चाहे बिना समझ वाला व्यक्ति क्यो न हो उसकी सामायिक चालू है और उसको भूख लगी है माता कर रही हे कि भोजन ठडा हो रहा है जल्दी आ जाओ तो वह कहता कि अभी मेरी सामायिक पूरी होने मे कुछ समय लगेगा। उसने मन मे यह कल्पना नही आती कि मैं सामायिक के काल मे ही भोजन कर लू। इस दृष्टि से ४८ मिनिट के काल मे मन सीमा मे रहता है। यद्यपि उसको भविष्य की कल्पना नही करनी चाहिए कितु कर लेता है। यह कुछ साधना की कमजोरी मानी जा सकती है।

सामायिक करने तो बैठ गये लेकिन आपने इसका हेतु नही समझा। आपने सावद्य योगो का त्याग कर लिया लेकिन सामायिक साधना कैसी करनी चाहिए यह कार्यक्रम मन को नही सौपा तो बिना काम के मन रह नही सकता। उसे कोई–न–कोई कार्य चाहिए। यदि आप सामायिक साधना का कार्य मन के सुपुर्द करके सामायिक करते तो मन सामायिक साधना के कार्य मे लगा रहता आपने सावद्य योगो का त्याग कर दिया तो आपका मन उसमे मजबूत है कि मै सामायिक मे कोई पाप नही करु कच्चे पानी के हाथ नहीं लगाऊ। छोटा बच्चा भी सोचेगा कि कच्चे पानी का लौटा नही उठाउ क्योकि मेरे सामायिक है। इतना सभला रखा है। लेकिन आगे का कार्य मन के सुपुर्द नही किया तो मन का क्या दोष?

मन एक नौकर

एक व्यक्ति आपके यहा नौकरी सर्विस करता है। नौकरी मिली और वह आपके यहा काम करने आया, यदि आपने उसको काम नहीं बताया तो वह आपकी दुकान पर बैठ रहेगा कि हाथ पैर हिलाने की चेष्टा करेगा? और कुछ नही तो लकडी ले कर लकीरे खीचेगा इधर उधर देखेगा आगे की कल्पना करेगा कि इस दुकान के आगे किस–किस की दुकान है और उसमे क्या–क्या माल भरा है वह आने जाने वालो के साथ बात करने की कोशिश करेगा। यदि आप उसको दुकान का कार्य सभला देते हैं और कह देते हैं कि इतने समय तक यह कार्य करो। तो फिर वह नौकर कार्य करने के अलावा दूसरी कल्पना कर सकता है क्या? वह गलत रास्ते पर नही जा सकता। वैसे ही आपका मन भी नौकर है और सामायिक करने वाला कर्ता आत्मा स्वामी है। आत्मा कोई शुभ कार्य उसको नहीं बताती ओर सावद्य योग का त्याग करवा कर सामायिक मे बिठा देती है तो बेठा–बैठा वह दूसरी कल्पना करेगा।

यह द्रव्य मन खतरनाक भी है और सहायक भी है। स्वर्गीय गुरुदेव इस विषय मे एक रुपक दिया करते थे।

मन एक भूत

एक किसान के पास बहुत जमीन थी, सैकडो बीघा। उस सारी जमीन को वह बोना चाहता था, लेकिन पूरे खेत मे खेती करने के लिए मजदूर नही मिल रहे थे। उस किसान ने सोचा कि क्या किया जाए। मुझे सबसे बडी और अच्छी खेती करनी है और इसके लिए कितने ही मजदूर क्यो न रख लू तो भी वे पूरी खेती करने मे समर्थ नही होगे। थोडा समय तो लगेगा लेकिन किसी सिद्ध पुरुष के पास जा कर मै मत्र सीख लू और उस मत्र के सहारे किसी देव का आह्वान कर लू। देव मे बहुत बडी शक्ति होती है। ऐसा शास्त्रकार कहते है। नौकर के वदले मे देव से काम लूगा। देव थोडे समय मे काम निपटा देगा और मत्र की साधना से वह मेरे अधीन हो जाएगा फिर तो मै चाहूगा जैसा कार्य उस देव से लूगा।

इस भावना से वह किसान एक सिद्ध पुरुष के पास पहुचा अनुनय विनय किया कि भगवन् एक ऐसा मन्त्र दीजिए जिससे मै देवलोक के किसी देव को अपने अधीन कर सकू।

सिद्ध पुरुष भी कई तरह के होते हे। आध्यात्मिक साधना को सब कुछ मानने वाले सिद्ध पुरुष कम होते हे लेकिन लौकिक वृत्ति को साधने वाला अधिक होते हे। वह किसान लोकिक साधना वाले सिद्ध पुरुष के पास गया। उस सिद्ध पुरुष ने कहा– भाई ऊपर के देवलोक के देव तो तुम्हारे आधीन नही हो सकते, क्योकि वे इन वस्तुओ से आकर्षित नही होते। उनके लिए तो बहुत बडी साधना ओर मन की एकाग्रता की जरुरत रहती है। लेकिन साधारण देव व्यन्तर जाति के दव या भूत तुम्हारे अन्दर मे आ सकते हे।

उस किसान ने सोचा कि भूत से काम बन सकता है। भूत बहुत काम कर सकते ह। उस किसान न कहा– 'मेरे लिए छोटा देव ही सही।" उस सिद्ध पुरुप न उस किसान को साधना का सूत्र दिया ओर उसी विधि वता दी। वह लगन क साथ साधना सिद्ध करने के लिए वेठा। साधना सिद्ध हुई तो एक नीची जाति का व्यतर दव या भूत उसके सामने उपस्थिति हो गया ओर कहा "वोलो मुझे तुमने क्या आकर्षित किया? किसान न कहा तुमस मुझे वहुत काम हे। भूत वोला" क्या काम करना ह? म आया हू ता दव दर्शन खाली नही जायेगे, कुछ–न–कुछ काम करक जाऊगा। तुम वतलाआ क्या काम करना ह?' किसान ने कहा कि काम मेरे पास बहुत ह लकिन खेती का काम ज्यादा हे इसलिए उसमे लग जाओ। इतन

बीघा खेत बोना है फसल ज्यादा लेनी है। उस देव ने कहा काम तो मैं प्रारम्भ कर देता हू, लेकिन शर्त यह हे कि जब तक तुम काम बतलाओगे तब तक काम करुगा। काम बताना बन्द कर दिया तो मै खाली नही रहूगा तुझे खा जाऊगा। किसान ने सोचा कि यह तो लेने के देने पड गये। वह बडी असमजस मे पड गया। आखिर मे कुछ सोच कर कहा 'मेरे पास बहुत काम है तुमको खाली रहने का प्रसग नही आवेगा। तुम्हारी शर्त मुझे मजूर है। काम नही बता सकू और रुकना हो जाए तो मुझे खा जाना।' देव ने भी शर्त मजूर कर ली और उसको काम बता दिया। बात की बात मे उसने काम पूरा कर दिया और कहा लाओ काम। फसल का सारा काम पूरा हो गया। पटेल और उसका लडका सोचने लगे कि अपने तो और दुविधा मे फस गये।

भूत के लिए काम

वे फिर उस सिद्ध पुरुष के पास गये और उनसे बोले कि आपने देव या भूत को वापस बुला लो नही तो यह मुझे खा जायेगा। साधक ने उसको चाबी बता दी और कहा कि इस तरह से प्रयोग करना। उधर देव कार्य करने आया तो पटेल ने कहा कि जब तक मैं तुम्हे दूसरा काम नहीं बताऊ तब तक तुम सारे ससार के जगलो मे जाओ और वहा सबसे ऊचा पेड हो उसे उखाड कर लाओ। वह गया और सबसे बडा वृक्ष उठा लाया और बोला कि पटेल क्या करु? किसान ने कहा– 'मेरे दरवाजे के सामने इसको गाड दो'' उसने दरवाजे के सामने पेड गाड दिया और बोला बताओ काम नही मै तुझे खाता हू।' पटेल ने कहा 'जब तक तुमको दूसरा काम नहीं बताऊ तब तक तुम इस वृक्ष के ऊपर चढो और उतरो यह काम बराबर करते रहो। तब वह देव बोला कि तू तो मेरे भी सिर से ऊपर का निकला। बोल तुमझे यह कला किसने बताई? उसने कहा जिस सिद्ध पुरुष ने तुझे प्राप्त करने की कला बताई उसने ही तुझे काम पर लगाने की कला बताई। उस देव ने कहा कि उस सिद्ध पुरुष ने तुझे कला बताई हैं तब तो तू जीता और मैं हारा। तू मुझे वृक्ष के ऊपर चढने और उतरने का काम बता रहा है। तू मूझे छोड दे जब तुम्हारा काम होगा और मुझे बुलायेगा तभी मै आ जाऊगा और तुम्हारा काम कर दूगा। पटेल को उचित मार्ग मिल गया और उसने देव को छोड दिया।

इससे आप क्या शिक्षा ग्रहण करेगे? आचार्य देव फरमाते थे कि पूर्व जन्म मे महात्माओ के सपर्क से इस आत्मा ने अधिक पुण्य सम्पादन किया। यह पूर्व जन्म की साधना का फल है कि यह मन मिला। यह मन उस भूत के तुल्य है। इसे यदि काम दे तो काम करता हैं नही तो तुम्हे ही खा जायेगा। यही इस मन की स्थिति है। जब तक इसे काम देते है तब तक सुन्दर ढग से काम करता हे।

और काम नही दे तो किसको खाता है? स्वय की शक्ति को ही खा जाता हे। वह अनेक प्रकार की चिताए अपने सिर पर ले लेता हे। चिता ओर चिता दो शब्द हें। दोनो ही जलाने का काम करती हे चिता जिदा आदमी को जला देती हं ओर चिता मरने के बाद आदमी को जलाती है। चिता जलाती है मुर्दे को ओर चिता जलाती है जिदे को। किंतु चिता से जलने वाला मन हे। जिसके मन हे वह चिता करता है। एकेद्रिय जीव पानी अग्नि और वायु के जीव और बेन्द्रिय आदि के जीव हें उनके मन नही होता। उनके द्रव्य मन नही हैं भाव मन हे। सज्ञी पचेन्द्रिय के द्रव्य मन है। इस भूत रुपी मन के पास काम नही होता हे तो मस्तिष्क मे तनाव पेदा होता है।

तो बधुओ, अपने इस मन को सामायिक साधना मे लगा दीजिए। सावद्य योगो का त्याग कर दिया, ४८ मिनिट तक वह सामायिक मे रहेगा सावद्य योग का कार्य नही करेगा, लेकिन इसे साधना मे नही लगाया तो या तो तुम्हे चिता मे डालेगा या चिता मे जलाने जैसा कार्य करेगा। सामायिक के ६ भेद बताये है उनको अच्छी तरह से समझ कर इस मन रुपी भूत को सामायिक के कार्यक्रम से सबधित कीजिए। यदि ऐसा करेगे तो मन भाग कर नही जाएगा और आप हैरान नही होगे। आपने सामायिक के सूत्र को समझा नही इसलिए हैरान होते है। जिसने इसको समझा है, वे सामायिक सूत्र को याद करके चलते है और सामायिक साधना का वास्तविक आनद प्राप्त करते हे।

दिनाक ३१-७-८४
बोरीवली (पूर्व) बबई

१७. सामायिक साधक का प्रभाव

अतिम तीर्थंकर प्रभु महावीर के साधना का जो सुपथ बताया वही हमारे जीवन का सबल हे। जैसे एक लघु प्रपात है छोटा–सा झरना आगे बढता हुआ विराट रुप ले लेता है। ठीक इसी प्रकार साधना का प्रारभ छोटे स्वरुप से होता है किन्तु वह आगे चल कर विराट रुप धारण कर लेता है। जो साधना प्रारभ मे लघु रुप मे साधी जा रही है वह आगे चल कर विराट बन जाए वही साधना श्रेष्ठतम साधना है।

सामायिक साधना की वर्णमाला

प्रारभ मे विद्यार्थी को जिस वर्णमाला का शिक्षण दिया जाता है अ आ, इ ई क ख, ग आदि वही वर्णमाला आगे की कक्षाओ मे विकसित होती चली जाती है। एम ए मे भी वही वर्णमाला रहती है। विद्यार्थी सफलता तभी प्राप्त कर सकता है। जब कि वर्णमाला का क्रम यथावत् चले। प्रारभ मे वर्णमाला दूसरी बताई जाए वही छूट जाए और एम ए मे दूसरी आए तो वह विद्यार्थी उस विषय मे विकास नही कर सकता।

वैसे ही साधना के क्षेत्र मे प्रारभिक साधना– वर्ण माला की तरह सामायिक साधना बताई गई है। वही विकसित होती हुई विराट रुप मे परिणत होती हे। सावद्य योग का त्याग निरवद्य अवस्था का आसेवन यह सामायिक साधना का प्रारभिक रुप हे। वही सामायिक आगे बढती हुई गृहस्थ मे पोषध का रुप ले सकती है और गृहस्थ परित्याग के बाद सर्वव्रती साधु का रुप ले सकती है। इसी सामायिक के माध्यम से मोक्ष की स्थिति मे परम शाति एकात सुख की अब स्थिति प्राप्त हो सकती है। जिस ४८ मिनिट की सामायिक का विवेचन प्रस्तुत है उसी सामायिक के प्रसग से सावद्य योग के निषेध का विधान है।

सावद्य योग का अर्थ है– पापकारी योग। पाप करने वाला हे मन वचन और काया इनकी जो प्रवृत्ति पाप की हो रही है इन को मोड दे कर इन्हे अहिसक स्थिति मे उपस्थित करना ओर उस अहिसक स्थिति का सम भाव क साथ विकास करना सामायिक की प्रारभिक अवस्था हे।

कल सावद्य योग का निषेध रुप सामायिक के विषय मे ६ भेदो का विवेचन प्रस्तुत किया था। उनमे से जो अवशेष रह गये है उनका कुछ स्वरुप आपके समक्ष आ रहा है।

नाम सामायिक, स्थापना सामायिक, द्रव्य सामायिक, क्षेत्र सामायिक और काल सामायिक इन पाच भेदो का स्वरुप आपके समक्ष आ गया। अब छठा भेद है भाव सामायिक।

भाव सामायिक

सामायिक की सुरक्षा के लिए सावद्य योग का त्याग नितात आवश्यक है। भाव सामायिक उन पाचो मे प्राण फूकने वाली है। पाच भेद जो बताये गये है उन भेदो मे यदि भावो का प्राण है तो सामायिक के सावद्य योग का त्याग सही रुप मे पालन होगा। जैसे नाम से सामायिक की चर्चा मे कहा, आपसे कोई पूछे कि आप क्या कर रहे है तो आप कहेगे कि हम सामायिक कर रहे है। यह सामायिक नाम आपके भावो के साथ जुडता है। नाम भाव के साथ भी होता है और अभाव से भी। सामायिक का शुद्ध रुप भाव सामायिक है। जहा किसी का नाम नही है वहा अभाव है। लेकिन सामायिक के भाव सहित नाम है वही सामायिक की परिधि मे आता है।

स्थापना मे यह मुहपत्ति लगाई, बैठका बिछाया, जीवो की यतना करने के लिए पूजनी ली। सामायिक की पोषाक धारण की यह स्थापना सामायिक के निशान के साथ इसकी स्थापना की। स्थापना मे भाव वही चल रहे है। जहा भाव सामायिक का प्रसग है उसमे ६ काया के जीवो की रक्षा का विधान है। ६ काया के जीवो की रक्षा तभी होगी जब कि आपका उपयोग इसमे लगेगा। पहले नाम और स्थापना सामायिक हो गई लेकिन भाव के अभाव मे सामायिक विशुद्ध सामायिक नही बनती। आप बिना पूजे अधेरे मे चले या दिन के समय, बिना देखे, गर्दन ऊची उठाकर चले तो वह सामायिक भाव शून्य मानी जायेगी। आपकी दृष्टि जमीन पर रही इस भावना से कि मेरे पेरो के नीचे ६ काया के जीव– पानी, अग्नि, वायु वनस्पति एव चलते फिरते जीव मर न जाए। पृथ्वी के जीव को आपकी दृष्टि मे नही आते लेकिन ताजा मिटटी खोदी गई है उसमे जीव होते है। इसी तरह से अन्य जीव पेदा हो सकते हे लेकिन जहा जमीन लेवल पर है और नीचे की ताजा मिटटी वाहर पडी हे। तत्क्षण उसमे पृथ्वी काय के जीव हो सकते है। ऐसी मिटटी पर परा नही रखना। धूप से भी पृथ्वी काय के जीव समाप्त हो जाते है। पानी वरसने से भी समाप्त हो जाते हे। पानी नही वरसे तो ऐसी ताजा खुदी हुई मिटटी पर पर नही रखना। पानी की टकी पर भी पेर नही रखने का उपयोग होना

चाहिए। चलते समय विवेक से चलना चाहिए। चलते समय किसी ने सिगरेट या बीडी जलती हुई फेक दी तो साधक को ध्यान रखना चाहिए उसका स्पर्श न हो। चलने वाला इधर उधर देख रहा है तो चिनगारी के पैर लग सकता है तो इसमे उपयोग–जागरण रहना चाहिए। आप सामायिक मे बैठे हुए हैं गर्मी का मौसम है, गर्मी लग रही है आप पखा चलाते है और पखा विद्युत से चलता है इससे ६ काया के जीवो की हिसा होती है तो आपकी सामायिक खडित होगी। गर्मी सहन नही हो रही है तो पुस्तक, हाथ या कपडे से भी हवा नही कर सकते हैं। पखे के नीचे बैठकर सामायिक करना तो कल्पता ही नही है। सामायिक के साथ भाव नही जुडे तो सामायिक सुरक्षित नही रह पायेगी । आप रास्ते मे चल रहे है हरी वनस्पति का उपयोग नही रखा। उस पर पैर रख दिया तो दोष लग गया। आपको सामायिक मे दोष लगा हो तो उसकी आलोचना करनी चाहिए। हरी पर पैर लगा न लगा लेकिन बिना पूजे चले तो सूक्ष्म जीवो की घात हो सकती है। इस दृष्टि से ६ काय के जीवो की रक्षा से युक्त सामायिक मे भावो का पुट होना आवश्यक है।

वैसे ही क्षेत्र की दृष्टि से जिन स्थान पर आप बैठे हैं उस स्थान को बिना पूजे बिना देखे बैठका (आसन) बिछा दिया और उससे जीव हिसा हो गई तो क्षेत्र की दृष्टि से सामायिक मे बाधा आयेगी।

काल की दृष्टि से ४८ मिनिट का काल लिया है इस काल मे छ काया के जीवो की हिसा नही करे।

सामायिक अनासक्ति योग की साधना

ये जो सामायिक के ६ भेद हैं इन सब मे मन के भाव क्या होने चाहिए? आप सामायिक मे बैठे हुए हैं अचानक किसी प्रिय व्यक्ति की मृत्यु की सूचना मिल गई तो उस समय रोना या आर्त ध्यान नही करना चाहिए। यदि यह किया जा रहा है– रुदन करना हाय–हाय करना, सीना पीटना आदि यह सब सामायिक मे किया जा रहा है तो समभाव की साधना तो दूर रही भाव सामायिक मे व्यवधान आ जायेगे।

मैंने सुना हैं कि शात क्राति के जन्म दाता आचार्य श्री गणेशी लालजी महाराज साहब जब उदयपुर मे छोटे बच्चे के रुप मे थे तब उनके पिता साहब लालजी धर्म स्थान मे सामायिक पौषध के लिए पहुचते तो बच्चे के रुप मे गणेशलालजी भी उनके साथ पहुच जाते। उनके पिता सामायिक करते तो वे भी मुहपत्ति लगा कर उनके पास मे बैठ जाते। बच्चा अनुकरणशील होता है। बडे बुजुर्ग क्या कर रहे है इसका ख्याल बच्चे को रहता हे। चाहे बुजुर्ग कहे या न

कहे, बच्चे उनकी नकल अवश्य करेगे। दुकान पर तराजू मे कोई चीज तोली जा रही है तो व्यापारी का बच्चा भी तोलने की चेष्टा करेगा ओर कुछ नही तो धूल ही तोलेगा। कृषक का लडका कृत्रिम हल बना कर चलाने की चेष्टा करेगा। जिसके माता–पिता सामायिक करते हे, तो बच्चा बिना कहे सामायिक करने की चेष्टा करेगा। बच्चा क्या बन जाये, इसका श्रेय माता–पिता को जाता हे।

पौषध की साधना २४ घटो की होती हे लेकिन वह कितनी महत्वपूर्ण होती है। इससे परिवार के सभी सज्जनो पर असर होता हे। सामायिक या पौषध का लाभ तो करने वाले को मिलता है, लेकिन जो देखने वाले हे उनके अदर भी शुभ भावना पैदा होती है। जो देख कर गद्‌गद् हो जाते हे। उनके शुभ भावो से कर्मों की निर्जरा होती है और पुण्यवानी बधती है। पुण्यानुबधी पुण्य बाधता हे। पौषध करते है तो सारे परिवार का ध्यान परिवार के मुखिया की तरफ रहता है। आप सोचेगे कि आज पिताजी पौषध मे हे। जितनी वक्त ये विचार आयेगे, पुण्यवानी बधेगी, निर्जरा होगी। दूसरा व्यक्ति किसी आवश्यक कार्य के लिए आया है और वह देखता है कि ये अभी नित्य नियम मे बैठे हे तो वह भी विलब करेगा। इसका कितना प्रभाव फैलता है। यदि यह कहा जाए कि यह प्रकाश पुज है तो चल सकता है। दीपक के प्रकाश मे जो व्यक्ति जाते है उन सब को रोशनी मिलती है। वह सब को प्रकाशित करती है।

इसी तरह से पौषध एव सामायिक की साधना भी सबको प्रकाशित करती है। लेकिन मेरे भाई इसका महत्व नही समझते है। वे ऐसे ही घटो बातो मे बैठ जायेगे, लेकिन सामायिक पचकर नही बैठते। सामायिक मे कितना लाभ मिलता है। इस बात का ध्यान रख कर चला जाए तो अधिकाश भाई इस शुभ मार्ग पर लग सकते है और वे सामायिक की साधना कर सकते है।

मैं स्वर्गीय आचार्य श्री गणेशीलाल जी म सा के बचपन की बात कर रहा था जो उस समय छोटे बच्चे के रुप मे साहबलालजी के पास चले जाते और सामायिक लेकर बैठ जाते। इस उम्र मे अधिकाश बच्चो को खेलना ही होता है। अन्य घटनाए तो घटी सो घटी ही आचार्य श्रीलाल जी म सा की वाणी फलित हुई। मैं मूल विषय पर आ रहा हू, मै कह रहा था एक रोज साहबलालजी पौषध मे धर्म साधना मे विराजमान थे इधर उनकी पुत्री का स्वर्गवास हो गया। पडोसी ने सूचना दी कि साहबलालजी पौषध मे क्या बैठे हो तुम्हारी पुत्र–पुत्री की मृत्यु हो गई है। पुत्री के स्वर्गवास का समाचार सुन कर पौषध मे स्थिर रहना कितना कठिन होता है। श्री साहबलालजी ने कहा कि मै पौषध मे हू, आप लोग जैसा उचित समझ कर सकते है। सूर्यास्त होने वाला था लेकिन साहबलालजी पौषध से उठ कर नही आये।

मित्रगण और पडोसी बच्ची को उठाकर ले गये साथ मे आचार्य श्री गणेशलालजी जो बालक ही थे भी गये वहा श्मशान मे पहुचने के पश्चात् लकडी की आवश्यकता थी लकडी कुछ दूरी पर मिलती थी। सब विचार करने लगे कि लकडी लाने के लिए जायेगे तो शव के पास कौन बैठेगा। उस समय नन्हे बालक श्री गणेशलालजी ने कहा शव के पास मैं बैठा हू, आप जाइए। कहावत है कि "पूत के पग पालने मे पहचाने जाते हैं।' वे लाश के पास बैठ गये। घर मे लाश पडी है तो भी बडे–बडे लोगो को डर लगता है और एक दूसरे को कहने लगते है कि हम बाहर बैंठे है तुम पास मे बैंठो। बडो के लिए भी मुर्दे के निकट बैंठना मुश्किल होता है। मुर्दे से डर लगता है। लेकिन नन्हा बालक गणेशीलाल निर्भीक होकर रात्रि मे एकाकी शमशान मे बैठा रहा। वही छोटा बच्चा आगे चल कर क्रातिकारी महापुरुष बन गया। साहबलालजी पौषध मे इतने स्थिर थे कि पुत्री के मरने की भी परवाह नहीं की। वे जानते थे कि यह मरण की स्थिति है। मरने वाला वापिस नही आता उस समय वे रोये नही आसू नही निकाले धर्म ध्यान मे स्थिर रहे।

यद्यपि यदि कोई सेवा करने वाला नही है और किसी की स्थिति मरणासन्न हो तो सामायिक मे रहने वाला सेवा के लिए चला जाए तो सामायिक व्रत जो कि शिक्षा व्रत है भग होगा किंतु अहिसा व्रत की आराधना होगी।

जैसे कि किसी ने चार लोगस्स का ध्यान किया हो और नेत्र खुले हो कोई हिसा का दृश्य सामने हो तो आधे ध्यान मे ही रक्षा हेतु जाने का ध्यान भग नही होता है। वैसे ध्यान की विधि दो तरह की है। प्राय प्रचलित यह है कि नेत्र खुले रहे। आखे बद करके ध्यान नही करना क्योकि वैसी स्थिति मे नीद अथवा प्रमाद आ जाता है। जब जागरण का अभ्यास हो जाए तो नेत्र बद भी कर सकते हैं। व्याख्यान हो रहा है और आप आखे बद करके सुन रहे है तो नीद आना स्वाभाविक है। आपको आखे खोलकर अच्छी तरह से सुनना चाहिए। ध्यान की स्थिति मे भी आखे खुली रहे। दो लोगस्स का ध्यान किया और कदाचित जिस स्थान पर बैठे हैं वहा पर आग लग गई तो उठ कर दूसरे स्थान पर बैठ कर पुन ध्यान कर सकते हे। अत जीव रक्षा के अथवा अपरिहार्य सेवा के निमित्त से उठा जा सकता था। उसकी अलोचना की जा सकती थी किंतु श्री साहवलालजी अपने व्रत मे स्थिर रहे। वास्तव मे धर्म साधना ऐसी होनी चाहिए जिसमे परिवार आदि बाह्य बन्धनो पर आसक्ति कम होती है। ऐसी भाव सामायिक का आराधना करेंगे तो आपकी आत्मा को शाति प्राप्त होगी।

दिनाक १-८-८४

बोरीवली (पूर्व) ववई

१८. सामायिक का मूल्य

एक मौलिक सिद्धान्त है "या या क्रिया सा सा फलवती" जितनी भी क्रियाए होती है वे फलवान होती है, कोई भी क्रिया निष्फल नही जाती। क्रिया की प्रतिक्रिया के सिद्धान्त के अनुसार प्रत्येक क्रिया का फल अवश्य होता ही है। वह फल शुभ भी हो सकता है अशुभ भी। शुभ फल होता है तो आत्मा को अपनी साधना के लिए सबल मिलता है और अशुभ फल मिलता है तो वह साधना मे विघ्न उत्पन्न करता हे। यह जीवन का क्रम अनादि काल से चला आ रहा है। इस क्रम मे चाहे भवी हो या अभवी जितनी भी आत्माए ससार मे परिभ्रमण कर रही है उन सभी आत्माओ के लिए यह विषय लागू होता है। लेकिन भव्य जन अपनी समग्र साधना विधि सुविधि पूर्ण बनाने के लिए कुछ ज्ञान प्राप्त करता है और सोचता है कि कौन सी क्रिया मेरी आत्म शुद्धि के लिए निमित्त बनेगी, कौनसी साधना मेरे जीवन कल्याण करने मे सफल होगी। इस जिज्ञासा से यदि वह वीतराग देव की वाणी के समीप पहुचता है तो उसे नि सदेह सुन्दरतम मार्ग मिल जाता है।

भव्यों की प्रिय वीतराग वाणी

वीतराग देव ने आत्म कल्याणार्थ जो मार्ग बतलाया है वह सर्वथा निर्दोष एव सर्वाधिक पवित्र है। इस मार्ग मे कोई दोष खोजना चाहे, नुक्स निकालना चाहे तो निकाल नही सकता। इसका चितन करके बुद्धिवादी व्यक्ति अपनी बुद्धि का जितना वल लगाना चाहे, लगा ले कितनी ही युक्तिया, प्रतियुक्तिया, तर्क प्रस्तुत करे किन्तु वीतराग सिद्धान्त का स्याद्वाद रूपी कवच अभेद्य ही रहता हे। उन सब का समाधान भी साधना के स्वरूप ज्ञान से स्पष्ट हो जाता हे। ऐसी पवित्र साधना पद्धति भाग्यशाली ही प्राप्त कर सकते हें। जिसने पुण्यानुवन्धी पुण्य का सचय किया वही व्यक्ति इस पवित्र साधना का लाभ उठा सकता हे। जिस पुरुष का पुण्यानुवन्धी पुण्य नगण्य हे उस पुरुप के लिए यह पवित्र साधना सही नही रह सकती क्योकि जसी दृष्टि वेसी सृष्टि। जव पापानुवन्धी पुण्य के कारण उसकी दृष्टि म फर्क ह ता हर वस्तु को वह उसी रूप मे देखने की कोशिश करेगा।

सर्प न किसी पुरुप का डस लिया हे ओर उसका विप उस पुरुष पर [illegible] रहा ह ता बाहर स अन्दाज लगान के लिए गारुडी या मत्रवादी कुछ प्रयोग

करता है। कडवे नीम के पत्ते लेकर उस व्यक्ति को चखाता है और कहता है कि बोल यह नीम तुझे कडवा लगता है या मीठा? जिस पर पर्याप्त मात्रा मे विष का असर हो गया है उसको कडवा नीम अच्छा लगता हे वह कहता है कि मुझे नीम की पत्तिया मीठी लगती है। मन्त्रवादी हतोत्साह होता है। वह सोचता है कि यह विष बहुत आगे बढ गया है मेरा मन्त्र काम करेगा या नही वह चितन करने के लिये बाध्य हो जाता है। फिर भी वह पुरुषार्थ को नही छोडता और साहस के साथ मन्त्र का प्रयोग करता है। कुछ समय तक प्रयोग किया, फिर उसको वह नीम की पत्तिया चबवाता है। वह व्यक्ति चख कर कहता है कि अब इन पत्तियो मे उतना मीठास नही रहा कुछ कडवाहट महसूस हो रही है। मन्त्रवादी आशान्वित हो जाता है कि मेरा मन्त्र लागू हो गया, जहर उतरना चालू हो गया। धीरे धीरे वह जहर को उतार ही देता है।

वैसे ही भव्य और अभव्य का प्रसग है। ससार के समस्त भौतिक पदार्थ आत्मा को बधन मे डालने वाले हैं अत कडवाहट से भरे है किन्तु सर्प के विष के समान अभवि पर मोह पर इतना आवरण आ जाता है मोह रूपी सर्प ने अभवि को इतना डस लिया है कि उस समय उसको वासना–विकारो की कडवाहट मीठी लगती है ओर वीतराग देव की वाणी या साधना अच्छी नही लगती। ससार के विषय जो कि कडवे नीम के तुल्य है 5 इदियो का उपयोग, एक दृष्टि से आत्मा पर उलझन पैदा करने वाला है। वह मीठा लगता है। भवी और अभवी मे इसलिये अतर आ जाता है कि अभवी कभी भवी नही बन सकता। उस पर आत्म कल्याण का किचित् मात्र भी असर नहीं होता। जैसे कोरडू एक ऐसा धान होता हे जो सीज नहीं पाता। आप इसको क्या बोलते हैं कि आप अपनी भाषा मे समझ लेना। एक ही दाने को सिजाने के लिए 10 किलो पानी उबाल लिया जाय पानी का भाप बन जायगी लेकिन वह दाना नही सीजेगा। यदि दूसरे धान का दाना उतने समय तक उबाला जाय तो वह सीज कर गल जायेगा।

इसी तरह से अभवि को कितना भी उपदेश दे उस पर असर नही होता। जैसे अग्नि का असर कोरडू पर नही होता।

भवी जन पर वीतराग देव की वाणी इतनी प्रभावी रहती है कि ससार के विषय उसको काटने लगते हैं। वह हर समय सोचता है कि हा हा यह अमूल्य मनुष्य जीवन जो देवो के लिए दुर्लभ है आज मे इसका क्या उपयोग कर रहा हूँ, नाशवान चीजो के लिए इसको गवा रहा हूँ। ससार के विषयो का अनक बार मॅने उपभोग किया। कई बार मै लखपति करोडपति राजा महाराजा वना इन्द्र वना किन्तु आत्मा से मोह का जहर नही उतरा। इस मिथ्यात्व के जहर का उतारने वाली वीतराग वाणी ही हे। यह वाणी अमृत से बढकर कल्याण करने वाली ह।

प्रारभिक साधना सामायिक

इसी वीतराग वाणी मे अभिव्यक्त साधना का प्रारभिक किन्तु मौलिक रूप विगत कुछ दिनो से आपके समक्ष रख रहा था। वह है सामायिक का अधिकाश। भाई बहिन इसे जानते। सामायिक की पोषाक पहनकर बैठ जाना भी सामायिक का अग है लेकिन इनकी जानकारी यही तक है। पोशाक लगा के बैठ जाना स्कूल मे प्रवेश होने के तुल्य है। लेकिन सामायिक का जो तात्पर्य या अर्थ है उसको यदि ध्यान मे ले तो वह आत्मा को निर्मल बना कर पवित्र बना सकता है।

लगता है यह सामायिक साधना आपको जितनी अच्छी नही लग रही है। बबई जैसे शहर मे आप बहुत से भाई बहिनो को देखते है किन्तु यहा धर्म स्थान मे तो सतो को देखने की चेष्टा करे, उनकी साधना से परिचय प्राप्त करे। किन्तु कौन भाई आ रहा है, कौन जा रहा है, कौन बहिन आ रही है, कौन जा रही है, जब तक आप अपनी दृष्टि का उपयोग उनको देखने की तरफ करेगे तब तक वाणी सुनने मे आपकी रुचि नही होगी। आप अपनी दृष्टि का उपयोग मेरी तरफ करिये।

अनेक बधु चाहे वे तरूण ही हैं लेकिन उनकी दृष्टि और कान मेरी तरफ है क्योकि उनको वाणी सुनने मे ज्यादा आनद आ रहा है। यदि धर्म स्थान मे आ कर भी आपको इधर–उधर देखना है तो यहा आने का उपयोग ही क्या रहा?

बन्धुओ बात भावात्मक एव गहन होने से आपको समझने मे कुछ दिक्कत पडेगी किन्तु यह ख्याल अवश्य रखिये कि मै जिस साधना की बात कह रहा हूँ, वह इतनी सहज नही है। इसका वास्तविक स्वरूप क्या है यह समझने की कोशिश करे, पर कोशिश करे कौन? आप चाहते है कि सामायिक की पोशाक सभाल ले बस। आगे हमको हमारे काम से काम है। थोडी देर आपके कहने से बैठ जायेगे फिर जायेगे तब वही घोडा वही मैदान।

सामायिक है तलवार की धार पर चलना

मेरा सकेत इसलिये है कि जहा हम सामायिक मे बैठ गये फिर प्रचलित सामायिक के अनुसार सावद्य योग का त्याग किया 'सामाइय सावज्ज जोग पच्चक्खामि हे भगवन मे सामायिक करता हूँ वह सामायिक सम आय की है। आपका चितन इस दिशा मे हो कि सामायिक मे बेठ कर समता भाव का अभ्यास केसे किया जाय। केवल पाप का त्याग करने मात्र से सामायिक नही हो सकती, सामायिक साधना बडी टेढी खीर है। दूसरे शब्दो मे कहू तो तलवार की धार पर

चलना तो फिर भी सहज है लेकिन इस साधना पर चलना कठिन है। छोटी से छोटी साधना को जीवन मे उतारना ओर उसको पचाना इसके लिये बहुत बडी जठराग्नि की आवश्यकता होती है। जिन्होने केवल मक्का की राब ही राब खाई हे उन्हे आपके बम्बई का मशहूर सोहन हलवा थोडा सा खिलाया जाय तो क्या उनकी जठराग्नि उसको पचाने मे कामयाब होगी? वेसे ही यह सामायिक साधना सोहन हलवे से भी बढकर है अत इस साधना के लिए कहा जा रहा है कि तलवार की धार पर चलना सहज है पर इस पर चलना कठिन है साधना के क्षेत्र मे बहुत ऊचे पहुचे हुए महापुरुष की यह वाणी है अतर की बात अतर को छूती है पर किस व्यक्ति को छूती है? जो जिज्ञासु है उसको छूती है कवि आनन्दघन जी की अन्तरग वाणी है—

धार तरवारनी सोहिली दोहली
चउदमा जिनतणी चरण सेवा।
धार पर नाचता देख बाजीगरा
सेवना धार पर रहे न देवा

बधुओ, मैं क्या कहू—जितना व्यक्ति उन्डाण मे जाता हे अन्दर मे उतरता है उतना ही वह अन्दर के गहन रहस्य को प्राप्त करता है और जब उद्‌बोधन करता है तो वाणी के माध्यम से उसे बाहर प्रगट करता हैं आनदघन जी लोक दिखावे मे नहीं आते थे दिखाने की भावना ही नही करते थे। राजा महाराजा आ जावे तो भी उन्हे कोई फ्रिक नही थी। वे साधारण साधक नही थे। जब भक्ति साधना मे उतरे तो 14वे भगवान की स्तुति करते हुए कहा कि तलवार की धार पर चलना आसान है किन्तु साधना करना दुश्वार है।

''धार पर नाचता देख बाजीगरा''

वैक्रिय लब्धिधारी तलवार की धार पर सहज ही चल सकते हें। बाजीगर भी चल सकते हैं। लेकिन वीतराग देव की साधना तलवार की धार पर चलने से भी कठिन है। मन की साधना उससे भी कठिन है।

सामायिक का मूल्य

आपकी 48 मिनिट की समायिक साधना से कितना लाभ होता हे यह तो आप जो रोग सामायिक साधना करते हे उनकी जानकारी का प्रसग हे। राजा श्रेणिक के प्रसग से आपने कई बार सुना होगा कि राजा श्रेणिक अपनी नरक का बधन काटने के लिये भगवान् के बताये अनुसार पूणिया श्रावक के पास सामायिक खरीदने गया तो पूणिया श्रावक सामायिक देने के लिए तत्पर हो गया लकिन पूणिया श्रावक को सामायिक की कीमत मालूम नही थी। तब पूणिया ने श्रेणिक

से कहा कि राजन आज मैने एक अनोखी बात सुनी है। इतने दिन तो मै जानता था कि सामायिक बेची नही जा सकती। धर्म क्रिया पेसो से मोल नही ली जाती।

यह कौन समझ रहा है? वीतराग की आज्ञा मे चलने वाला पूणिया श्रावक समझ रहा है? लेकिन आज के श्रावक क्या समझते है वे तो धर्मकरणी को पेसो मे बेचते है। इतने रूपये दोगे तो यह कर लूगा इतने रूपये दोगे तो यह तपस्या कर लूगा। मैने उधर सुना कि एक तेले के पीछे बीस–बीस रुपये मिल जाते हैं। तेला सस्ता हो जाता है, क्योकि बहुत बडी नामबारी हो जाती है कि हमारे यहा इतने तेले हो गये। क्या वीतराग देव ने तेले की कीमत बताई है। भाई बहिनो के सामायिक की कीमत कर ली है। भगवन् मेरा बच्चा ठीक हो जाय तो 50 सामायिक कर लूगा या 100 सामायिक कर लूगा। बुखार ठीक कराने वाले सामायिक की कीमत करते है। 104 डिग्री बुखार है तो मेटासिन की गोली से बुखार ठीक हो जायेगा। तो आपने सामायिक की कीमत कर ली मेटासिन की गोली जितनी।

पूणिया श्रावक सीच रहा है कि सामायिक की कीमत नही हो सकती। सम्राट श्रेणिक ने पूछा कि सामायिक की कीमत क्या है तो पूणिया ने कहा कि "राजन् जिसने आपको सामायिक खरीदने की बात कही है उन्ही से पूछो कि सामायिक की कीमत क्या होती है।"

राजा श्रेणिक प्रभु महावीर के पास गया और निवेदन किया कि भगवन् आपने मेरा नरक टालने के जो और उपाय बताये हैं उनको तो मै कर नही सकता, लेकिन पूणिया श्रावक मुझे सामायिक देने के लिए तैयार है और मैं खरीदने को तैयार हू, मेरा काम बन गया। श्रावक ने कहा कि एक सामायिक लो, दो तीन या जितनी चाहिए उतनी ले लो यह तो उनकी उदारता है लेकिन उसको सामायिक की कीमत मालूम नही है। अत उसने कहा कि कीमत तो वे ही बतायेगे जिन्होने सामायिक खरीदने का उपाय बताया है। प्रभो, अब आप ही बता दीजिए कि एक सामायिक की कीमत कितनी है? प्रभु ने पूछा– सम्राट आपके भडार मे धन कितना है? 'भगवन् मेरे पास मे धन कितना है, यह आपके केवल ज्ञान से छिपा हुआ है क्या? मेरे केवल ज्ञान से तो छिपा हुआ नही है। लेकिन दुनिया की दृष्टि से तुम्ही वर्णन करो कि तुम्हारे खजाने मे जेवर जवाहरात, रत्न वगैरा कितने है? "भगवन् यदि मैदान मे मेरे खजाने के धन का ढिग लगाया जाय तो 52 डूगरिया लग सकती है।' भगवान् महावीर ने कहा '52 डूगरिया जितना धन तो एक सामायिक की दलाली के लिए चाहिए। बोलो तुम्हारे पास कीमत चुकाने के लिए क्या है?"

आज के भाई बहिन सामायिक का मूल्याकन क्या कर रहे है? जब

सामायिक का महत्त्व ही नही जानते तो उसका मूल्याकन क्या करेगे।

सामायिक के 6 भेद मैंने बतला दिये हैं। अगला विषय बताने की तैयारी मे हूँ। लेकिन यह सूक्ष्म बात आपके लिये कितनी हितकर होगी इसका चितन कर लेना चाहता हूँ। यह सूक्ष्म बात तलवार की धार पर चलने से भी कठिन है। इसका प्रयास किया जाय तो कर्मो के वृद के वृद टूट जाते हैं।

कई व्यक्ति ससार की दृष्टि से सोचते है लेकिन कई कार्य विपरीत हो जाते हें। ऐसी विचित्र समस्या मनुष्य के सामने उपस्थित है। आज का मनुष्य अनेक प्रकार की विसगतियो मे उलझ रहा है तथापि वह सुलझना चाहता है किन्तु मूल मे भूल चल रही है। सुलझाने की चाबी आपके पास ही है। आप उसको निकालिए तो सही, देखिए तो सही आपको ज्ञात होगा कि आपके पास क्या–क्या है। आपको ऊपर से यह शरीर दिखता हे। दर्पण मे अपना मुह देख लेगे शरीर के ऊपर जो चमडा है उसे देख लेगे। किन्तु अन्दर मे आत्मा का मौलिक गुण सामायिक कहा है उसको नही देख पा रहे है। इसीलिये यह उलझाव हो रहा है। समस्या को सुलझाने के हेतु भी इस साधना मे ही है। इस हेतु को देख लिया तो सारी समस्या हल हो जाएगी। सामायिक साधना समस्त समस्याओ का निदान प्रस्तुत करती है। आप इसमे रमण करे और आनन्द प्राप्त करे।

ता २-७-८४

बोरीवली (पूर्व) बबई

१९. सामायिक साधना बनाम इन्द्रिय विजय

श्रवण उतरे जीवन में

हम कितने सौभाग्यशाली है कि हमे वीतराग देव की वाणी सुनने का अवसर प्राप्त हो रहा है। जो वीतराग देव की वाणी को, अगीकार करके इस लोक और परलोक मे सुखी बने, ऐसे दिव्य पुरुषो का वर्णन आपको विद्वद्ववर्य मुनि श्री सुना रहे हैं। कितने सुन्दर ढग से आपके समक्ष व्याख्या उपस्थित कर रहे हैं। आप भी ध्यान से श्रवण कर रहे है, लेकिन यह श्रवण तक ही सीमित न रहे। यदि कोई भी मनुष्य अपने वर्तमान को सुखी बनाना चाहे और परलोक मे सदा–सदा के लिए सुखी बनने की भावना रखता है तो अमृत तुल्य वीतराग के वचनो को यथाशक्ति जीवन मे स्थान दे, उन्हे पूर्णतया जीवन मे उतारने की कोशिश करे, जिससे वर्तमान की समस्याओ का हल सहजतया हो सके।

इसी स्थिति को प्राप्त करने के लिये प्रभु ने जो–जो भिन्न–भिन्न रूपो मे सकेत दिये है, उन्हे सत लोग आपके समक्ष उपस्थित कर रहे है।

आपके समक्ष सुबाहुकुमार का विवेचन चल रहा है। सुबाहुकुमार कितना ऋद्धिशाली था, शारीरिक दृष्टि से कितना भव्य था, कितना कमनीय एव कोमल था, उसकी इस स्थिति को देखकर अनेक व्यक्तियो के मानस मे विविध प्रकार की जिज्ञासाए उत्पन्न हो गई थी। गौतम स्वामी ने उन भव्यो की आतरिक जिज्ञासा को देखकर प्रभु महावीर से प्रश्न किया "भगवन् सुबाहुकुमार को यह मनुष्य इतना आकर्षक, कोमल, कमनीय, काति स्वरूप वाला कैसे प्राप्त हुआ? मनुष्य की आकृति एक समान दिखाई देती है लेकिन उसकी कमनीयता मे अन्तर आता है। शरीर की रचना का प्रकार विभिन्न होता है, अत आप कृपा करके फरमावे कि सुबाहुकुमार ने यह कमनीय सौन्दर्य कैसे प्राप्त किया?

आम व्यक्ति की दृष्टि वर्तमान जीवन पर रहती है और वह अपने से गुण सपन्न और वैभव सम्पन्न व्यक्ति को देखता है तो उसके मन मे भी एक जिज्ञासा उठती है कि यह कैसे बना । यह जिज्ञासा इस बात के लिए उठती है कि मै भी इस प्रकार की स्थिति प्राप्त करू। अच्छे व्यक्ति की तरह बनने की जो भावना

बनती है। वह मनुष्य के विकास का सूचन करती है। यह शरीर इस जन्म की पुण्यवानी से नही पूर्व जन्म की पुण्यवानी और पूर्व के कर्मो के फलस्वरूप मिला है। गोतम स्वामी ने सुबाहुकुमार के सबध मे प्रश्न कर लिया कि वा दच्चा कि वा भोच्चा कि वा समायरिन्ता

पूर्व जन्म मे सुबाहुकुमार ने क्या दान दिया क्या खाया क्या आचरण किया जिससे इतना पुण्य का बध हुआ और आकर्षक रूप मिला? प्रभु गौतम के इस प्रश्न मे बहुत बडा रहस्य भरा हुआ है।

प्रश्न बहुत सुबोध प्रतीत होता हे किन्तु उस प्रश्न मे जीवन का स्पर्श रहा हुआ है। मनुष्य का वर्तमान जीवन इन तीन बातो से सम्पन्न होता है। या तो वह कुछ देता है दे कर पुण्यवानी बाधता है। या कुछ खाता है या कुछ आचरण करती है। उसने कौनसा ऐसा कार्य किया जिससे ऐसा जीवन मिला ऐसा तन मिला ईतनी रिद्धि मिली? मनुष्य कुछ–न कुछ देता है देता नही तो कुछ–न–कुछ खाता है। देने को तो आप सब कुछ जानते हैं अपने पास जो शक्ति है सपत्ति है उसका ही सदविनिमय करते हैं किसी–न–किसी को सहायता पहुचाते हैं आर्थिक दृष्टि से कमजोर व्यक्ति को सहयोग देना साधार्मिक को सहयोग देना, ये जो शुभ भाव हैं वे पुण्यवानी का बधन करने वाले हैं। यदि सही पात्र को दिया तो पुण्यवानी बधेगी। गुणी पुरुष को दिया गया तो धर्म भी होगा। व्यक्तिगत तोर पर सम दृष्टि भाव मे रहने वाली आत्मा को समदृष्टि भाव के साथ वात्सल्य भाव से कुछ दिया तो भी पुण्य सचय होगा।

पुण्यबध के प्रकार

तीर्थकरो ने पुण्य बाधने के 9 साधन बताये है अन्न पुण्य पान पुण्य लयन पुण्य शयन पुण्य, वस्त्र पुण्य मन पुण्य वचन पुण्य काय पुण्य ओर नमस्कार पुण्य। ये जो 9 साधन बताये हैं उनमे से जो भी देता हे शुभ भावना से देता है ओर सम्यग्दृष्टि भाव का पोषण करता हुआ देता हे वह साधारण व्यक्ति को देने की अपेक्षा अधिक पुण्य लाभ कमाता है। इससे आगे यदि कोई व्रतधारी श्रावक है उसको सहयोग देता है उसके व्रत मे मददगार बनता ह व्रत का परिपालन करने मे सहायक होता हे तो वह धर्म कमाता हे ओर पुण्य वध करता ह। इससे भी बढकर जो पाच महाव्रतधारी साघु है जो पास मे कुछ नही रखत अकिचन होते है लेकिन होते है सारे जगत के वदनीय–पूजनीय उनका दते ह तो भावात्मकता इतनी बढ जाती हे कि जिससे कर्मो के वृद के वृद टूट जात ह और धर्म प्राप्ति के साथ पुण्य का अबार लग जाता ह।

ये वृत्तिया मनुष्य जीवन मे सहज और सुगम है। इसलिये गोतम स्वामी ने प्रश्न किया कि सुबाहु कुमार ने पूर्व जन्म मे क्या दिया, खाया? सुबाहु कुमार ने पूर्व जन्म मे सुपात्र दान दिसया। सुपात्र के तीन भेद बताये है जघन्य सम्यग्दृष्टि मध्यम, व्रतधारी श्रावक और उत्तम व्रतधारी साधु सबसे उत्तम व्रतधारी साधु है। सुपौत्र दान देने से सुबाहु कुमार की पुण्यवानी बहुत बढ गई। प्रभु गौतम ने दान के साथ खाने का भी उल्लेख किया है कि सुबाहु कमार ने पूर्व जन्म मे ऐसा कौनसा खाना खाया, जिससे उसकी सुन्दरता इतनी बढ गई। ऐसा खाना यदि आपको मिल जाय तो फिर क्या चाहिए। यहा खाने का सबध वर्तमान जीवन से नही पूर्व जन्म से है। सयम साधना की पुष्टि के लिए खाया जाने वाला भोजन पुण्य बध और निर्जरा का कारण होता है।

दान से सौन्दर्य

आपको मालूम होगा कि वैद्यजी ऐसी दवा देते है जिससे मनुष्य सुन्दर बन सकता है। किन्तु वैद्यजी सुन्दर बनने की कितनी ही अच्छी दवा दे दे, उस दवा से सुबाहुकुमार जैसा सुन्दर शरीर नही बन सकता। यदि आप सादी सीधी खुराक बिना औषधी के लेते है। भोजन के समय रूखा सूखा जैसा भी भोजन आप हर रोज करते हैं, उसमे यदि आप रासायनिक तत्व घोल दे, रासायनिक तत्व का तात्पर्य यह नही समझे जैसा कि डॉक्टर प्रयोग करते हैं। जिससे कोयल से हीरा बना देते है अथवा स्वर्ण से स्वर्ण भस्म बना देते है। अपितु भोजन करने से पहले आप यह भावना भावे कि यह भोजन मै हर रोज करता हूँ वैसा ही कर रहा हूँ। यह भोजन मै स्वाद के लिए नही कर रहा हूँ, न मोह को बढाने के लिये कर रहा हूँ, लेकिन इस भोजन से मैं ऐसी साधना कर सकू, जैसी सुबाहु कुमार ने की और अन्ततोगत्वा वह सदा सदा के लिए सुखी बन गया। वैसे ही यह भावना भावे कि भगवन्, मै भोजन करने बैठ रहा हू, भोजन करने से पहले कोई त्यागी पुरुष आ जावे तो उनको दान दे कर फिर मै भोजन करू। यदि ऐसा योग नहीं बने तो पहले पाच नवकार मत्र गिने बिना भोजन नही करू। सभव है आपको इस भावना की पद्धति मे कष्ट होगा, लेकिन यदि इस तरह की भावना भा कर और पाच नवकार मत्र गिनकर आप भोजन करना चालू करते है तो एक आध्यात्मिक रासायनिक प्रक्रिया चालू हो जाती है। आपने भोजन पर बैठकर भावना भाई, दान लेने वाला कोई नही भी आया फिर भी आपको पुण्य बध हो गया। खाते समय भी आप भावना करिये कि मेरा जीवन इस् आहार को पा कर पवित्र बन जाय, मैं सामायिक का स्वरूप प्राप्त कर लू। यदि सामायिक का वास्तविक स्वरूप मेरे जीवन मे आ गया तो उसके सहारे मैं भी सुबाहुकुमार के समान बन जाऊगा।

वह आहार आपकी सामायिक साधना मे सहयोगी बन जायेगा। उसमे समरस का रसायन मिल जायेगा।

आप सामायिक के स्वरूप के सबध मे जानकारी पाप्त कर रहे है। अभी सामायिक का स्वरूप जितना चाहिए उतना हृदयगम नही हुआ है। आरभ किया हे ओर कुछ आगे बढ रहे हें। 48 मिनिट तक एक स्थान पर बैठकर यह सम भाव की प्राप्ति कैसे हो। यदि यह सूत्र आचरण मे आ जाता है तो व्यक्ति भविष्य मे भी जेसा चाहे वैसा बन सकता है और वर्तमान मे भी बन सकता है। मै यह बात केवल भावनात्मक रूप से नही कर रहा हूँ। यदि वर्तमान जीवन को बनाने की कला आ जाती है और सामायिक का योग सावद्य लेते है तो देखिये कि आपका जीवन कैसा शात–प्रशान्त बन जाता हे किन्तु सामायिक योग साधना के लिए यह चितन आवश्यक हे कि आप सामायिक करके आये है उसमे कुछ नवीनता पगट करके आये है या रीति रिवाज की तरह करके आये हे। आपने करेमि भते के पाठ का उच्चारण कर लिया। सावद्य योगो का त्याग कर लिया उस अवधि मे कुछ स्तुति वगैरा बोल कर 48 मिनिट पूरे कर दिये ओर सोच लिया कि हमारी सामायिक पूरी हो गई। यही तो मोलिक भूल चल रही है। सामायिक का शाब्दिक अर्थ है सम+आय अर्थात् सम भाव की प्राप्ति। यह जब तक प्राप्त न हो सामायिक अधूरी ही मानी जायेगी।

यह चर्चा सूक्ष्म अवश्य हे लेकिन सूक्ष्म विषय को समझ बिना सामायिक से जितना लाभ होना चाहिए उतना लाभ नही हो सकता। इसलिये आप सामायिक साधना उसके मोलिक रूप मे करे। आपने जो सामायिक की साधना की हे सावद्य योग का त्याग हे – 48 मिनिट के लिये यह आपके भीतर मे कितनी उतरी है। कोई डाक्टर आपसे यह कहता है कि आपके रोग निवारण के लिए यह आवश्यक हे कि आप लूखी (बिना चुपडी) रोटी खाओ और बिना नमक मिर्ची की भाजी (सब्जी) खाओ तो आप डॉक्टर की आज्ञा मान लेगे किन्तु सामायिक के लिए गुरु महाराज की आज्ञा भी मानेगे?

सामायिक के रासायनिक प्रक्रिया

प्रक्रिया करनी नही आई हे। यदि रासायनिक प्रक्रिया आ जाय तो देखिये उससे केसी परिणति हो जाती है।

पीरदान जी वोथरा तिवरी के मूल निवासी थे। आज कल उनका परिवार दुर्ग मे रहता हे। वे रोज सामायिक करते थे और सन्तो के प्रवचन का प्राय बिना व्यवधान लाभ लेते थे। उनको सामायिक का रस किस रूप मे लगा यह नही कहा जा सकता, लेकिन उनकी जीवनचर्या से ज्ञात होता है कि उन्होने उस साधना से कुछ पाया। एक दिन प्रवचन के प्रसग मे प्रसग चला कि कुछ त्याग करना चाहिए, तो उन्होने मुनि राज से कहा कि भगवन्, एक बात का त्याग करा दीजिए कि जो भोजन एक वार परोस देगे वह खा लूगा, मेरे हाथ से नही लूगा। अधिक होगा तो निकाल दूगा ओर कम होगा तो दुबारा नही मागूगा। उन्होने यह प्रतिज्ञा ग्रहण कर ली। यह मारवाड का प्रसग है।

रसना विजय एक श्रावक का

एक रोज उनकी पत्नी ने बाजरे का खीचडा बना कर रखा था, एक तरफ भसो को खिलाने का वाटा भी सिजो कर रख दिया उस समय मारवाड मे पानी लाने के लिये दूर-दूर जाना पडता था। अब पानी की सुविधा हो गई हो तो मै नही कह सकता। पानी लाने के लिये उनकी पत्नी जा रही थी। जाते समय अपनी सास से बोल गई कि खीचडा तैयार है, यदि वे आवे तो आप परोस देना। पहले की वहिने पति का नाम नही लेती थी। इसलिये वे शब्द का प्रयोग किया करती थी आज कल तो पति पत्नी को एक दूसरे को नाम ले कर पुकारना एक आम वात अथवा फेशन सी हो गई हे। माता को आखो से दिखाई नही देता था। उसने कहा कि वीनणीजी तुम जाओ, पीरू आयेगा तो मे परोस दूगी। पानी लाने के लिये दूर जाना पडता था। इसलिये लोटने मे विलब हुआ करता था।

पत्नी के जाने के वाद पीरदान जी दुकान से घर पर आये और माता से कहा, माताजी मे आ गया हूँ।' माता ने कहा? 'पीरू वीनणी पानी लाने गई हे, खीचडा तेयार पडा ह तुम ले कर जीम लो।' पीरदानजी ने कहा, "मेरे हाथ से लने का त्याग हे माता ने कहा मुझे आख से नही दिखता हे, फिर भी तू वेठ म परास देती हू। आप जानते हें कि माता क हृदय मे पुत्र के प्रति कितना ममत्व हाता ह। माता दीवार क सहारे चल कर खीचडे की हाडी के पास गई ओर हाथ स टटाल कर लकडी का चाटू चम्मच उठाया ओर भेस के वाटे की हडिया को खीचड की हडिया समझ कर उसम से दो चाटू चम्मच भर के वाटा थाली मे परोस दिया भार पीरदानजी क सामने रख दिया। पीरदानजी के सामने वस्तु आते ही समभाव भावना भाई आर वाटा खा कर हाथ धो लिए ओर थाली एक तरफ रखकर पुन अपने काम पर चल गये।

कुछ समय पश्चात् पीरदानजी की पत्नी पानी लेकर आई उसने खीचडे की हडिया देखी तो वह वसी की वेसी भरी हुई थी। उसने पूछा सासूजी क्या वे नही आये?' माता ने कहा "पीरू आ गया ओर खीचडा खाकर चला गया। पत्नी ने कहा कि खीचडे की हाडी तो पूरी भरी हुई है आपने उनको बाटा तो नही परोस दिया? बाटे की हाडी देखी तो वह थोडी खाली थी। पत्नी ने कहा आपने उनको बाटा परोस दिया। माता को बहुत बडा दुख हुआ बोली 'उसको हाथ से लेकर खाने की सौगद थी लेकिन यह तो कह सकता था कि यह बाटा है। मुझे तो दिखता नही था लेकिन वह बाटा खा कर ही चला गया। माता को बडा पश्चाताप हुआ इतने मे पीरदानजी आ गये ओर माता ने कहा 'तू बाटा खा कर चला गया मुझे बताया भी नही कि यह बाटा है खीचडा नही हे। उन्होने कहा 'भेस बाटा खाती है उनके भी आत्मा हे, मे भी आत्मा हूँ।

उन्होने बाटा सम भाव से खाया। कहा तो बाटा खा लेना आर कहा थोडा साग मे नमक कम हो जावे तो परात थाली पटक देना थोडी सी कमी रहने पर आपका मन ऊचा नीचा हो जाता है। सम भाव की कमी के कारण ऐसा होता है।

सुबाहु कुमार की तरह यदि आपकी इच्छा मोक्ष मे जाने की हे तो उसक लिये सबसे पहली साधना सामायिक की हे। 48 मिनिट तक क्या करना चाहिए क्या सोचना चाहिए क्या चितन करना चाहिए सामायिक मे सम भाव कसे आता हे। इन सब पर गभीर चितन आवश्यक है। यही नही उसका प्रभाव जीवन मे केसे आये यह भी विचार आवश्यक हे। उसका परीक्षण भोजन क समय विशेष रूप से होता हे। खाते समय सम भाव से खाना चाहिए। ऊचे नीचे परिणाम नही आने दे। मान लीजिए दो भाई एक साथ रहते हे। छोटे भाई की पत्नी परोस रही हे तो यह ख्याल नही रखना चाहिए कि उसने मेरे को क्या परोस दिया ओर छोटे भाई को क्या परोस दिया। उसका ध्यान अपनी तरफ नही जा कर दूसर की तरफ जायेगा तो वहा विषमता आ जायेगी। जो व्यक्ति अपनी शक्ति का नही देख कर दूसरो की तरफ दृष्टिपात करता हे वह जीवन मे समता प्राप्त नही कर सकता। जैसे दूसरो को देखे वैसे ही अपने को देखे। दूसरा गलती कर रहा ह तो वह देख कि कही मे भी गलती तो नही कर रहा हूँ। एक रूपक हे

इन्द्रियों का परस्पर विश्वास

एक व्यक्ति जा रहा था—नेशनल पार्क की ओर। शरीर एक था लकिन उसमे दो आख थी एक नाक था दो कान थ एक जिह्वा थी। आख दूर तक दख रही थी। आखा ने दूसरी इन्द्रिया स कहा — 'देखा वहा पहाड दिखाई द रहा है कितना बडा है। इस बात को कानो स सुना आर कहा कि कहा पहाड ह आर

पहाड होता तो सबसे पहले कानो म आवाज आती? इसी तरह से नाक ने कहा कि अगर पहाड होता तो मुझे सुगध आती। जिह्वा ने कहा कि पहाड होता तो मुझे चखने को मिलता। स्पर्श इन्द्रिय कहने लगी कि म हाथ लगा कर अनुभव कर सकती थी। किन्तु वह पहाड नही हे। आखो ने फिर कहा कि देख–देखे ये भ्रमर उड रहे हे। दूसरी इन्द्रियो ने कहा कि आज आखो को क्या हो गया ह जो बेतुकी बात कह रही हे। पहले कहा कि पहाड दिख रहा ह और अब कह रही ह कि भवरे उड रहे है। बाकी की चारो इन्द्रिया आखो के साथ सघर्ष करने लग गई। किसी शिक्षक ने बालको को शिक्षा देने की दृष्टि से यह रूपक प्रस्तुत किया। वह कल्पना यह समझाने के लिये हे कि आखे देखने का कार्य करती ह लेकिन कान देखने का कार्य नही करते वे सुनने का कार्य करते ह नाक सूघन का कार्य करता है। उसी तरह से जीभ का कार्य अलग ह आर स्पर्श इन्द्रिय का कार्य अलग हे पाचो इन्द्रियो को अलग–अलग कार्य बाटा हुआ हे। पाचो को अपना–अपना कार्य करते हुए एक दूसरे पर विश्वास करना चाहिए। आख अपनी दृष्टि से देख कर कह रही है कि पहाड और भवरो की पक्तिया उड रही हे तो जो बात कह रही है अन्य चारो इद्रियो को विश्वास करना चाहिए। आखे जो बात कह रही हे वह सही है। इसलिये कहा गया कि जो व्यक्ति अपने को देखने के साथ ही पर को देखता है और यथेष्ट चितन करता हे तो व्यक्ति समता भाव से आगे बढ सकता है।

इस दृष्टि से अनुभवी व्यक्ति कहते हे 'तुम सामायिक की साधना करो। यह एक दिव्य आख है। इस दिव्य आख से देखने की चेष्टा करो। हर समय ध्यान मे रखो कि मै सामायिक कर रहा हूँ। मैने सावद्य योग का त्याग किया है। यह साधना मुझे निश्चित ही आत्म शाति प्रदान करेगी।'

दिनाक ४-८-८४
बोरीवली (पूर्व) बबई

रक्षा बधन का पर्व भारतीय सस्कृति का पतीकात्मक पर्व है। यह अपने गर्भ मे अनेक ऐतिहासिक प्रागेतिहासिक घटनाक्रमो को समेटे हुए हें यही नही इसके साथ अनेक किवदन्तिया भी जुडी हुई है। जो इसकी प्रयोजनीयता को ध्वनित करती हे।

इस पर्व ने कितनी दर्दीली मन स्थितियो को सात्वना प्रदान की है। कितने विरोधी सम्प्रदाया जातियो एव व्यक्तियो को एक दूसरे के करीब लाकर उनमे अद्‌भुत एकत्व आत्मीयता स्नेह सोहार्द्र की स्थापना की है।

किन्तु खेद हे कि आज का रक्षाबधन पर्व प्राणरहित देह का ढाचा मात्र बनकर रह गया ह। लगता हे इसकी आत्मा खो गई हे – हमारे हाथ मे केवल कलेश्वर रह गया हे। रक्षाबधन का पवित्र भावो से वेष्टित यह धागा चद नोटो के आदान प्रदान का विषय बन कर रह गया हे। या यो कह इसका चद पसो मे सोदा होने लगा हे।

रक्षाबधन का आध्यात्मिक एव सास्कृतिक रूप कैसा होना चाहिए? रक्षा के धागे का क्या महत्व ह? इसकी ऐतिहासिकता क्या हे? इसके सास्कृतिक मूल्य क्या ह आदि जिज्ञासाओ के समाधान के साथ ही समाज के कर्णधारा क प्रति समाज एव सस्कृति के जागरण का एक सशक्त आह्वान पढिये प्रस्तुत पवचन मे।

सपादक

पहाड होता तो सबसे पहले कानो मे आवाज आती? इसी तरह से नाक ने कहा कि अगर पहाड होता तो मुझे सुगन्ध आती। जिह्वा ने कहा कि पहाड होता तो मुझे चखने को मिलता। स्पर्श इन्द्रिय कहने लगी कि मै हाथ लगा कर अनुभव कर सकती थी। किन्तु वह पहाड नही है। आखो ने फिर कहा कि देखे–देखे ये भ्रमर उड रहे है। दूसरी इन्द्रियो ने कहा कि आज आखो को क्या हो गया है, जो बेतुकी बात कह रही है। पहले कहा कि पहाड दिख रहा है और अब कह रही है कि भवरे उड रहे है। बाकी की चारो इन्द्रिया आखो के साथ सघर्ष करने लग गई। किसी शिक्षक ने बालको को शिक्षा देने की दृष्टि से यह रूपक प्रस्तुत किया। वह कल्पना यह समझाने के लिये है कि आखे देखने का कार्य करती है, लेकिन कान देखने का कार्य नही करते, वे सुनने का कार्य करते है नाक सूघने का कार्य करता है। उसी तरह से जीभ का कार्य अलग है और स्पर्श इन्द्रिय का कार्य अलग हैं पाचो इन्द्रियो को अलग–अलग कार्य बाटा हुआ है। पाचो को अपना–अपना कार्य करते हुए एक दूसरे पर विश्वास करना चाहिए। आखे अपनी दृष्टि से देख कर कह रही है कि पहाड और भवरो की पक्तिया उड रही है तो जो बात कह रही है अन्य चारो इद्रियो को विश्वास करना चाहिए। आखे जो बात कह रही है वह सही है। इसलिये कहा गया कि जो व्यक्ति अपने को देखने के साथ ही पर को देखता है और यथेष्ट चितन करता है तो व्यक्ति समता भाव से आगे बढ सकता है।

इस दृष्टि से अनुभवी व्यक्ति कहते हैं "तुम सामायिक की साधना करो। यह एक दिव्य आख है। इस दिव्य आख से देखने की चेष्टा करो। हर समय ध्यान मे रखो कि मै सामायिक कर रहा हूँ। मैने सावद्य योग का त्याग किया है। यह साधना मुझे निश्चित ही आत्म शाति प्रदान करेगी।"

दिनाक ४-८-८४
बोरीवली (पूर्व) बबई

रक्षा बधन का पर्व भारतीय सस्कृति का प्रतीकात्मक पर्व है। यह अपने गर्भ मे अनेक ऐतिहासिक प्रागेतिहासिक घटनाक्रमो को समेटे हुए हैं यही नही इसके साथ अनेक किवदन्तिया भी जुडी हुई है। जो इसकी प्रयोजनीयता को ध्वनित करती है।

इस पर्व ने कितनी दर्दीली मन स्थितियो को सात्वना प्रदान की है। कितने विरोधी सम्प्रदायो, जातियो एव व्यक्तियो को एक दूसरे के करीब लाकर उनमे अद्‌भुत एकत्व, आत्मीयता स्नेह, सौहार्द्र की स्थापना की है।

किन्तु खेद है कि आज का रक्षाबधन पर्व प्राणरहित देह का ढाचा मात्र बनकर रह गया है। लगता है इसकी आत्मा खो गई है – हमारे हाथ मे केवल कलेश्वर रह गया है। रक्षाबधन का पवित्र भावो से वेष्टित यह धागा चद नोटो के आदान प्रदान का विषय बन कर रह गया है। या यो कहे इसका चद पैसो मे सौदा होने लगा है।

रक्षाबधन का आध्यात्मिक एव सास्कृतिक रूप कैसा होना चाहिए? रक्षा के धागे का क्या महत्त्व है? इसकी ऐतिहासिकता क्या है? इसके सास्कृतिक मूल्य क्या हैं आदि जिज्ञासाओ के समाधान के साथ ही समाज के कर्णधारो के प्रति समाज एव सस्कृति के जागरण का एक सशक्त आह्वान पढिये प्रस्तुत प्रवचन मे।

सपादक

२०. रक्षा-संस्कृति की

रक्षा बधन-सस्कृति की अविच्छिन्न धारा

आज रक्षाबधन का पर्व है। पर्व की उपयोगिता एव उपादेयता विदित है। कुछ पर्व ऐसे होते है जो बाहरी आमोद-प्रमोद के साथ ही हमारी प्राचीन सास्कृतिक चेतना को अभिव्यक्त करते है।

अनत अनत उपकार की, अमोघ धारा से आध्यात्मिक ज्ञान की वर्षा करने वाले, निर्ग्रन्थ भ्रमण सस्कृति का उदात्त एव भव्य स्वरूप जनता के समक्ष प्रस्तुत करने वाले तीर्थकर देवो के उपकार का कोई और छोर नही देखा जा सकता उन्होने निर्ग्रन्थ श्रमण सस्कृति का जो उद्बोध किया है वह कितना व्यापक एव विशाल है। उसमे कितनी अमोघ शक्ति भरी हुई है। जिससे जन-जन के जीवन मे अपूर्व शाति एव अपूर्व प्रकाश का अनुभव हो सकता है। ऐसी निर्ग्रन्थ श्रमण सस्कृति-उच्चतम साधु जीवन की पवित्र सस्कृति इस विश्व मे अन्यत्र कही भी उपलब्ध नही हो सकती है। भारतीय सस्कृति अध्यात्म प्रधान सस्कृति है। इस सस्कृति मे निर्ग्रन्थ श्रमण सस्कृति का अपना विशिष्ठ स्थान है।

आज के परिवेश मे अनेक सस्कृतिया हो गई है। आधुनिक सस्कृतिया अधिकाशतया पाच इन्द्रियो के आकर्षण मे उलझाने वाली है लेकिन प्राचीन भारतीय सस्कृति पाच इन्द्रियो के विषय की प्रवृत्ति को सशोधित करने वाली है। और उसमे भी निर्ग्रन्थ श्रमण सस्कृति तो आत्मा के स्वरूप को इतना सशोधित कर डालती है कि उस पर कभी भी शाति की छाया न पड सके। समस्त वेदना और बाधाए उसके निकट नही आ सके। इसी निर्ग्रन्थ श्रमण सस्कृति के परिपेक्ष्य से आज का बधन का प्रसग आपके समक्ष उपस्थिति हो रहा है।

रक्षाबधन का त्योहार भारतीय त्यौहारो मे विशेष स्थान रखता है। अन्य त्योहारो मे जातीयता एव साम्प्रदायिकता का अन्तर आ सकता है लेकिन इस त्यौहार मे भारतीय जनता चाहे किसी जाति या पार्टी मे रही हुई हो प्राय एक मत हो कर चल रही है।

गए। इधर एक बार अकपनाचार्य, जिनक साथ इन चारो मत्रियो का द्वेष था, अपने 700 शिष्यो के परिवार सहित पद्मनाभ की राजधानी मे पहचे ओर नगर के बाहर बगीचे मे अपनी सयम यात्रा का निरवहन करते हुए रह रह थे। उस समय उन नास्तिक वादी दूसरे शब्दो मे भोतिकवादी या पाच इद्रियो के विषय मे आसक्त रहने वाले व्यक्तियो ने कुछ अपना प्रभाव दिखाना चालू किया उन्होने सम्राट से वरदान के रूप मे सात दिन का राज्य ले लिया ओर निश्चय किया कि सातवे रोज उन 700 मुनियो को अग्नि भस्म सात् कर देना हे।

पद्मनाभ महाराज का राज्य बहुत विशाल था और उस राज्य का पूर्ण अधिकार सात दिन के लिये उन मत्रियो को मिल गया था। उन्होने ऐलान करा दिया कि निर्गन्थ श्रमण सस्कृति से हमको कोई प्रयोजन नही इन श्रमणो की हमे कोई आवश्यकता नही। ये व्यक्ति हमारी भोतिक सुख सुविधाओ मे बाधक हे। हमे जो पाच इन्द्रियो के विषय सुलभता से प्राप्त हे। ये इसमे विघ्न पेदा करते है यह हृदयो से पाच इद्रियो के विषय छुडवाते हे और आध्यात्मिकता की बात करके दुनिया को गुमराह करते हैं। ऐसे इन मुनियो को हम अपने राज्य मे नही रहने देगे। ये सब मुनि सात दिन के अन्दर–अन्दर हमारे राज्य से बाहर चले जाये। वे इस राज्य मे नही रहे अन्यथा सातवे दिन इनको अग्नि मे होम दिया जायेगा। इतनी क्रूरता उन मत्रियो मे आ गई।

पद्मनाभ महाराज सत समुदाय का आदर करते थे, उनके सामने नतमस्तक होते थे। सत जीवन की गरिमा उनकी रग–रग मे समायी हुई थी लेकिन वे वचनबद्ध थे। इसलिये कुछ नही कर पा रहे थे।

उनके छोटे भ्राता छोटी वय मे ही आध्यात्मिक साधना मे ही सलग्न हो गये और निर्ग्रन्थ श्रमण सस्कृति को उद्दात एव पवित्र छाया मे आत्म विकास कर रहे थे। वे अपने गुरु महाराज के पास साधना की दृष्टि से अरण्य मे–पहाड की गुफा मे साधना कर रहे थे। इधर दूसरे गुरु शिष्य भी अन्य गुफा मे साधना कर रहे थे।

रक्षा - श्रमण सस्कृति की

आज श्रावणी पूर्णिमा की रात्रि को श्रावण नक्षत्र आकाश मे चमक रहा था। गुफा मे से शारीरिक चिन्ता निवृति के साथ साथ स्वाध्याय की साधना करने की दृष्टि से आकाश प्रति लेखन को गुरु महाराज बाहर निकले। आकाश मे चमकते हुए तारे देखे। गुरु महाराज की दृष्टि इस श्रावण नक्षत्र पर गई। वे श्रावण नक्षत्र को पहले भी देख चुके थे। आज भी देख रहे थे। आज श्रावण नक्षत्र प्रकपित हो रहा था। उन्होने देखा कि आज यह नक्षत्र प्रकपित क्यो हो रहा है वे विशिष्ट

ज्ञानी थे। अत ज्ञान से अनुमान लगाया कि यह श्रावण नक्षत्र प्रकपित हो रहा है। इससे लगता हे देश मे धर्म एव सस्कृति पर कुछ सकटमय परिस्थिति उत्पन्न हो गई है। हो सकता है 700 मुनिराज जो पद्मनाभ के राज्य मे आये हुये है उन पर बहुत बडी विपत्ति हो, उनके प्राणो के समाप्त होने का प्रसग लग रहा है उन आचार्य उनके मुह से सहसा निकल पडा अहो कष्टम् अहो अष्टम' ये शब्द अन्दर साधना करने वाले शिष्य ने भी सुने। उसने कल्पना की कि गुरु महारज बाहर पधारे है यह जगल का प्रसग है जहा जगली जन्तु रहते हैं सभव है उन पर कोई आपत्ति आ गई हो इसलिये ये शब्द उनके मुह से निकले हो शिष्य ने अपनी साधना गौण की और बाहर आया तो देखा कि गुरु महाराज तो सुरक्षित खडे है उनकी दृष्टि आकाश मडल की ओर लगी हुई है और उनके मुह से शब्द निकले हैं अहो कष्टम्। शिष्य ने निवेदन किया कि गुरुदेव आज आपके मुह से ये शब्द कैसे निकले? ऐसी आश्चर्यजनक बात कैसे आई? आप ज्ञानी है। गुरु महाराज ने कहा कि शिष्य। क्या बताऊ आज की रात्रि समाप्त होने के पश्चात् पद्मनाभ महाराज के राज्य मे 700 मुनिराजो का अन्त होने वाला है। उनका सरक्षण करना आवश्यक है। यदि उनका सरक्षण नही हुआ तो निर्ग्रन्थ श्रमण सस्कृति पर महान व्रजाघात होगा, मेरे मन मे यही वेदना है, इसीलिये मेरे मुह से अहो कष्ट का शब्द निकल गया। शिष्य ने कहा कि गुरुदेव इनका सरक्षण कौन करता है? गुरु महाराज ने कहा कि भाई पद्यनाभ महाराज के लघु भ्राता विष्णु कुमार, वे इस कष्ट का निवारण करने मे समर्थ है लेकिन उनको जानकारी मिले तो वे यह कार्य कर सकते हैं शिष्य ने पूछा 'गुरुदेव वे कहा है?''गुरु महाराज ने कहा यहा से बहुत दूर एक गुफा मे गुरु शिष्य दोनो साधनो कर रहे है। 'गुरुदेव उनके पास सूचना केसे पहुच सकती। गुरु महाराज ने कहा ''वत्स मै भी यही चितन कर रहा हूॅ। या तो कोई आध्यात्मिक शक्ति से वहा जा सकता हे या शीघ्रगामी कोई साधन हो तो उनके पास सूचना पहुच सकती है। शिष्य ने कहा कि गुरुदेव आपकी कृपा से मुझे अध्यात्मिक साधना से कुछ उपलब्धि हो रही हे और में इतनी शक्ति सपादित कर चुका हूॅ कि मैं किसी भी सुदूर क्षेत्र मे जा सकता हूॅ। यद्यपि इस शक्ति को में प्रयोग मे नही लाना चाहता लेकिन ऐसे प्रसग पर जबकि आपके मुह से अहो कष्टम् शब्द निकल रहे है मै अनुभव कर रहा हू कि कोई बहुत बडी बात है। इस निर्ग्रन्थ श्रमण सस्कृति के लिए मुझे यदि शक्ति का प्रयोग करना पडे तो मैं बाद मे प्रायश्चित कर सकता हूॅ। मैं मुनि विष्णु कुमार के पास शीघ्र पहुच सकता हूॅ। लेकिन वापिस शीघ्र आने की शक्ति अभी तक सपादित नहीं कर पाया हूॅ। गुरु महाराज ने कहा कि पुन आने की फ्रिक्र मत करो। एक बार उनके पास सदेश पहुचा देते हो तो वे उनकी रक्षा करने मे सफल हो जायेगे।

शिष्य ने तथास्तु कह कर अपनी शक्ति का पयोग किया और विष्णु कुमार मुनि के पास पहुचे। गुरु महाराज द्वारा तलाये हुए उद्गार उनके समक्ष प्रस्तुत किये। विष्णु कुमार मुनि वेक्रिय लब्धि का प्रयोग करके सूर्योदय होते होते पदमनाभ महाराज के पास पहुच गए।

भ्राता मुनिराज को देखकर पद्मनाभ महाराज प्रसन्न हुए। उनका सत्कार सम्मान किया तब मुनि ने कहा कि राजन मेरा क्या सत्कार सम्मान कर रहे हो। निर्ग्रन्थ श्रमण सस्कृति का सत्कार सम्मान करो। वह आज खतरे मे पडी है। थाडा विलम्ब हुआ तो 700 मुनिराजो का घात हो जायेगा और निर्ग्रन्थ श्रमण सस्कृति भी विकट समस्या मे पड जायेगी। सम्राट ने कहा– मे क्या कर सकता हू। मुझसे बहुत बडी भूल हो गई। उन अजनबी मत्रियो की तात्कालिक उपलब्धियो का दखकर म वचनबद्ध हो गया। मुझे पता नही था कि ये लोग वरदान का दुरूपयोग करग अनीति ओर अत्याचार करेगे। लेकिन मुह से निकले वचनो के कारण वरदान दे दिया ओर 7 दिन के लिए राज्य उनके आधीन कर दिया। उसके बाद म निहत्था हो गया। सत्ता ओर शस्त्र मेरे पास नही रहे, समस्त अधिकार उनके पास चल गये। मुझे अत्यन्त दुख हो रहा हे लेकिन में कर कुछ नही सकता। आप समर्थ हे आप ही उन मुनियो की रक्षा करे। मुनि ने कहा, "राजन, मै अपनी स्थिति स जा करना चाहूगा वह करूगा ' किन्तु आप यह सकल्प करे कि इस प्रकार तत्क्षण लुभावने दृश्य दिखाने वाले भोतिकवादियो के चक्कर मे नही आएग। एसे नाटकीय ढग से ठगन वाल व्यक्ति दुनिया मे बहुत होते हे। उनके चक्कर म आन से पवित्र सस्कृति, जिसका भारतीय सस्कृति का सिरमोर बताया है आज खतरे मे पड गई ह। महाराज न कहा कि म आगे के लिए सावधान रखूगा सात दिन बाद सत्ता वापिस मरे पा आ जायेगी फिर अपनी स्थिति मे चलूगा। फिर किसी भी मुनि की ओर कोई उगुली उठाकर नही देख सकेगा। पदमनाभ के विचार सुनने के बाद विष्णु कुमार उन मत्रियो के प्रधान के पास गये ओर कहा

चरण पकडे और प्राणो की भिक्षा मागने लगे– 'मै आपके शरण मे हूँ, अब कभी ऐसा कार्य नही करूगा। मुनिराज ने उनको अभयदान दिया। लेकिन उनका जीवन बदल दिया। इस प्रसग से 700 मुनिराजो की रक्षा हुई।

इधर पुराण की दृष्टि से देवो की रक्षा हुई। आसुरी प्रवृत्ति से देवी प्रवृत्ति की रक्षा हुई। और उधर भौतिक प्रवृत्ति से आध्यात्मिक प्रवृत्ति से आध्यात्मिक प्रवृत्ति की रक्षा हुई। ये दोनो स्थितिया रक्षा बन्धन के इतिहास को स्पष्ट करती है।

तत्कालीन जन प्रमुखो ने उस समय की परिस्थिति को देखकर, देवी प्रकृति और आध्यात्मिक जीवन की रक्षात्मक उद्दात भावनाओ को प्रश्रय देने के लिए रक्षा बधन का पर्व प्रचलित किया। पर्व किसी भी निमित्त से चला हो उसका उद्देश्य महान और है। किन्तु आज का पर्व प्राय निष्प्राण सा हो गया है। किन्तु आज का पर्व प्राय निष्प्राण सा हो गया है जैसे लौ रहित दीपक। जैसी बिना ज्योतिवाले दीपक की स्थिति है ठीक वही स्थिति आज रक्षाबधन की बन रही है। वहा रक्षा की भावना जिस रूप से प्रचलित हुई? उस उद्देश्य को आज की जनता भूल गई। इस रक्षा के विपरीत उद्देश्य मे प्रवृत्ति करने के लिए प्रकाश रहित रक्षा का डडा लेकर चल रही है लेकिन प्राण खो दिये है। आज का पर्व इतने मे ही सीमित हो गया है कि सूत के धागे मे चमकीला पदार्थ लगा कर रक्षा बाध दी जाती है और भाई बहिन को कुछ दे देता है।

बधुओ यह आप जानते है कि इसके पीछे भ्रात प्रेम की स्थिति कैसे सुरक्षित रहनी चाहिए। आज भ्राता रक्षा बाधने के बदले मे पाच रुपये, दस रुपये पचास रुपये या पाच सौ रुपये दे देगा लेकिन वह बहिन यदि सकट मे है कष्ट पा रही है उसके जीवन की अत्यत दयनीय दशा है उसका परिवार लुप्त हो रहा है। उस समय जिसके हाथ मे बहिन ने रक्षा बाधी वह रक्षा बधाने वाला व्यक्ति कहा गया? और उसने बहिन के लिए क्या कुछ किया? क्या वह उस समय बहिन की मदद करता है? क्या वह रक्षा बधन का कुछ महत्व समझाने वाले विरले ही होते हैं। रक्षा बधन का सबध केवल धागे तक ही सीमित नही है। इसके पीछे बहुत बडा दायित्व छिपा हुआ हे।

रक्षा सूत्र और हुमायू

ऐतिहासिक तथ्यो से सबधित एक घटना है – जब बादशाह हुमायू भारत भूमि पर राज्य कर रहा था। उस समय बहादुरशाह चित्तौड पर चढ कर आ गया। चित्तौड के किले को उसने चारो ओर से घेर लिया। चित्तौड के राजघराने का परिवार मेवाड की सारी जनता खतरे मे पड गई। राणा की इतनी ताकत नही थी कि वह बहादुरशाह की सेना हरा सके।

हुमायू उस समय बग देश को विजय करने की तैयारी कर रहा था। विराट सेना ले कर बगाल विजय की उम्मीद लेकर चल रहा था। उस समय मेवाड की महारानी किरणावती ने एक रक्षासूत्र राखी का धागा हुमायू के पास भेजा और साथ मे पत्र भी। आपके राखी बाधती हूँ। मे आपकी धर्म बहिन हूँ। आज आपकी बहिन खतरे मे हे और उसका परिवार सकटपूर्ण स्थिति मे चल रहा है। आप इस रक्षा के धागे को मेरी ओर से हाथ मे बाधे और बहिन उससे सबधित परिवार एव राज्य की रक्षा करे। महारानी का आतरिक स्वर लच्छेदार भाषा मे मुहावरो के पुट के साथ नही पहुचा। लेकिन सीधे सादे शब्दो मे पहुचे।

बादशाह हुमायू जाति और सस्कृति की दृष्टि से थोडा भिन्न पडता था। लेकिन भारतीय सस्कृति मे राज्य होने से भारतीय सस्कृति से अछूता नही रह सका। वह भी रक्षा बधन से प्रभावित हुआ और जाति, व्यक्ति और पार्टी के भेद को गौण करके अपने को मिलने वाली विजय को पीठ दे कर अपनी ही जाति के बहादुरशाह से सघर्ष करने के लिए अपने दल बल सहित पहुच गया और महारानी की रक्षा की।

वैसी ही नागोर की घटना है। दीलिप सिह एव रूद्रसिह की मे ऐतिहासिक अन्यान्य घटनाओ के विस्तार मे नही जाकर सकेत मात्र दे रहा हूँ।

आज का भाई इन बहिनो से रक्षा बधवाता है, किन्तु रक्षा का धागा बधवाने के बाद क्या उसके मन मे रक्षा का उत्तरदायित्व जागता है? यदि उसने आज बहिन को कुछ दे दिया और उसके कुछ माह बाद बहिन भूखो मर रही है उनके बाल बच्चे अन्न के लिए बिलख रहे है और भाई के पास अपार समृद्धि है तो क्या वह भाई उस बहिन के दुर्भाग्य से सघर्ष करने के लिए अग्रसर होगा? क्या रक्षा के धागे की रक्षा करेगा? किसे क्या कहा जाय। समाज की इस दयनीय दशा पर तरस आती है

वह हिन्दू हो मुसलमान हो या और कोई हो जिन्होने भारतीय धरा का अन्न जल लिया है। उसकी सुरक्षा के लिए उन्हे कटिबद्ध होना चाहिए। क्या भारतवासी इस भारतीय सस्कृति की सुरक्षा के लिए तत्पर है?

मै किसको क्या कहूँ, आप जितने यहा बैठे हैं उनको सकेत करता हूँ। यदि आप ठीक समझते हैं तो भारतीय धरती पर आज जो हिसा हो रही है। कत्लखाने चल रहे हैं। मुर्गी उद्योग चल रहे है मच्छी उद्योग चल रहे है। अण्डो का प्रचार हो रहा है, यह सब भारतीय सस्कृति के प्रतिकूल है। मानव जाति के लिए हितावह नही है। ये सस्कृति के लिए खतरा पहुचाने वाली प्रवृत्तिया है।

सस्कृति की दयनीय दशा

वैसे ही पाश्चात्य सस्कृति के सस्कार स्कूल कॉलेजा के माध्यम से भरे जा रहे हे। जो भारतीय जमीन पर पले पुषे हैं फिर भी पाश्चात्य सस्कृति मे बह रहे हैं। उनको सोचना है—वे परतत्र है और पाश्चात्य सस्कृति से ओत प्रोत हो रहे हैं यह बहुत बडा आक्रमण है हमारी सस्कृति पर। यह बहादुरशाह के आक्रमण से भी बढकर है। यह इस प्रकार का आक्रमण है कि भीतर के सस्कारो की दृष्टि से भारतीय सस्कृति को समाप्त करने की कोशिश की जा रही है। ऐसी स्थिति मे प्रत्येक भारतीय को वीरता दिखानी चाहिए। उसकी रग रग मे अहिसा एव सस्कृति का बहनेवाला खून ठडा नही पडना चाहिए। युवा वर्ग मे सस्कार जगने चाहिए।

आज इस भारतीय सस्कृति की दयनीय दशा हो रही है। यह सस्कृति किसी व्यक्ति, जाति पार्टी की नही है। यह सपूर्ण विश्व को विश्व शाति का अमोघ सदेश देने वाली है। किन्तु आज यह निर्ग्रन्थ श्रमण सस्कृति खतरे मे पडी है। उस पर आधुनिक वासियो का खतरा बढ रहा है। वे जमाने के नाम पर इन्हे नोचने की कोशिश कर रहे हैं। जैसे द्रोपदी का चीर हरण करने के लिए दुशासन आया था। आज उसी तरह के कई व्यक्ति खडे हो गये है। वे कह रहे हैं कि रूढिवाद को समाप्त करो। जो युग के साथ नही बदला वह टिक नहीं पायेगा। आज जैन सस्कृति एक सीमित क्षेत्रीय दायरे मे ही रह गई है। अत हमे प्रचारक बनकर इसे सर्वत्र फेलाना चाहिए। भावुक जनता उन आधुनिको की भावना मे बह रही है। निर्गन्थ श्रमण सस्कृति मे पले पुषे व्यक्ति भी आधुनिकता के वायुमडल मे बह रहे हैं। भौथ्तकवादियो के साथ इस सस्कृति को नीचे गिराने का प्रयास कर रहे हैं। उन महानुभावो को मेरा परामर्श है कि वे रूढिवाद एव प्रगति वाद को ठीक से समझा तो ले। क्या सस्कृति के मूल को तहस—नहस करके सस्कृति का प्रचार करना प्रगतिवाद है? समय एव प्रचार के नाम पर मौलिक सास्कृतिक मूल्यो

को विकृत कर देना प्रगति है? रूढिवाद का यह अर्थ कदापि नही है कि हम मूल सिद्धान्तो पर स्थिर न रहे। यदि हम रूढिवाद के परिवर्तन की ओट मे मूल सिद्धान्तो को तोडते जावे तो यह प्रगति है या अवनति? क्या वे यह नही समझते कि ऐसा करते हुए वे अपना ही अवमूल्यन नही कर रहे हैं, अपितु भारतीय सस्कृति की प्राणरूप सस्कृति का अवमूल्यन कर रहे हैं। इसका परिणाम क्या होगा, यह तो भविष्य ही बतायेगा। मै भी निर्ग्रन्थ श्रमण सस्कृति की अनुछाया मे पलने वाला एक साधक हूँ। आपको कर्त्तव्य की दृष्टि से सकेत दे रहा हूँ। आप रक्षाबधन का महत्वपूर्ण सकेत समझे।

सघ प्रमुखों के दायित्व

एक दृष्टि से देखा जाय तो निर्ग्रन्थ श्रमण सस्कृति के उपासको की सख्या इस बबई महानगरी मे बहुत अधिक है। यहा के 32 सघ बने हुए हे। महा सघ के प्रमुख एक रोज आये थे गिज्जुभाई, डॉक्टर छाडवा साहब भी सघ प्रमुख है। सघ के अगुवा के नाते इस सस्कृति को आगे बढाने का इनका कर्त्तव्य है। 32 सघो मे से और भी कुछ आये थे। श्रमण सस्कृति बहिन आप सभी प्रमुखो को रक्षा बाध रही है और कह रही है कि वीरा हमारी रक्षा करो। बम्बई महासघ के सभी सघो के प्रमुख यदि इस सस्कृति के लिए अपना कर्तव्य सभाले, तो सहज ही इसकी सुरक्षा हो सकती है। आज पाश्चात्य सस्कृति, भौतिकवादी–अवसरवादी राक्षसी प्रवृत्ति इस सस्कृति को तहस नहस कर रही है। महासघ के नेता यदि कान मे तेल डाल कर सोते रहे, तो क्या स्थिति होगी, यह तो समय बतायेगा क्या कहू हुमायू, जाति का मुसलमान था। लेकिन जाति भाइयो से लडने गया था और धर्म बहिन की रक्षा की थी। क्या महासघ के महानुभाव इस सस्कृति की रक्षा करने के लिए आगे आयेगे। मै जिस रोज यहा आया था उस रोज भी मैने आप लोगो को आगाह किया था, शायद उस समय उनके मन मे विशेष हलचल नही हुई। इस सस्कृति की रक्षा के लिए आप पर उत्तरदायित्व है। अपने इस उत्तरदायित्व का निर्वहन नही किया तो क्या पता क्या स्थिति बनेगी।

अभी तो आपको कुछ वाह वाही प्रसिद्धि मिल जायेगी कि हमारे अध्यक्ष अच्छे हे लेकिन वह वाहवाही टेपरेरी हे। यह रिश्वत है। रिश्वत दे कर सस्कृति को नीचे गिराने का प्रयास हे। आप हुमायू की तरह इस सस्कृति की रक्षा करे। यह बहिन राखी बाधती हे तो भाई प्राण एव यश कीर्ति की परवाह नही करके रक्षा करता है।

मे इस महानगरी के प्रतिनिधियो के माध्यम से सारे हिन्दुस्तान के जैन समाज को सबोधित कर रहा हूँ। वह चिन्तन मनन करे ओर निर्ग्रन्थ श्रमण सस्कृति की रक्षा करने के अपने कर्तव्य मे सक्रिय बने। प्रमुख को बहुत कुछ ध्यान रखने

की आवश्यकता है। मै समझता हूँ कि यहा पर महासघ के प्रमुख नही बोरीवली सघ प्रमुख डॉक्टर साहब आये हुए है। मैंने भावनगर मे इनके विचार सुने थे। रतलाम मे भी दीक्षाओ के प्रसग पर उपस्थित हुए थे। इन्हे निर्ग्रन्थ श्रमण सस्कृति से प्रेम है। अत इनके माध्यम से मैं सभी को सबोधित कर रहा हूँ।

डॉक्टर साहब मरीजो को रोजाना सभालने की कोशिश करते हैं। लेकिन उन पर शरीर का ही उत्तरदायित्व नही है। उन पर और भी अधिक उत्तरदायित्व है। जिनको आप वदनीय पूजनीय मानते है उनको आप सम्मान के साथ ऊपर रखे और उनसे कहे कि आप अपनी मर्यादा के अनुसार सीमा मे रहे। बाकी काम हम करेगे जैसे शरीर का काम करते है। वैसे ही आध्यात्मिक दृष्टि से अपने कर्तव्य का पालन तन मन से करेगे। डॉक्टर साहब के साथ जो दो सज्जन आये हैं उनमे से एक प्रिसिपल और एक प्रोफेसर है। ऐसी स्थिति से यह कार्य और भी सुगम हो गया। भारतीय सस्कृति के प्रति उनका भी उत्तरदायित्व है कॉलेज मे पढने के लिए आने वाले बच्चो के अन्दर उनकी रग रग मे सस्कृति के अनुरूप भाव भरे। ऐसी सस्कृति आपके दुनिया मे और कही नही मिलेगी। यदि आपको शाति की श्वास लेनी है तो इसी की शरण मे आना पडेगा। पाश्चात्य सस्कृति मे पलने वाले उच्च स्थिति के वैज्ञानिक भौतिकवाद को गौण करके आध्यात्म की ओर बढ रहे हैं। रूस के बहुत बडे वैज्ञानिक फायदो ने अपने मन के जरिये मन के सदेश सप्रेशन 1500 मील की दूरी पार बैठे मनुष्य के मन मे तरगित किया। आगे चल कर यदि यह रफ्तार बढी तो यह मनोविज्ञान–टेलिपेथी बेतार टेलीफोन–टेलीविजन आदि सब को पीछे छोड देगा। भारतीय सस्कृति मे बढने वाले वैज्ञानिको को भी आगे बढना है या नही? पाश्चात्य सस्कृति मे पलने वाले वैज्ञानिक खोज करते करते यहा तक पहुचे हैं। यदि उनका सतुलन ठीक चला तो नास्तिक कहलाने वाले कैसे आगे बढ जायेगे? आस्तिक कहलाने वाले यदि कान मे तेल डाल कर सोये रहे तो सोते ही रह जायेगे। सत लोग कभी कभी उदाहरण देते हैं।

एक पुरुष अपनी वीरता और सजगता की डीग हाका करता था। मैं ऐसा हूँ। वैसा हूँ। उसकी पत्नी भी उसकी तारीफ किया करती थी। एक रोज उसके मकान मे चोरो ने प्रवेश किया। उसकी पत्नी ने कहा पति देव मकान मे चोरो ने प्रवेश कर दिया। पति ने कहा उनको प्रवेश करने दो मै जग रहा हूँ। सावचेत हूँ। 'पत्नी ने कहा– पति देव चोर अपना माल और सामान उठा रहे है। 'उसने कहा उठाने दो मैं जागृत हूँ। पतिदेव वे सामान उठाकर जा रहे हैं। जाने दो मैं सावधान हूँ। वे सामान ले कर चले गये। जाने दो मैं सावधान हूँ। इस बहादुरी और सावधानी मे क्या रहा। कही यही स्थिति समाज के कर्णधारो की नही है? क्या सस्कृति लुप्त हो जायेगी तभी वे उठेगे? नही ऐसा नही होना चाहिए पानी आने से पहले पाल बाध लेनी चाहिए।

इस सस्कृति की रक्षा कैसे होगी? इसका उत्तरदायित्व सब पर है। कॉलेज के प्रिसिपल और प्रोफेसरो पर तो और भी अधिक दायित्व है। वे युवा पीढी को सस्कारित करे। आज युवको एव बालको की क्या स्थिति है? वे किस दिशा मे जा रहे है। उनमे किन ससकारो की आवश्यकता है? यह अतीव विचारणीय विषय है। यदि हम अभी से सस्कारो की दृष्टि से सावधान नही होगे तो आने वाले समय मे हमारी सस्कृति की रक्षा बहुत मुश्किल हो जायेगी। मै आशा करता हूँ कि वे लोग अपना कर्तव्य सोचेगे। समय की दृष्टि से समाज प्रमुखो को सावधान होना चाहिए।

मै रक्षा बधन के प्रसग से बात कह रहा हूँ। यह पर्व भारतीय सस्कृति का प्रतीक है। इसको अन्तर हृदय से समझे, यह बाहरी धागा केवल धागा ही नही है, इसका गौरवपूर्ण इतिहास है। इसको हम समझ कर चलेगे तो जीवन मगलमय बन सकता है।

मै भी भारतीय निर्ग्रन्थ श्रमण सस्कृति का एक अनुयायी हूँ। मेरा कर्तव्य है, मेरे भाई और साथियो को मित्रवत् सही मार्गदर्शन देना। इस बारे मे बहुत कुछ कह गया हूँ। कॉलेज के प्रिसिपल, प्रोफेसर, विद्यार्थी ये सब जनता का प्रतिनिधित्व ले कर चलते है। समाज के जो मुखिया है। जन सेवा, समाज सेवा करने वाले जो भी है। उन सबको अपने अपने स्थान पर रहते हुए ठीक तरह से चितन मनन करने की आवश्यकता है।

महासती कस्तूरकवर जी तप के द्वारा अपनी आत्मशुद्धि करने मे लगी हुई है। उनके परिवार के सदस्य भी आ गये है। अमर मुनिजी के पाच भ्राता है उनमे से उनके दो बडे भ्राता यहा आये है अमर मुनि जी के पुत्र और पौत्र जो महासती जी के ससार पक्ष के पुत्र और पौत्र है वे भी आये है। इनके परिवार के लगभग 13 सदस्य परिवार से निकल कर इस पवित्र मार्ग पर लगे हैं। महासती के आज 47 तपस्या है। इन्ही के परिवार की दूसरी महासती के 30 की तपस्या है। अन्य सत सतियो की भी तपस्या चल रही है। इसी तरह से भाई बहिनो के भी तपस्या चल रही हे। तपस्याए आत्मशुद्धि के लिए चल रही है न कि किसी राजनीतिक माग के लिये। आप भी इस तपोसव मे सम्मिलित हो कर इतना तो अवश्य करे कि निर्ग्रन्थ श्रमण सस्कृति का अवमूल्यन हो ऐसा कार्य नही करेगे। अगर इतना सा सकल्प जागृत हुआ तो समझिये रक्षा बधन मनाना सार्थक हो जायेगा।

(इति)

दिनाक ११-७-८४
बोरीवली (पूर्व) बवई